सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 27, नई दिल्ली । सोमवार, 07 अप्रैल 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

कष्ट सहने पर ही हमें अनुभव होता है और दर्द हो, तभी हम सीख पाते हैं।

03 भारत गौरव रत्न श्री सम्मान परिषद द्वारा डॉ. विप्लव वर्मा को 'पद्म श्री सम्मान'
06 गहराता जल संकट, बढ़ती मुश्किलें
08 ए आई : लाभ और हानि विवेक रंजन श्रीवास्तव

सरकारी और व्यवसायिक विज्ञापनों का देखकर कम खर्चे में सफ़र करने के लिए अगर इलेक्ट्रिक वाहन खरीदने की सोच रहे हैं तो यह खबर आपके लिए है महत्वपूर्ण

पेट्रोल के खर्चे से बचने के लिए खरीदने जा रहे हैं ईवी, तो पहले जान लें ईवी के इन खर्चों के बारे में, बाद में नहीं होगा पछतावा

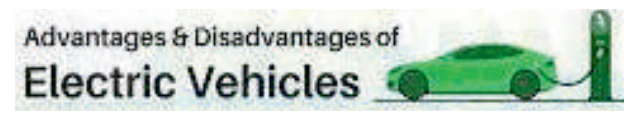

संजय बाटला

नई दिल्ली। अगर आप पेट्रोल के खर्चे से बचने के लिए ईवी खरीदने का प्लान बना रहे हैं, तो हम आपको बता दें कि ईवी खरीदना आपके लिए काफी महंगा पड़ सकता है।

दरअसल, ईवी के खर्चे पेट्रोल के खर्चे से ज्यादा होते हैं। ऐसे में ईवी खरीदने से पहले आपको इसके खर्चों के बारे में भी जरूर जान लेना चाहिए। आजकल लोग इलेक्ट्रिक व्हीकल्स यानी ईवी की तरफ काफी तेजी से बढ़ रहे हैं। लोग समझते हैं कि ईवी खरीदने से उनका पेट्रोल का खर्चा खत्म हो जाएगा। साथ में पर्यावरण को भी नुकसान नहीं पहुंचेगा। ऐसे में अगर आप भी पेट्रोल के खर्चे से बचने के लिए ईवी खरीदने का प्लान बना रहे हैं, तो हम आपको बता दें कि ईवी खरीदना आपके लिए काफी महंगा पड़ सकता है। दरअसल, ईवी के खर्चे पेट्रोल के खर्चे से ज्यादा होते हैं।

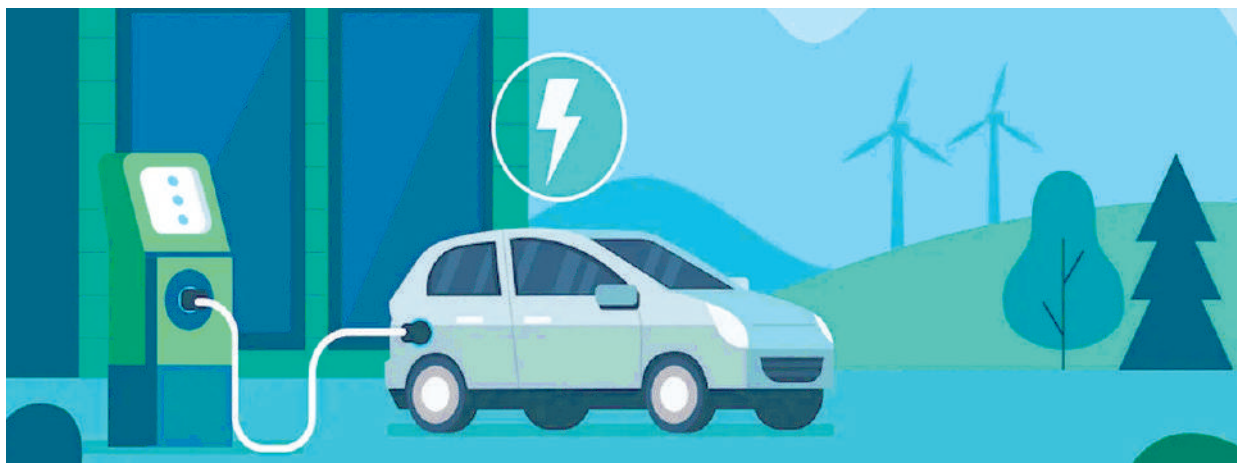

ऐसे में ईवी खरीदने से पहले आपको इसके खर्चों के बारे में भी जरूर जान लेना चाहिए. आइए जानते हैं। ईवी खरीदने के बाद होने वाले खर्चे :- कैसे गाड़ी खरीदने वाले लोग अक्सर इंस्टालेशन और इंफ्रास्ट्रक्चर के खर्चों को नहीं समझ पाते। "इन अनचाहे छुपे हुए खर्चों की वजह से आपको कम से कम 6,000 किलोमीटर चलने के बाद ही पैसे बचने शुरू होते हैं.₹ ईवी के वाहन खरीदने पर ऐसे भारी-भरकम खर्चे हैं, जो आपको कोई डीलर ईवी खरीदते समय नहीं बताएगा। ऐसे में आपके लिए इन खर्चों के बारे में जानना बहुत जरूरी है।

1. इलेक्ट्रिक वाहन की बैटरी की कीमत और कितने किलोमीटर के बाद इसको बदलने की आवश्यकता,
2. इलेक्ट्रिक वाहन के रख रखाव और सर्विस का खर्चा,
3. ईवी मीटर लगवाने का खर्चा,
4. कार को चार्ज करने के लिए चार्जर लगवाने का खर्चा, जिसमें 10 मीटर से ज़्यादा दूरी होने पर 500 रुपये प्रति मीटर का अतिरिक्त चार्ज लगता है।

अति विशेष सूचना

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर .एन .आई . द्वारा मान्यता प्राप्त करने के बाद से आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से मार्च में अपने 2 साल पूरे कर रहा है। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा हैं जिसके लिए प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

आप सभी को यह जान कर खुशी होगी की "परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" का द्वितीय वार्षिकी समारोह अप्रैल माह के अंतिम सप्ताह में सम्पन्न किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने के साथ दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य का उद्देश्य रखा गया है। इस समारोह में निम्नलिखित मुद्दों पर वाद- विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा

1. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
2. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
3. "दिल्ली को कैसे प्रदूषण मुक्त राज्य बनाया जा सकता है?"

वाद- विवाद प्रतियोगिता में हिस्सेदारी लेने वाले वक्ताओं के वक्तव्य के साथ परामर्शदाताओं से चर्चा भी इस समारोह में रखी जा रही है। इसके साथ इस आयोजन में भारत देश में निर्मित ई वाहनो, वींएलटीडी संयंत्र, एवम् अन्य उपयोगी स्टाल भी सब को आकृषित करने के लिए उपलब्ध होंगे। इस समारोह में

1. सबसे अच्छा विचार / तर्क और समाधान प्रदान करने वाले वक्ता को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े एंकर, वीडियो ग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योताचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

संजय कुमार बाटला
संपादक

ऑटोमेटेड टेस्ट सेंटर (ए.टी.एस.) शुरू होने तक पूर्व चालित वाहन जांच शाखाओं को बंद करना गलत

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। डा.हरीश सभरवाल , राष्ट्रीय अध्यक्ष, ऑल इंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट कांग्रेस बड़े दुख व पीड़ा के साथ यह समस्या बयान कर रहे है कि ... आज हमारे राजस्थान में फिटनेस प्रमाण पत्र के लिए केंद्र सरकार के दिशानिर्देश से जो खिलवाड़ हो रहा है वह बहुत गंभीर समस्या का मोड ले सकता है।

हाल ही में केंद्र सरकार ने सभी राज्यों के लिए एक निर्देश पारित किया की कमर्शियल व्हीकल की फिटनेस के लिए ए टी एस यानी कि ऑटोमेटेड टेस्ट सेंटर लगाए जाए और जहां पर यह एटीएस लग जाए वहां पर पुराने तकनीक से जो मैन्युअल फिटनेस हो रही है वह केंद्र बंद कर दिया जाए। समूचे देश में एक हमारा राजस्थान ऐसा राज्य है जहां पर नई तकनीक के ऑटोमेटिक टेस्ट सेंटर नहीं लग पाए, परंतु पुराने ज़रूर बंद कर दिए गए ।

जब नए लगे नहीं और पुराने बंद कर दिए तो समस्या उत्पन्न हो गई और गाड़ीया बिना फिटनेस खड़ी होनी शुरू हो गई है ये बहुत गंभीर समस्या है और बिना फिटनेस सड़क पर चलना बहुत बड़ा रिस्क है ।

अतः जल्द ही ट्रक जो सामान ढोते हैं, बच्चों के लिए किताबें, फल फ्रूट, सब्जी तेल

घी , गेहूं यह सब सामान की आवाजाही बंद हो सकती है , इसके मध्य नजर हम इस समस्या हेतु सरकार से निवेदन कर रहे हैं तथा केंद्रीय मंत्री जी से मिले हैं और केंद्र सरकार में सेक्रेटरी साहब वी .उमा शंकर जी के समक्ष भी हमने अपनी बात रखी है कि हमारे साथ बहुत बड़ी नाइंसाफी है कि सरकार अपना काम करने में नाकाम रही है और उसका खामियाजा हमें भुगतना पड़ रहा है तो हमारी पूरी कोशिश है और हम अपेक्षा करते हैं कि राजस्थान सरकार से कि जब तक आप हमारे को नए एटीएस नहीं उपलब्ध करा कर देते, हमारे पुराने फिटनेस सेंटर तीन या 6 महीने के लिए एक्सटेंड किए जाएं और हम अपेक्षा करते हैं कि हमारी जेनुइन डिमांड को जल्द ही स्वीकार किया जाएगा और राजस्थान राज्य में आम जन को तथा ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स को इस बेवजह की परेशानी एवं होने वाले वित्तीय नुकसान से निजात मिलेगी।

दिल्ली ट्रांसपोर्टर क्लब ने ए एम आई टी सी के राष्ट्रीय अध्यक्ष का स्वागत कर मनाई राम नवमी ...

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली के एक बहुत ही प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध दिल्ली ट्रांसपोर्टर क्लब , जिसमें दिल्ली के सभी जाने-माने गणमान्य टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर, बस ऑपरेटर, टेम्पो ऑपरेटर, कार मालिक और इनोवा-क्रिस्टा जैसी गाड़ियाँ चलाने वाले टूरिज़्म से जुड़े लोग सदस्य हैं ने राम नवमी के शुभ अवसर पर दिल्ली के ट्रांसपोर्ट ट्रेड के बहुत ही कदावर नेता डॉ. हरिश सभरवाल, जो हाल ही में ऑल इंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने हैं, के स्वागत में एक कार्यक्रम का आयोजन किया।

यह एक भव्य कार्यक्रम था जिसमें तरह-तरह के खेलों और प्रतिभाओं का प्रदर्शन हुआ। क्लब के सदस्यों को ड सभरवाल द्वारा पुरस्कार व प्रमाण पत्र दे कर प्रोत्साहित किया गया।

यह कार्यक्रम राष्ट्र और समाज के नाम एक सशक्त संदेश लेकर आया।

डॉ. हरिश सभरवाल ने इस मौके पर सभी को किसी न किसी संस्था से जुड़ने के लिए प्रेरित किया और अपने सम्बोधन मे यह कहा कि समस्याओं का समाधान संगठन के ज़रिये ही संभव है।

उन्होंने ज़ोर दिया कि हमें अपने ट्रेड, विशेषकर टूरिज़्म ट्रेड को आगे बढ़ाने के लिए हमेशा एकजुट रहना होगा।

उनहोने अपने सम्बोधन नौजवान पीडी को संदेश दिया हर तरह की समस्या को निबटने के लिए DCBA की टीम सदैव तत्पर है व 24 ×7 उपलब्ध है।

उन्होनें कहा अगर नेतृत्व मज़बूत हाथो में होगा, तो जो भी समस्याएं पर्यटन सीजन के दौरान आती हैं, उनका समाधान अब सिर्फ DCBA (DELHI CONTRACT BUS ASSOCIATION) करने के लिए वचन बद्ध है ।

मीटिंग के दौरान आल ईंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट कॉंग्रेस के 88 वर्ष के इतिहास व वर्तमान कार्यकाल पर चर्चा हुई जिसमे युवा पीडी को अवगत कराया गया कि इतने लम्बे कार्यकाल मे पहलीबार बस की श्रेणी मे से डा हरिश सभरवाल जैसा सशक्त नेता अध्यक्ष पद पर चुना गया है।

डॉ. हरिश सबरवाल पहले ऐसे योग्य और प्रतिष्ठित नेता हैं जो बस ऑपरेटर सेगमेंट से राष्ट्रीय अध्यक्ष बने हैं। इस कार्यक्रम में लगभग 250 से 300 प्रतिनिधियों ने भाग लिया और यह कार्यक्रम राम नवमी की शुभ अवसर पर लगभग चार घंटे चला।

भारत की पहली 3 कोच वाली ट्रेन चलाएगी दिल्ली मेट्रो

दिल्ली मेट्रो भारत का पहला 3-कोच मेट्रो कॉरिडोर शुरू करने जा रहा है। यह 8 किलोमीटर लंबा कॉरिडोर लाजपत नगर से साकेत जी ब्लॉक तक चलेगा। यह कॉरिडोर खास तौर पर दक्षिण और मध्य दिल्ली के बीच यात्रा करने वाले यात्रियों के लिए अंतिम मील की कनेक्टिविटी में उल्लेखनीय सुधार करेगा। यात्रियों की संख्या के वास्तविक आकलन को ध्यान में रखते हुए विकसित किया जा रहा है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली मेट्रो भारत का पहला मेट्रो कॉरिडोर शुरू करने के लिए तैयार है, जिसे 3 कोच वाली ट्रेनों के साथ संचालित करने के लिए डिजाइन किया गया है, जो देश के शहरी परिवहन नेटवर्क में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर होगा।

8 किमी होगी मेट्रो लाइन की दूरी

साकेत जी ब्लॉक मेट्रो कॉरिडोर दिल्ली मेट्रो नेटवर्क में दूसरी सबसे छोटी मेट्रो लाइन (8 किमी) होगी, जो मौजूदा मेट्रो कॉरिडोर के साथ निर्बाध इंटरचेंज सुनिश्चित करते हुए अंतिम मील कनेक्टिविटी का विस्तार करेगी।

भारत में पहली बार, 3 कोच वाली मेट्रो ट्रेनें

4, 6 या 8 कोच वाली ट्रेनों का उपयोग करने वाली अधिकांश मेट्रो लाइनों के विपरीत, इस अभिनव 3 कोच प्रणाली को विशेष रूप से छोटी दूरी की यात्रा के लिए विकसित किया गया है। छोटी ट्रेन संरचना एक सस्ता और अधिक कुशल समाधान प्रदान करेगी, जो बेहतर आवृत्ति और परिचालन दक्षता सुनिश्चित करेगी और साथ ही दैनिक यात्रियों की पर्याप्त संख्या को समायोजित करेगी।

इस कॉरिडोर का उद्देश्य केवल ट्रेनों की लंबाई कम करना नहीं है, बल्कि भविष्य के लिए तैयार, कुशल और लागत प्रभावी मेट्रो प्रणाली के साथ शहरी गतिशीलता को अनुकूलित करना भी है।

लाजपत नगर-साकेत जी ब्लॉक कॉरिडोर को यात्रियों की संख्या के वास्तविक आकलन को ध्यान में रखते हुए विकसित किया जा रहा है। जहां उच्च घनत्व वाले कॉरिडोर में भारी भीड़ को संभालने के लिए लंबी रेक की आवश्यकता होती है, वहीं यह खंड यात्रियों की एक अलग श्रेणी की सेवा करता है - कम दूरी के यात्री जिन्हें लगातार और कुशल मेट्रो सेवाओं की आवश्यकता होती है।

दिल्ली के मेट्रो नेटवर्क पर प्रभाव

यह कॉरिडोर खास तौर पर दक्षिण और मध्य दिल्ली के बीच यात्रा करने वाले यात्रियों के लिए अंतिम मील की कनेक्टिविटी में उल्लेखनीय सुधार करेगा। मौजूदा मेट्रो लाइनों पर भीड़भाड़ कम करने और प्रमुख स्टेशनों पर निर्बाध इंटरचेंज प्रदान करके, इस परियोजना से हजारों दैनिक यात्रियों के लिए यात्रा का समय कम होने, प्रमुख संस्थागत और वाणिज्यिक क्षेत्रों तक पहुंच में सुधार होने और स्मार्ट और पर्यावरण के अनुकूल बुनियादी ढांचे के साथ टिकाऊ शहरी परिवहन को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

-अनुज दयाल, प्रधान कार्यकारी निदेशक(कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन)

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

हनुमान जन्मोत्सव 2025: हनुमान जन्मोत्सव पर करें ये उपाय, बजरंगबली देंगे धन और तरक्की का आशीर्वाद

हनुमान जन्मोत्सव चैत्र मास की पूर्णिमा के दिन मनाई जाती है। इस साल चैत्र मास की पूर्णिमा तिथि का प्रारम्भ १२ अप्रैल ०८:२१ बजे से होगा और १३ अप्रैल को ०५:५१ बजे इसका समापन होगा। ऐसे में हनुमान जन्मोत्सव १२ अप्रैल को मनाया जाएगा। मान्यता है कि हनुमान जन्मोत्सव पर कुछ विशेष उपाय करने से बजरंगबली की कृपा प्राप्त होती है। अगर आप लंबे समय से धन की समस्या का सामना कर रहे हैं, तो हनुमान जन्मोत्सव पर कुछ खास उपाय कर सकते हैं।

हनुमान जन्मोत्सव पर करें ये उपाय

१. बजरंगबली को केला अत्यंत प्रिय फल है और यह सदैव उनके भोग में शामिल किया जाता है। हनुमान जन्मोत्सव के दिन ११ केले लें और हर एक में एक लौंग लगा दें। इसके बाद इन फलों को हनुमानजी को समर्पित करें और फिर प्रसाद स्वरूप बच्चों में बांट दें। ऐसा करने से जीवन की परेशानियां दूर होती हैं।

२. हनुमान जन्मोत्सव पर एक पान के पत्ते पर बूंदी के दो लड्डू और एक लौंग रखें। इसे अच्छे से लपेटकर उस पर चांदी का वर्क चढ़ाएं और हनुमानजी को अर्पित करें। इससे आर्थिक समृद्धि आती है और करियर में तरक्की के रास्ते खुलते हैं।

३. हनुमान जन्मोत्सव के अवसर पर हनुमानजी के मंदिर जाएं और ११ बार हनुमान चालीसा का पाठ करें। इसके बाद उन्हें गुलाब की माला अर्पित करें और चमेली के तेल का दीपक जलाएं, जिसमें दो लौंग अवश्य डालें। यह उपाय घर के अनावश्यक खर्चों में कमी लाता है।

४. काले चने और बूंदी को भी हनुमानजी का प्रिय भोग माना गया है। हनुमान जन्मोत्सव की पूर्व संध्या पर सवा किलो काले चने भिगो दें। अगले दिन इन्हें उबालकर सवा किलो बूंदी के साथ मिलाकर हनुमानजी को अर्पित करें। इसके बाद यह प्रसाद मंदिर में भक्तों को बांट दें। इससे बजरंगबली प्रसन्न होते हैं और आर्थिक परेशानियाँ दूर होती हैं।

५. हनुमान जन्मोत्सव के दिन पीपल के पत्तों से जुड़ा यह उपाय लाभकारी हो सकता है। सुबह स्नान के बाद पीपल के ११ सुंदर, साफ पत्ते चुनें। प्रत्येक पत्ते पर चंदन से **x** "जय श्रीराम" लिखें और इन पत्तों की माला बनाकर हनुमानजी को अर्पित करें। माना जाता है कि इससे धन संबंधी समस्याएं दूर होती हैं और घर में सुख-समृद्धि आती है।

राम_राम_जी

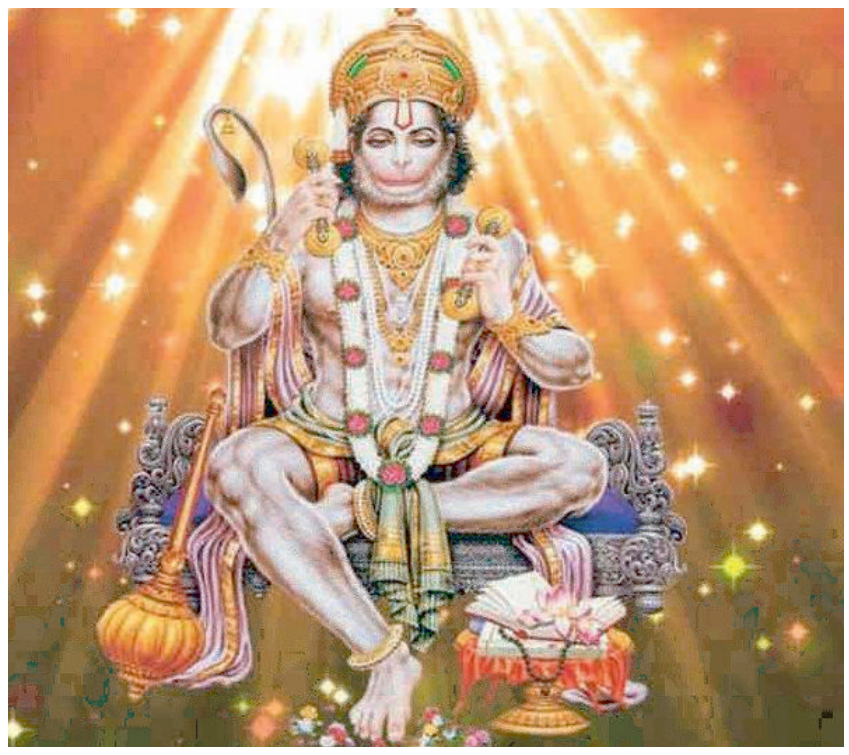

न्यायाधीश शनिदेव

बात उस समय की है जब भगवान विष्णु, शंकर और ब्रह्मा के बीच एक संवाद शुरू हुआ। यह संवाद था संसार में एक न्याय अधिकारी को जन्म देने का। यह संवाद तब शुरू हुआ जब देवो और असुरों के बीच लगातार युद्ध हो रहा था। वरन असुरो को लगता था कि बाद जब न्याय की बात आती है तो फैसला देवों के हक में सुनाया जाता है। परंतु असुरों के गुरु शुक्राचार्य को भगवान शंकर पर पूर्ण विश्वास था कि वह देवों के साथ असुरों के हितों की भी रक्षा करेंगे। मसलन सच तो यही है कि भगवान शंकर ने अपने परम भक्त शुक्राचार्य को निराश नहीं किया। भगवान शंकर ही थे जिन्होंने शनिदेव के जन्म की पटकथा लिखी। शनिदेव का जन्म सूर्य पुत्र के रूप में हुआ जिनकी मां का नाम छाया था। एक पौराणिक कथा के अनुसार छाया ने शनि को एक जंगल में छुपा के रख उनका वही पालन-पोषण किया। यम के अलावा शनि भी एक पुत्र है। शनि देव को भी नहीं मालूम था उनके पिता स्वयं सूर्य देव है। लेकिन यह राज बहुत दिनों तक छुप ना सका। क्योंकि संसार को उसका न्याय अधिकारी मिलना था जो कर्मों के आधार पर लोगों को न्याय और दंड देगा। इधर देवाधिपति इंद्र देव और शुक्राचार्य जो असुरो के गुरु थे उनके बीच न्याय अधिकारी के अस्तित्व को जानने के लिए खलबली मची हुई थी। इसी खलबली का नतीजा एक चक्रवात के रूप में आया जिसका संचालन शुक्राचार्य कर रहे थे। दरअसल, शुक्राचार्य को मोहरा बनाते हुए इंद्र देव ने एक षड्यंत्र रचा था। सही मायनों में इस चक्रवात के लिए इंद्रदेव जिम्मेदार थे जिन्होंने असुरों के गुरू शुक्राचार्य को उकसाया। इस चक्रवात की चपेट में शनि की माता छाया आ गई जिससे शनि देव नाराज हो गए और शंकर भगवान की कृपा से उन्हें अपनी शक्तियों का बोध हो गया और उन्होंने अपनी माँ छाया को बचा लिया। इसके बाद सूर्य देव चक्रवात से क्रोधित हो गए और उन्होंने शुक्राचार्य और इंद्र देव को सूर्य लोक में बुलाया। जहां पर चक्रवात के दोषी को दंड दे कर न्याय दिया जाना था। लेकिन शुक्राचार्य की बात सुने बिना सूर्य देव ने शुक्राचार्य को दोषी करार दे दिया इसको देखते हुए वहां शनि देव प्रकट हो गए उन्होंने न्याय अधिकारी के रूप में उचित न्याय किया। उन्होंने सभी को बताया कि चक्रवात के असली दोषी शुक्राचार्य नहीं अपितु इंद्रदेव हैं। शनिदेव की यह बात सुनकर वहां मौजूद सभी देवता (उनके पिता सूर्यदेव) और शुक्राचार्य चकित रह गए। लेकिन शनिदेव ने कहा कि न्याय सबके लिए बराबर होता है चाहे वह देव हो या असुर। अंत में देवताओं को शनि देव के आगे झुकना ही पड़ा क्योंकि न्याय विश्व के न्याय अधिकारी के द्वारा हो रहा था। इंद्र देव को सजा के तौर पर अपना मुकुट धरती पर उतार कर रखना ही पड़ा।

देवीपाटन का मां पाटेश्वरी मंदिर - यहीं पर समाईं थी देवी सीता

भारत के धार्मिक स्थल विशेषकर मंदिर एक से बढ़कर एक रहस्य अपने में समेटे हुए हैं। ऐसा ही एक मंदिर है उत्तर प्रदेश के बलरामपुर जनपद के पाटन गांव में सिरिया नदी के तट पर स्थित मां पाटेश्वरी का मंदिर। इस मंदिर के कारण ही इस पूरे मंडल का नाम देवीपाटन पड़ा हुआ है। मंदिर से कई पौराणिक कहानियां तो जुड़ी ही हैं साथ ही यहां की मान्यता को हर साल यहां मां के दर्शने के लिये आने वाले लाखों श्रद्धालुओं की भीड़ से समझा जा सकता है।

आइये आपको बताते हैं मां पाटेश्वर के इस पौराणिक इतिहास की गाथा। मां पाटेश्वरी की यह मंदिर अपने अंदर कई पौराणिक कहानियों को समेटे हुए है। एक कथा भगवान श्री राम और माता सीता से जुड़ी है। कहते हैं कि त्रेतायुग में जब भगवान राम, रावण का संहार कर देवी सीता को अयोध्या लाये तो देवी सीता को अग्नि परीक्षा से गुजरना पड़ा, लेकिन कुछ समय पश्चात किसी धोबी ने अपनी पत्नी को अपनाने से इंकार करते हुए भगवान राम पर कटाक्ष किया तो भगवान राम ने गर्भवती सीता को घर से निकाल दिया। वन में सीता महर्षि वाल्मिकी के आश्रम में रहने लगी जहां उन्होंने लव-कुश को जन्म दिया इसके बाद लव-कुश ने अश्वमेघ यज्ञ के घोड़े को रोककर भगवान राम को युद्ध की चुनौति दी जिसके बाद उनका परिचय हुआ। पिता पुत्र के मिलन के बाद सीता को वापस अयोध्या ले जाने को भगवान राम इसी शर्त पर तैयार थे कि माता सीता पुनः अग्नि परीक्षा से गुजरें। यह बात सीता सहन न कर सकी और उन्होंनें धरती माता को पुकारा और अपनी गोद में समा लेने की प्रार्थना की। फिर क्या था देखते ही देखते धरती का सीना फटा और धरती माता सीता को अपनी गोद में लेकर वापस पाताल लोक को गमन कर गईं। कहा

जाता है कि पाताल से धरती माता निकलने के कारण इसका नाम आरंभ में पातालेश्वरी था जो बाद में पाटेश्वरी हो गया। मान्यता है कि आज भी वहां पाताल लोक तक जाने वाली एक सुरंग मौजूद है जो चांदी के चबूतरे के रूप में दिखाई देती है।

51 शक्तिपीठों में से एक मां पाटेश्वरी का मंदिर वहीं मां पाटेश्वरी के इस मंदिर से एक कथा देवी सती की शक्तिपीठों से भी जुड़ी है। जब देवी सती के पिता दक्ष प्रजापति ने यज्ञ में माता सती के पति भगवान भोलेनाथ शिवशंकर को आमंत्रित नहीं किया तो देवी ने यज्ञ में जाने की जिद की। देवी यज्ञ में अपने पिता से निमंत्रण न देने का कारण जानने लगी तो उनके पिता दक्ष भगवान शंकर का अपमान करने लगे जिसे देवी सहन कर सकी और हवन कुंड में कूदकर अपनी जान दे दी। भगवान शंकर को क्रोध आ गया और वो सती शव को लेकर तांडव करने लगे। दुनिया नष्ट होने की कगार पर पंहुच गई। देवताओं के सिंहासन डोलने लगे। तब भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन से देवी सती के शव को खंडित किया जहां जहां देवी के अंग व वस्त्र पड़े वहां शक्तिपीठ स्थापित हुईं। मां पाटेश्वरी के इस मंदिर के बारे में माना जाता है कि मां का वाम स्कंद यानि बायां कंधा वस्त्र सहित यहां गिरा था। स्कंदपुराण में इसका वर्णन भी मिलता है। भगवान परशुराम की तपस्थली तो कर्ण ने सीखी शस्त्र विद्या मंदिर से एक और पौराणिक कथा जुड़ी है माना जाता है कि यहीं पर भगवान परशुराम ने अपनी तपस्या की थी। उसके बाद महाभारत काल में इसी स्थान पर स्थित सरोवर जो आजकल सूर्यकुंड है, में स्नान कर दानवीर कर्ण ने भगवान परशुराम से शस्त्र विद्या ग्रहण की थी। माना यह भी जाता है कि सूर्यकुंड के जल में स्नान कर इसी जल से देवी की पूजा करने की परंपरा की शुरुआत भी करण से ही चली आ रही है उन्होंने ही इसकी शुरुआत की थी। साथ ही यह भी माना जाता है कि मंदिर का जीर्णोद्धार भी राजा करण ने कराया था। कहा जाता है कि कालांतार में विक्रमादित्य ने फिर से मंदिर का जीर्णोद्धार किया लेकिन बाद में मुगल शासक औरंगजेब ने मीर समर को मंदिर को नष्ट भ्रष्ट करने भेजा जो देवी प्रकोप का शिकार हुआ मीर समर का समाधिस्थल मंदिर के पूर्व में आज भी है। लेकिन कहा जाता है औरगंजेब ने स्वयं मंदिर को धवस्त किया जिसे बाद में फिर से बनाया गया।

गुरु गोरखनाथ ने की थी पीठ की स्थापना मां पाटेश्वरी के इस मंदिर को सिद्ध योगपीठ एवं शक्तिपीठ दोनों माना जाता है। कहा जाता है कि गुरु गोरखनाथ व पीर रत्ननाथ ने यहीं पर सिद्धियां प्राप्त की जिसके बाद उन्होंनें नाथ संप्रदाय को शुरु किया। मान्यता है कि भगवान शिव की आज्ञा से महायोगी गुरु गोरखनाथ ने सिद्ध शक्तिपीठ देवीपाटन में पाटेश्वरी पीठ की स्थापना कर मां पाटेश्वरी की आराधना एवं योगसाधना की थी। इसका उल्लेख यहां एक शिलालेख से भी मिलता है। मंदिर में देवी की प्रतिमा मां पाटेश्वरी के इस मंदिर के भीतरी कक्ष में कोई प्रतिमा नहीं बल्कि चांदी से जड़ा हुआ एक चबूतरा है जिस पर कपड़ा बिछा रहता है इसी चबूतरे के ऊपर एक ताम्र छत्र है जिस पर पूरी दुर्गा सप्तशती के श्लोक छपे हुए हैं। यहां घी की अखंड दीप ज्योति जलती रहती है माना जाता है कि यह जोत शक्तिपीठ के स्थापना काल से ही लगातार जल रही है। भीतरी कक्ष में देवी की प्रतिमा नहीं है लेकिन मंदिर में दुर्गा माता के नौ स्वरुप मां शैलपुत्री, मां ब्रह्मचारिणी, मां चंद्रघंटा, मां कूष्मांडा, स्कंदमाता, मां कात्यायनी, मां कालरात्रि, मां महागौरी एवं मां सिद्धीदात्री की प्रतिमायें स्थापित हैं।

यहां होता है कुष्ठरोगों का निवारण मां पाटेश्वरी मंदिर के उत्तर में सूर्यकुंड है। वही सूर्यकुंड जिसके जल से दानवीर कर्ण स्नान कर मां की आराधना किया करते थे। मान्यता है कि रविवार के दिन षोडशोपचार से पूजन किया जाये तो कुष्ठरोग का निवारण हो जाता है। नवरात्र पर लगता है मेला नवरात्र के दिनों में माता के हर मंदिर में श्रद्धालुओं की भीड़ लगने लगती है लेकिन मां पाटेश्वरी के मंदिर में भारत से लेकर नेपाल तक के श्रद्धालु आते हैं। क्योंकि गुरु गोरखनाथ के शिष्य पीर रत्ननाथ की तपस्या से खुश होकर मां ने उनकी पूजा होने का वरदान दिया था। नेपाल में पीर रत्ननाथ को मानने वाले बहुत लोग हैं। वासंती नवरात्र की पंचमी को यहां नेपाल से उनकी शोभायात्रा पंहुचती है और पांच दिन तक नेपाल से आये पुजारी मां की पूजा के साथ-साथ रत्ननाथ की पूजा भी करते हैं। वहीं नवरात्र के दौरान यहां मेला भी लगता है जिसमें लाखों की संख्या में पूरे भारतवर्ष से श्रद्धालु आते हैं। मां पाटेश्वरी के मंदिर में मां के नौ रुपों की प्रतिमाएं भी यहां स्थापित हैं इस कारण भी नवरात्र के दिनों में यहां भीड़ रहती है।

श्री राम के दादा परदादा का नाम क्या था?

जानिये- हर हिंदू इस जानकारी को जाने.

1 - ब्रह्मा जी के पुत्र मरीचि,
2 - मरीचि के पुत्र कश्यप,
3 - कश्यप के पुत्र विवस्वान,
4 - विवस्वान के पुत्र वैवस्वत मनु. (वैवस्वत मनु के समय जल प्रलय हुआ था,)
5 - वैवस्वतमनु के दस पुत्रों में से एक थे इक्ष्वाकु, (इक्ष्वाकु ने अयोध्या को अपनी राजधानी बनाया और इस प्रकार इक्ष्वाकु कुल की स्थापना की।)
6 - इक्ष्वाकु के पुत्र कुक्षि,
7 - कुक्षि के पुत्र विकुक्षि,
8 - विकुक्षि के पुत्र बाण,
9 - बाण के पुत्र अनरण्य,
10- अनरण्य के पुत्र पृथु,
11- पृथु के पुत्र त्रिशंकु,
12- त्रिशंकु के पुत्र धुंधुमार,
13- धुन्धुमार के पुत्र युवनाश्व,
14- युवनाश्व के पुत्र मान्धाता,
15- मान्धाता के पुत्र सुसन्धि,
16- सुसन्धि के दो पुत्र- ध्रुवसन्धि एवं प्रसेनजित,
17- ध्रुवसन्धि के पुत्र भरत,
18- भरत के पुत्र असित,
19- असित के पुत्र सगर,
20- सगर के पुत्र असमंज,
21- असमंज के पुत्र अंशुमान,
22- अंशुमान के पुत्र दिलीप,
23- दिलीप के पुत्र भगीरथ, (भागीरथ ने ही गंगा को पृथ्वी पर उतारा था.)
24- भागीरथ के पुत्र ककुत्स्थ,
25- ककुत्स्थ के पुत्र रघु, (रघु के अत्यंत तेजस्वी और पराक्रमी नरेश होने के कारण उनके बाद इस वंश का नाम रघुवंश हो गया, तब से श्री राम के कुल को रघु कुल भी कहा जाता है।)
26- रघु के पुत्र प्रवृद्ध,

27- प्रवृद्ध के पुत्र शंखण,
28- शंखण के पुत्र सुदर्शन,
29- सुदर्शन के पुत्र अग्निवर्ण,
30- अग्निवर्ण के पुत्र शीघ्रग,
31- शीघ्रग के पुत्र मरु,
32- मरु के पुत्र प्रशुश्रुक,
33- प्रशुश्रुक के पुत्र अम्बरीष,
34- अम्बरीष के पुत्र नहुष,
35- नहुष के पुत्र ययाति,
36- ययाति के पुत्र नाभाग,
37- नाभाग के पुत्र अज,
38- अज के पुत्र दशरथ,
39- दशरथ के चार पुत्र राम, भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न हुए।

(इस प्रकार ब्रह्मा की उन्चासवी पीढ़ी में श्रीराम का जन्म हुआ।)

रामचरित मानस के कुछ रोचक तथ्य

1. लंका में राम जी = 111 दिन रहे।
2. लंका में सीताजी = 435 दिन रहीं।
3. मानस में श्लोक संख्या = 27 है।
4. मानस में चोपाई संख्या = 4608 है।
5. मानस में दोहा संख्या = 1074 है।
6. मानस में सोरठा संख्या = 207 है।
7. मानस में छन्द संख्या = 86 है।
8. सुग्रीव में बल था = 10000 हाथियों का।
9. सीता रानी बनीं = 33वर्ष की उम्र में।
10. मानस रचना के समय तुलसीदास की उम्र = 77 वर्ष थी।
11. पुष्पक विमान की चाल = 400 मील/घण्टा थी।
12. रामादल व रावण दल का युद्ध = 87 दिन चला।
13. राम रावण युद्ध = 32 दिन चला।
14. सेतु निर्माण = 5 दिन में हुआ।
15. नलनील के पिता = विश्वकर्मा जी हैं।
16. त्रिजटा के पिता = विभीषण हैं।
17. विश्वामित्र राम को ले गए =10 दिन के लिए।
18. राम ने रावण को सबसे पहले मारा था = 6 वर्ष की उम्र में।
19. रावण को जिन्दा किया = सुखेन बेद ने नाभि में अमृत रखकर।

भगवान शंकर ने सोने की लंका रावण को क्यों दी ?

छल-कपट से प्राप्त की गई वस्तु कभी स्थायी नहीं रहती उसका विनाश अवश्य होता है। रावण द्वारा छल से प्राप्त की गई सोने की लंका भी जल कर भस्म हो गई।

जानें, सोने की लंका किसने बनवाई और किसके शाप के कारण जल कर भस्म हुई? पार्वती जी को भी आश्चर्य हुआ कि मेरे पति भी कितने सरल हैं, जो उन्होंने मेरा ही दान कर दिया। ब्रह्मविद्या पार्वती को लेकर जब रावण चलने लगा तो वह सहायता के लिए भगवान श्रीहरि का ध्यान करने लगीं। रावण जैसे कपटी से निपटने के लिए श्रीहरि (श्रीकृष्ण) ही उपयुक्त हैं; क्योंकि वो बड़े छलिया हैं। कपटियों से कैसे निपटा जाता है अच्छी तरह से जानते हैं? राजाधिराज कुबेर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की धन-सम्पदा के स्वामी होने के साथ देवताओं के भी धनाध्यक्ष (भण्डारी, treasurer) हैं। संसार के गुप्त या प्रकट जितने भी वैभव हैं, उन सबके अधिष्ठाता देव कुबेर हैं। कुबेर नव- निधियों के भी स्वामी हैं। एक निधि भी अनन्त वैभव प्रदान करने वाली होती है; किन्तु कुबेर नव-निधियों के स्वामी हैं। पादकल्प में कुबेर विश्रवा मुनि व इडविडा के पुत्र हुए। इनकी दीर्घकालीन तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा जी ने इन्हें लोकपाल का पद, अक्षय निधियों का स्वामी, पुष्पक विमान व देवता का पद प्रदान किया। कुबेर ने अपने पिता विश्रवामुनि से कहा कि ब्रह्मा जी ने मुझे सब कुछ प्रदान कर दिया; परन्तु मेरे निवास के लिए कोई स्थान नहीं दिया है। इस पर इनके पिता ने दक्षिण समुद्र तट पर त्रिकूट पर्वत पर स्थित लंका नगरी कुबेर को प्रदान की। कुबेर ने कई जन्मों तक भगवान शंकर की पूजा-आराधना की। पादकल्प में जब ये विश्रवा मुनि के पुत्र हुए तब इन्होंने भगवान शंकर की विशेष आराधना की। भगवान शंकर ने प्रसन्न होकर इन्हें उत्तर दिशा का आधिपत्य, अलकापुरी का राज्य, चैत्ररथ नामक दिव्य वन और एक दिव्य सभा प्रदान की। माता पार्वती की इन पर विशेष कृपा थी। भगवान शंकर ने कुबेर से कहा — 'तुमने अपने तप से मुझे जीत लिया है, अतः मेरा मित्र बनकर यहीं अलकापुरी में रहो।' इस प्रकार कुबेर भगवान शिव के भी घनिष्ठ मित्र हैं। एक बार कुबेर ने भगवान शंकर के पास जाकर कहा — 'मैं आपकी कोई सेवा करना चाहता हूं, मुझे कोई सेवा बताएं।' भगवान शंकर ने कहा — 'मेरे हृदय में तो श्रीराम बसते हैं, वही मेरा धन हैं। मुझे किसी वस्तु या सेवा की आवश्यकता नहीं है।' भगवान शंकर के मना करने पर कुबेर भण्डारी प्रतिदिन माता पार्वती से विनती करते — 'मां ! मेरी आप दोनों की सेवा करने की बहुत इच्छा है, कोई सेवा बताओ।' एक बार भगवान विष्णु और लक्ष्मी जी भगवान शंकर और माता पार्वती से मिलने कैलाश पर्वत पर आए। ठंड के कारण लक्ष्मी जी ठिठुरने लगीं। सर्दी से बचने के लिए उन्हें पूरे कैलास पर्वत पर कोई स्थान नहीं मिला। तब लक्ष्मी जी ने माता पार्वती से पूछा — 'आप इस पर्वत पर कैसे जीवन व्यतीत करती हैं ?' इसके बाद माता पार्वती ने वैकुण्ठ धाम की यात्रा की, वहां के वैभव को देखकर पार्वती जी ने ठान लिया कि वे भी अपने और शंकर जी के लिए ऐसा ही महल निर्मित कराएंगी। अपनी इच्छा को उन्होने भगवान शिव के सम्मुख रखा; परंतु भगवान शंकर तो विरागी ठहरे, वे कुछ नहीं बोले। एक दिन माता पार्वती ने कुबेर से कहा — 'तुम्हारे पास बहुत संपत्ति है तो सोने का राजमहल (लंका) बनवा दो। मैं शंकर जी को मना कर उसमें ले आऊंगी।' कुबेर को बहुत प्रसन्नता हुई कि मेरी संपत्ति का उपयोग शिव-सेवा में होगा, मेरे द्वारा बनवाए गए राजमहल में भगवान शंकर माता पार्वती सहित विराजेंगे। कुबेर ने अपनी सारी संपत्ति लगा कर देवताओं के शिल्पी विश्वकर्मा से सोने का राजमहल बनवा दिया। जिसे देख कर सभी देवताओं को बड़ा आश्चर्य हुआ। भगवान शंकर ब्रह्म हैं तो माता पार्वती ब्रह्मविद्या हैं। ब्रह्म ब्रह्मविद्या के अधीन

रहता है। भगवान शंकर को पार्वती जी अति प्रिय हैं। पार्वती जी जो कहती हैं, वही शंकर जी करते हैं। माता पार्वती ने शंकर जी से कहा— 'कुबेर ने बहुत परिश्रम और प्रेम से सोने का राजमहल बनवाया है, थोड़े दिन यदि हम वहां रहें तो इसमें क्या हर्ज है ? आप तो स्वयं आनंदस्वरूप हैं, आपको श्मशान में भी आनंद है, पेड़ की छाया में भी आनंद है, तो क्या राजमहल में आपको आनंद नहीं होगा ?' भगवान शंकर ने कहा — 'कुबेर ने राजमहल तो अच्छा बनवाया है; किंतु उसने अभी वास्तु-पूजा नहीं की है। वास्तु-पूजा किए बिना वहां हम कैसे रहेंगे ?' शंकर जी और पार्वती जी अभी ये सब बात कर ही रहे थे; उसी समय वहां रावण भगवान शंकर के पूजन के लिए आया। शंकर जी जानते थे कि रावण प्रकाण्ड विद्वान है; फिर भी उन्होंने रावण से पूछा — 'वास्तु-पूजन कराना है, तुम्हें वैदिक मंत्रों का ज्ञान है ?' रावण के 'हां' कहने पर भगवान शंकर यजमान बने और रावण पुरोहित बन गया और सोने के राजमहल का वास्तु-पूजन सानंद सम्पन्न हुआ। रावण बड़ा लोभी था। सोने का राजमहल देख कर उसकी नीयत बिगड़ गई और वह मन में सोचने लगा कि किसी तरह यह राजमहल मुझे मिल जाए। पूजन के बाद भगवान शंकर ने रावण से कहा — 'पुरोहित जी ! आपको जो उचित लगे, वह दक्षिणा मांग लो।' रावण ने कहा — 'मैं जो मांगू वो आप मुझे देंगे ?' भगवान शंकर ने कहा — मेरा नियम है कि मैं किसी से 'ना' नहीं कहता हूँ।' रावण ने कहा — 'महाराज ! यह जो सोने का राजमहल है, जिसका वास्तु-पूजन मैंने करवाया है, उसे आप दक्षिणा में मुझे दे दें।' यह सुन कर भगवान शंकर ने पार्वती जी से कहा — 'ब्राह्मण है, मांग रहा है। मांगना मरने के समान होता है। हम लोग सोने के राजमहल में रहें या कहीं क्या फर्क पड़ता है ? कोई गरीब राजमहल में रह कर सुखी होता है तो हम उसको देख कर ही सुखी हो जाएंगे।' भगवान शिव याचक (मांगने वाले) के लिए कल्पवृक्ष हैं। जैसे कल्पवृक्ष अपनी छाया में आए हुए व्यक्ति को अभीष्ट वस्तु प्रदान करता है, वैसे ही शिव के दरबार से कोई खाली हाथ नहीं लौटता, वे उपासकों के समस्त अभाव दूर कर देते हैं और देते-देते अघाते भी नहीं हैं। औघड़दानी शिव के दान को देखकर लक्ष्मी जी ईर्ष्या करती है कि जो वस्तुएं वैकुण्ठ में भी दुर्लभ हैं, वे शंकर जी इन कंगालों को बांट रहे हैं। शंकर जी ने रावण से कहा—'चलो तुम्हें राजमहल दिया।' पार्वती जी को यह बात ठीक नहीं लगी। उन्होंने रावण को शाप देते हुए कहा — 'जिस सोने की लंका को तुमने दान में मांग लिया है, वह एक दिन जलकर भस्म हो जाएगी।' और सच में हनुमान जी ने सोने की लंका को जला कर भस्म कर दिया। सोने का राजमहल मिलने के बाद रावण की नीयत और बिगड़ गई। वह मन-ही-मन कहने लगा — 'ये तो बड़े भोले हैं, जो मांगों सो दे देते हैं।' रावण ने शंकर जी से कहा — 'महाराज ! दूसरा जो कुछ मांगूं, सो आप देंगे ?' शंकर जी के 'हां' कहने पर रावण ने कहा — 'ये पार्वती बहुत सुंदर हैं, इन्हें आप मुझे दे दो।' शंकर जी ने मुसकराते हुए कहा — 'मुझे तो विवाह करने की इच्छा ही नहीं थी, मैंने तो कामदेव को ही भस्म कर दिया था। भगवान नारायण की इच्छावश मैंने लग्न कर लिया था। तुझे पार्वती बहुत अच्छी लगती हैं तो तू ले जा।' भगवान शंकर के समान ऐसा उदार दानी कहां मिलेगा ? ऐसा दानी जो वरदान देकर स्वयं संकट में पड़ जाए। शिवजी ने प्रकृति के सारे नियम ही पलट दिए। पार्वती जी को भी आश्चर्य हुआ कि मेरे पति भी कितने सरल हैं, जो उन्होंने मेरा ही दान कर दिया। ब्रह्मविद्या पार्वती को लेकर जब रावण चलने लगा तो वे सहायता के लिए भगवान श्रीहरि का ध्यान करने लगीं। रावण जैसे कपटी से निपटने के लिए श्रीहरि (श्रीकृष्ण) ही उपयुक्त हैं; क्योंकि वो भी बड़े छलिया हैं। कपटियों से कैसे निपटा जाता है, वे अच्छी तरह से जानते हैं ? रावण को मार्ग में एक ग्वाला मिला। ग्वाले ने रावण को वंदन करके पूछा — 'आप तो बड़े वीर पुरुष हैं, किसी से हारे ही नहीं हैं; फिर ये किसको ले जा रहे हैं ?' अहंकारी रावण अपनी प्रशंसा से फूल गया और कहने लगा — 'शंकर जी ने मुझे सोने की लंका और ये ब्रह्मविद्या पार्वती दी है। इस पार्वती को पाकर मैं अमर हो जाऊंगा।' ग्वाले ने हंसते हुए कहा — 'यह पार्वती नहीं है, यह उनकी दासी होगी। शंकर जी तुम्हें अपनी पार्वती कैसे दे देंगे ? पार्वती जी की दासी देकर तुम्हें बहला दिया है। ब्रह्मविद्या माता पार्वती के श्रीअंग से तो कमल की गंध निकलती है; क्योंकि उनके अंग में मल-मूत्र, रुधिर-मांस नहीं है। तुम परीक्षा करो, यदि कमल की गंध न आए तो समझ लेना कि ये पार्वती जी की दासी हैं।' पार्वती जी ने अपने श्रीअंग से तीव्र दुर्गंध प्रकट कर दी। रावण की बुद्धि भ्रमित हो गई। उसने कहा — 'इनमें से कमल की सुगंध तो नहीं आ रही है, दुर्गंध आ रही है।' ग्वाले के वेश में श्रीहरि ने कहा — 'तब तो यह पार्वती की दासी है। वे पार्वती तुम्हें कैसे दे देंगे ? मैंने सुना है कि पार्वती जी को शंकर जी ने पाताल में रख दिया है। तुम इन्हें छोड़ दो।' रावण ग्वाले की बातों में आ गया और पार्वती जी को छोड़ करके चला गया। तब भगवान श्रीहरि ने वहां पार्वती जी की पूजा और स्थापना की। दक्षिण भारत में गोकर्ण महाबलेश्वर नामक स्थान है, जहां पर द्वैपायनी जगदम्बा पार्वती जी का मंदिर है।

टैरिफ और वैश्विक व्यापार में परिवर्तन

टैरिफ, यानी व्यापार शुल्क, वैश्विक व्यापार को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण आर्थिक उपकरण है। हाल के वर्षों में, विशेष रूप से ट्रम्प प्रशासन के दौरान, अमेरिका और कई अन्य देशों के बीच टैरिफ युद्ध छिड़ गया, जिससे वैश्विक व्यापार संतुलन अस्थिर हो गया। टैरिफ नीतियाँ वैश्विक व्यापार को गहराई से प्रभावित करती हैं। अमेरिका और अन्य देशों के बीच व्यापार शुल्क विवादों ने व्यापारिक संबंधों, आपूर्ति श्रृंखलाओं और उपभोक्ताओं पर व्यापक प्रभाव डाला। भविष्य में, व्यापारिक स्थिरता बनाए रखने के लिए बहुपक्षीय सहयोग और नीति समन्वय आवश्यक होगा।

प्रियंका सौरभ

कल्पना कीजिए कि दुनिया में हर चीज़ पर टैक्स लग जाए—आपका स्मार्टफोन, आपकी जींस, आपकी सुबह की कॉफी, और यहां तक कि आपके जूते भी। और नहीं, यह कोई डायस्टोपियन साइंस फिक्शन फिल्म नहीं है, बल्कि हमारी मौजूदा व्यापार नीति की वास्तविकता है! टैरिफ, यानी व्यापार शुल्क, कभी सरकारों के लिए आर्थिक संतुलन का साधन हुआ करता था, लेकिन अब यह बड़े देशों के बीच शक्ति प्रदर्शन का अखाड़ा बन चुका है। टैरिफ, यानी व्यापार शुल्क, वैश्विक व्यापार को सीधे प्रभावित करते हैं। जब किसी देश द्वारा आयातित वस्तुओं पर शुल्क बढ़ाया जाता है, तो इससे उस देश के व्यापारिक संबंधों, उद्योगों और उपभोक्ताओं पर प्रभाव पड़ता है। हाल के वर्षों में अमेरिका और अन्य देशों के बीच टैरिफ विवादों ने वैश्विक व्यापार को अस्थिर कर दिया है। टैरिफ व्यापार नीति का एक महत्वपूर्ण साधन है जिसका उपयोग देश अपनी अर्थव्यवस्था की रक्षा, घरेलू उद्योगों को प्रोत्साहित करने और राजस्व बढ़ाने के लिए करते हैं। हाल के वर्षों में, विशेष रूप से ट्रम्प प्रशासन के दौरान, टैरिफ युद्धों ने वैश्विक व्यापार को अस्थिर कर दिया।

टैरिफ किसी देश द्वारा आयातित वस्तुओं पर लगाया जाने वाला शुल्क होता है। इसका मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हो सकते हैं; उच्च टैरिफ लगाकर सरकारें घरेलू उत्पादकों को सस्ते आयात से बचाती हैं। टैरिफ से सरकार को कर के रूप में आय प्राप्त होती है। आयात को नियंत्रित करने के लिए टैरिफ का उपयोग किया जाता है, ताकि व्यापार घाटा कम किया जा सके।

ट्रम्प प्रशासन के दौरान अमेरिका ने चीन, यूरोप, भारत और अन्य देशों पर व्यापार शुल्क बढ़ाए। इस नीति का उद्देश्य अमेरिकी उद्योगों को बढ़ावा देना और व्यापार घाटे को कम करना था। हालांकि, इस नीति से कई देशों में अस्थिरता उत्पन्न हुई और अंतरराष्ट्रीय व्यापार संतुलन बिगड़ गया। अमेरिका और चीन के बीच व्यापारिक तनाव 2018 से शुरू हुआ, जब अमेरिका ने चीन से आयातित विभिन्न उत्पादों पर भारी टैरिफ लगाए। इसके जवाब में, चीन ने भी अमेरिकी उत्पादों पर टैरिफ बढ़ा दिए। इस व्यापार युद्ध से वैश्विक अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान हुआ। अमेरिकी कृषि उत्पादकों को भारी नुकसान हुआ क्योंकि चीन ने अमेरिकी सोयाबीन और अन्य कृषि उत्पादों का आयात कम कर दिया। इलेक्ट्रॉनिक्स और टेक्नोलॉजी उद्योग प्रभावित हुए, क्योंकि चीन से आयातित कंपोनेंट्स पर शुल्क बढ़ने से उत्पादन लागत बढ़ गई। निवेशकों का विश्वास डगमगाया, जिससे वैश्विक शेयर बाजारों में अस्थिरता बढ़ी। अमेरिका द्वारा यूरोपियन यूनियन (EU) और अन्य सहयोगी देशों पर टैरिफ बढ़ाने से भी वैश्विक व्यापार असंतुलित हुआ। यूरोप ने अमेरिकी स्टील और एल्युमिनियम पर जवाबी शुल्क लगाए, जिससे यूरोप-अमेरिका व्यापार संबंधों में तनाव बढ़ा।

भारत पर प्रभाव

अमेरिका द्वारा भारतीय उत्पादों पर टैरिफ बढ़ाने से भारतीय निर्यातकों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। प्रमुख रूप से स्टील, एल्युमिनियम, कृषि उत्पाद और टेक्सटाइल उद्योग प्रभावित हुए। इसके जवाब में, भारत ने भी कुछ अमेरिकी उत्पादों जैसे बादाम, अखरोट और दालों पर टैरिफ बढ़ा दिए।

टेक्सटाइल और गारमेंट उद्योगः अमेरिका भारतीय वस्त्रों और परिधान का बड़ा आयातक है। टैरिफ बढ़ने से भारतीय उत्पाद महंगे हो गए, जिससे प्रतिस्पर्धा में कमी आई। आईटी और सेवा क्षेत्रः अमेरिका में वीजा नीतियों में बदलाव और टैरिफ बढ़ने से भारतीय आईटी कंपनियों को नुकसान हुआ। कृषि उत्पाद, जैसे कि मसाले, चाय और दालें, अमेरिकी टैरिफ नीतियों से प्रभावित हुए।

विश्व व्यापार संगठन (WTO) की भूमिका

इस टैरिफ युद्ध ने विश्व व्यापार संगठन (WTO) में नीतिगत बहस को जन्म दिया। कई देशों ने अमेरिका की टैरिफ नीतियों को WTO के नियमों का उल्लंघन बताया और शिकायत दर्ज करवाई। अमेरिका और चीन के बीच विवाद निपटाने की चुनौती। व्यापार नीतियों में पारदर्शिता की कमी। सदस्य देशों के बीच संतुलन बनाने की आवश्यकता। WTO की भूमिका इस विवाद के समाधान में महत्वपूर्ण रही, लेकिन बड़े अर्थतंत्रों के बीच तनाव के कारण इस संगठन की प्रभावशीलता पर भी सवाल उठे।

वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला पर प्रभाव

टैरिफ बढ़ने से वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला भी प्रभावित हुई। कई कंपनियों को अपने उत्पादन केंद्रों को स्थानांतरित करने पर विचार करना पड़ा, जिससे नए व्यापारिक गठजोड़ बने। चीन और अमेरिका के बीच व्यापार युद्ध के कारण कई कंपनियों ने अपने मैन्युफैक्चरिंग हब को वियतनाम, भारत और अन्य दक्षिण एशियाई देशों में स्थानांतरित करना शुरू किया।

कंपनियों ने अपने आपूर्ति स्रोतों को विविध किया ताकि एक ही देश पर निर्भरता कम हो। भारत और अन्य देशों ने विदेशी निवेश आकर्षित करने के लिए नई नीतियाँ लागू कीं।

दीर्घकालिक प्रभाव और भविष्य की संभावनाएँ

टैरिफ विवादों से सीख लेते हुए, कई देश अब अपनी व्यापार नीतियों को अधिक संतुलित और बहुपक्षीय सहयोग की ओर बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। एशिया, यूरोप और अमेरिका के बीच नए व्यापार समझौतों पर जोर दिया जा रहा है। ई-कॉमर्स और डिजिटल सेवाओं पर टैरिफ कम करने की दिशा में कदम उठाए जा रहे हैं। पर्यावरण-अनुकूल उत्पादों को प्रोत्साहित करने के लिए टैरिफ नीतियों में सुधार किया जा रहा है।

टैरिफ नीति वैश्विक व्यापार को सीधे प्रभावित करती है। अमेरिका और अन्य देशों के बीच बढ़ते टैरिफ विवादों ने न केवल व्यापारिक संबंधों को प्रभावित किया, बल्कि वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला, उद्योगों और उपभोक्ताओं पर भी प्रभाव डाला। भविष्य में, व्यापारिक विवादों के समाधान और स्थिर वैश्विक व्यापारिक संबंधों के लिए बहुपक्षीय सहयोग और नीति समन्वय आवश्यक होंगे।

अब दिल्ली के नालों में सफाई कर्मचारियों की जगह लेंगी ये मशीनें, मंत्री प्रवेश वर्मा ने किया सफल ट्रायल

दिल्ली सरकार ने सीवर सफाई के लिए एक अत्याधुनिक रिसाइक्लर मशीन का सफल परीक्षण किया है। यह मशीन मुंबई से मंगवाई गई है और इसका इस्तेमाल गुजरात और मुंबई की तर्ज पर किया जाएगा। इस मशीन से सीवर की पूरी तरह से सफाई हो सकेगी और कर्मचारियों को गहरे सीवर में नहीं उतरना पड़ेगा। सरकार का लक्ष्य है कि मानसून के दौरान दिल्ली पूरी तरह से जलभराव से मुक्त हो।

दिल्ली। मानसून से पहले दिल्ली में जलभराव की समस्या से निपटने और सीवर सफाई को आधुनिक तकनीक से जोड़ने के लिए दिल्ली सरकार ने रविवार को ग्रेटर कैलाश में रिसाइक्लर मशीन का सफल ट्रायल किया। यह अत्याधुनिक मशीन मुंबई से मंगवाई गई है।

अब दिल्ली में भी गुजरात और मुंबई की तर्ज पर सीवर सफाई का काम होगा और कर्मचारियों को गहरे सीवर में नहीं उतरना पड़ेगा।

पीडब्ल्यूडी मंत्री प्रवेश सिंह ने रिसाइक्लर मशीन से सफाई कार्य का निरीक्षण करते हुए इसे राजधानी के लिए क्रांतिकारी कदम बताया।

पीडब्ल्यूडी मंत्री ने कहा कि हर मानसून में दिल्ली की सड़कें पानी में डूब जाती हैं। कई बार यह पानी घरों में भी घुस जाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि पिछले 10-20 सालों से सीवर और नालों की सफाई नहीं हो पाई है।

इसके समाधान के लिए हमने बड़ी मशीनें मंगवानी शुरू कर दी हैं। हमारा प्रयास है कि हर विधानसभा में एक ऐसी मशीन हो, जिससे सीवर की पूरी तरह सफाई हो सके। सफाई के बाद सीसीटीवी कैमरों से जांच कर शत-प्रतिशत सफाई सुनिश्चित करेंगे। हमारा लक्ष्य है कि मानसून के दौरान दिल्ली पूरी तरह जलभराव से मुक्त हो।

32 सुपर सकर मशीनों के ऑर्डर दिए गए

पीडब्ल्यूडी मंत्री ने कहा कि हमारी सरकार का प्रयास है कि किसी भी कर्मचारी को सीवर में न उतरना पड़े। इसके लिए देश-दुनिया से जो भी आधुनिक तकनीक की जरूरत होगी, हम लाएंगे। मुंबई में ऐसी 100 मशीनें काम कर रही हैं और गुजरात में भी 30 मशीनें इस्तेमाल में हैं। पिछले सप्ताह ही हमने 32 सुपर सकर मशीनों (वैक्यूम ट्रक) की खरीद के ऑर्डर दिए हैं। दिल्ली सरकार अब इस मशीन को चरणबद्ध तरीके से राजधानी के विभिन्न विधानसभा क्षेत्रों में लागू करने की योजना बना रही है ताकि मानसून से पहले व्यापक सफाई की जा सके। यह पहल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'स्वच्छ भारत मिशन' और आधुनिक शहरी भारत के विजन को साकार करने की दिशा में हमारा ठोस प्रयास है।

भारत गौरव रत्न श्री सम्मान परिषद द्वारा डॉ. विप्लव वर्मा को 'पद्म श्री सम्मान' से नवाजा गया

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली के अशोक होटल में आयोजित एक भव्य समारोह में भारत गौरव रत्न श्री सम्मान परिषद द्वारा देशभर से आए प्रतिभाशाली व्यक्तित्वों को सम्मानित किया गया। इस विशेष अवसर पर हरियाणा के रोहतक से दो बाल्य एवम् शिक्षु रोग विशेषज्ञों को उनके असाधारण योगदान के लिए सम्मानित किया गया। इनमें से प्रमुख नाम था डॉ. विप्लव वर्मा, जिन्हें 'पद्म श्री सम्मान' से नवाजा गया।

समारोह में मुख्य अतिथि मीनाक्षी लेखी, पूर्व विदेश एवं संस्कृति राज्य मंत्री, हरियाणा सरकार डॉ. आलोक कुमार मिश्रा, संयुक्त भारतीय विश्वविद्यालय संघ के अध्यक्ष, और किरण सेठी, वरिष्ठ दिल्ली पुलिस अधिकारी (लेडी सिंघम) ने डॉ. विप्लव वर्मा को 'भारत गौरव रत्न श्री सम्मान' और 'पद्म श्री सम्मान' प्रदान किया।

डॉ. विप्लव वर्मा का असाधारण योगदान

डॉ. विप्लव वर्मा को यह सम्मान चिकित्सा विज्ञान और बाल रोग विशेषज्ञ के रूप में उनके असाधारण योगदान के लिए दिया गया है। उनकी सेवाओं में विशेष रूप से निम्नलिखित उल्लेखनीय कार्य हैं:

आपदा के समय स्वैच्छिक सेवाः 2014 में श्रीनगर बाढ़ के दौरान डॉ. विप्लव वर्मा ने स्वैच्छिक रूप से चिकित्सा टीम का हिस्सा बनकर कश्मीर के हंदवाड़ा जिला अस्पताल में कार्य किया। वहां उन्होंने निष्क्रिय पड़े एनआईसीयू (नवजात शिशु देखभाल इकाई) को संचालित किया और कई नवजात शिशुओं का इलाज किया, जिसके लिए उन्हें डॉ. सलीन उर रहमान द्वारा प्रशंसा पुरस्कार दिया गया।

केदारनाथ आपदा में कार्यः 2013 में केदारनाथ आपदा के दौरान, डॉ. वर्मा ने रूद्रप्रयाग जिला अस्पताल में 25 दिनों तक आपदा प्रबंधन टीम के सदस्य के रूप में काम किया और संकट की स्थिति में मरीजों की सहायता की।

कोविड-19 महामारी में योगदानः कोविड-19 महामारी के दौरान, डॉ. विप्लव वर्मा ने अपने कर्मचारियों के साथ मिलकर 24x7 अस्पताल का संचालन किया। उन्होंने ना केवल अस्पताल की स्वच्छता का ध्यान रखा बल्कि महामारी के दौरान कोविड पॉजिटिव रोगियों को मुफ्त ऑनलाइन परामर्श भी दिया। इसके अलावा, पुलिस योद्धाओं और स्वच्छता कार्यकर्ताओं को मास्क, सैनिटाइज़र और अन्य आवश्यक सामग्री वितरित की।

स्वास्थ्य सेवाओं में निरंतर योगदानः डॉ. वर्मा वर्तमान में केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए चिकित्सा सेवाएं प्रदान कर रहे हैं और भारतीय सेना, नौसेना तथा वायुसेना के कर्मियों को भी चिकित्सा सेवा देने में योगदान दे रहे हैं।

समाजसेवा और मरीजों के प्रति समर्पण

डॉ. विप्लव वर्मा ने हमेशा चिकित्सा व्यवसाय को मानवता की सेवा के रूप में देखा है। उन्होंने किसी भी फार्मास्युटिकल उद्योग या अन्य वाणिज्यिक उत्पादों से किसी प्रकार का लाभ या प्रलोभन नहीं लिया है। उनका यह सिद्धांत रहा है कि इलाज सस्ता और गुणवत्तापूर्ण हो, जिससे ज्यादा से ज्यादा गरीब और जरूरतमंद मरीजों को लाभ मिल सके।

इस सम्मान के साथ ही डॉ. विप्लव वर्मा को उनकी चिकित्सा सेवाओं और मानवता के प्रति समर्पण के लिए कई अन्य पुरस्कार भी मिल चुके हैं, जिनमें कोरोना योद्धा के रूप में उन्हें पुलिस अधीक्षक रोहतक द्वारा सम्मानित किया गया।

यह सम्मान डॉ. विप्लव वर्मा के जीवन भर की निष्ठा, सेवा और चिकित्सा के प्रति उनके योगदान की सच्ची सराहना है।

(विश्व स्वास्थ्य दिवस 7 अप्रैल) आओ बनाएं एक स्वस्थ संसार

डॉ० घनश्याम बादल

खानपान की ग़लत आदतें, फास्ट फूड की बढ़ती लत, भोजन में लगातार बढ़ती रसायन एवं कीटनाशकों की मात्रा, ज़मीन में निरंतर बढ़ते खाद एवं रसायनों के प्रयोग से उसका ज़हरीला हो जाना, भौतिक प्रगति की लालसा के चलते लगातार बढ़ते प्रदूषण एवं अन्य कारणों से दुनिया भर में करोड़ों लोगों का स्वास्थ्य ख़तरे में है।रोज नई नई बीमारियाँ पैदा हो रही हैं।

पेट्रोल, डीज़ल, केरोसिन एवं कारखाने तथा वाहनों में प्रयोग होने वाले विभिन्न इंधनों से एक ओर जलवायु संकट बढ़ रहा है वहीं स्वच्छ हवा में सांस लेने के हमारे अधिकार को भी छीन रहा है, वायु प्रदूषण हर पांच सेकंड में एक जीवन का लील रहा है। डब्ल्यूएचओ का निष्कर्ष हैं कि अधिकांश देशों की बड़ी आबादी को समुचित स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त नहीं मिल रहीं है।

रसायनों एवं प्रदूषण ने न हवा शुद्ध छोड़ी है और न पानी, पहाड़ों की ऊंचाई से लेकर, समुद्र व ज़मीन की गहराइयों तक उनकी उपस्थिति खतरनाक सिद्ध हो रही है। आंकड़े कहते हैं कि कम से कम 4.5 बिलियन आवश्यक स्वास्थ्य सेवाओं से आज भी वंचित है।

ऐसी ही स्वास्थ्य से संबंधित चुनौतियों से निपटने के लिए साल 7 अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस के रूप में मनाया जाता है। विश्व स्वास्थ्य दिवस 2025 की थीम सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज प्राप्त करने की प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है, इसका लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी व्यक्तियों और समुदायों को वित्तीय कठिनाई का सामना किए बिना उनकी जरूरत की स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच हो। यह स्वास्थ्य समानता, पहुँच और गुणवत्ता में अंतर को पाटने के लिए वैश्विक प्रयास का आह्वान करता है।

विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य दुनिया भर के लोगों के अच्छे स्वास्थ्य के अधिकार की रक्षा करना और उन्हें स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य एवं दुनिया को अपनी सेहत के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य के साथ 1950 से 7 अप्रैल के दिन दुनिया भर में विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाना शुरू किया गया था।

स्वास्थ्य क्या है ?

आमतौर पर माना जाता है कि जो व्यक्ति बीमार नहीं है वह स्वस्थ है परंतु स्वास्थ्य सिर्फ बीमारियों के न होने का नाम नही है। विश्व स्वास्थ्य संगठनर के अनुसार स्वास्थ्य "शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक अध्यात्मिक और सामाजिक दृष्टि से सही होने की संतुलित स्थिति का नाम स्वास्थ्य है। हमें बहुमुखी स्वास्थ्य के बारें में नई सोच से संबंधित जानकारी अवश्य होनी चाहिए। स्वास्थ्य को मुख्य रूप से शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य में बांटा जाता सकता है।

शारीरिक स्वास्थ्य -

शारीरिक स्वास्थ्य शरीर की उस स्थिति को दर्शाता है जब शरीर के आंतरिक और बाह्य अंग, ऊतक व कोशिकाएं ठीक से काम करते हैं। इसमें शरीर की संरचना, विकास, कार्यप्रणाली और रख रखाव शामिल होता है। जब शरीर के सभी अंग सही तरह से काम करते हैं जैसे सुनाई देना, दौड़ना, चलना, दिखाई देना व अन्य सामान्य गतिविधियां। अच्छे शारीरिक स्वास्थ्य के मापदंडों में संतुलित आहार की आदतें, सही श्वास का क्रम गहरी नींद। बड़ी आंत की नियमित गतिविधि व संतुलित शारीरिक गतिविधियां नाड़ी स्पंदन, ब्लडप्रेशर, शरीर का वजन व व्यायाम, सहने की क्षमता आदि सब कुछ व्यक्ति के ऊंचाई, आयु व लिंग के लिए सामान्य।

नसीब हों 'एक देश, एक जैसी' हेल्थ सुविधाएं?

डॉ. रमेश ठाकुर

दुनिया सालाना 7 अप्रैल को 'विश्व स्वास्थ्य दिवस' इसलिए मनाती है ताकि लोग स्वास्थ्य के प्रति सतर्क और गंभीर हो सकें। बदलते लाइफस्टाइल में लोगों का शरीर नाना प्रकार के खतरनाक वायरसों और अजन्मी बीमारियां से घिर चुका है। इसके अलावा पारिवारिक जिम्मेदारियां का बोझ, भविष्य की चिंताएं और बच्चों के कैरियर को संभालने की आपाधापी में इंसानों ने अपने स्वास्थ्य की देखरेख को बहुत पीछे छोड़ दिया है। इसे लापरवाही का नतीजा कहें या कुछ और? नौजवानों का हंसते, खेलते नाचते-गाते के दौरान स्टेजों पर दम तोड़ने वाली तस्वीरे सोशल मीडिया पर लगातार देख ही रहे हैं। असमय मौतों का डब्ल्यूएचओ का मौजूदा आंकड़ा रोंगटे खड़े करता है। 25-55 के उम्र के बीच असमय मरने वालों की संख्या पूरी कर चुके बुजुर्गों से कहीं ज्यादा आंकी गई है। इसपर विभिन्न वैश्विक चिकित्सीय रिपोर्ट 'एक ही बात, एक सुर' में कहती हैं कि लोग अपने शरीर की देखरेख को लेकर भंयकर लापरवाह हुए हैं। अपने पर ध्यान देना होगा, वरना इन आंकड़ों में यूं ही बढोतरी होती रहेगी। इन गंभीर स्थितियों को देखकर ही 'विश्व स्वास्थ्य दिवस' जनमानस को स्वास्थ्य को लेकर सतर्क करता है।

इतना तय है, अगर इंसान अपनी हेल्थ को बेहतर करने के लिए अच्छी दैनिक आदतें डाल लें, तो अजन्मी बीमारी से काफी हद तक खुद को बचा सकता है। क्योंकि इस तरह की जागरूकता के लिए तमाम देशी और विदेशी स्वास्थ्य संस्था हमारे आसपास सक्रिय हैं। यूनिसेफ और डब्ल्यूएचओ के अलावा 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' संसार के देशों के लिए स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं पर आपसी सहयोग एवं मानक विकसित करने में प्रमुख भूमिका निभाती हैं। स्वास्थ्य संगठन में 193 देश मेंबर और दो संबद्ध सदस्य हैं। ये संयुक्त राष्ट्र संघ की एक अनुषांगिक स्वास्थ्य इकाई है जिसकी स्थापना 7 अप्रैल 1948 में हुई थी। इसके अलावा भारत मेडिकल टूरिज्म के लिहाज से समूची दुनिया में हमेशा से विख्यात ही रहा है? फिर बात चाहें, उच्च गुणवत्ता युक्त देशी-दवाओं की हो, ऋषि-मुनियों की फार्मेसी, प्राचीन चिकित्सा प्रद्वति, सस्ती वैक्सीन व जड़ी-बूटियों का हिमालीय भंडार? सब कुछ हमारे यहां मौजूद है। संसार वाकिफ है, भारत से तमाम गरीब देशों की चिकित्सा जरूरतें पूरी होती रही हैं।

हालांकि दुख की बात ये है कि विगत कुछ दशकों से प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति और दवाओं का प्रचार-प्रसार कुछ धीमा पड़ा है, जिसका खामियाजा भुगत भी रहे हैं। आधुनिक दौर में चिकित्सा के तौर-तरीके, रंग-रूप और मायने कैसे और किस तरह से बदले हैं। सभी जानते हैं, बताने की जरूरत नहीं? इन बदलावों के सभी भुक्तभोगी हैं। कोई ऐसा नहीं जिसका चिकित्सा चुनौतियों से कभी ना कभी सामना न पड़ा हो? महंगी दवाईयों और चिकित्सा सुविधाओं से कितनों को अपनी जाने गवानी पड़ती है, ये भी सब जानते हैं। दवाइयों की कीमत आसमान छूती हैं जो एक गरीब इंसान के लिए किसी सपने से कम नहीं? दरअसल इसी असमानता को मिटाने की अब जरूरत है। फ्री चिकित्सा-सुविधाओं की कागजी बातें खूब होती हैं। पर, सच्चाई हकीकत से कोसों दूर रहती हैं। फ्री-इलाज के नाम पर तो हेल्थ कार्ड धारक अस्पतालों से रपटा तक दिए जाते हैं।

गौरतलब है, स्वास्थ्य मामलों की समीक्षा और संपूर्ण चिकित्सा तंत्र को ऑडिट करने की अब सख्त जरूरत है। गगनचुंबी इमारत वाले फाइव स्टार होटल नुमा अस्पताल हेल्थ के नाम पर व्यवसायी बने हुए है। लेकिन इंसानियत कहती है कि इस पेशे को धंधा न समझा जाए। क्योंकि जनमानस आज भी डॉक्टर को भगवान का दर्जा देते हैं। ये दर्जा सदियों से बना है और आगे भी यथावत रहे। इसी में सभी की भलाई है। स्वास्थ्य सेवाओं में बदलाव और सुधार की दरकार बहुत पहले से महसूस हो रही है। केंद्र व राज्य हुकूमतों को प्रत्येक स्तर पर स्वास्थ्य को प्राथमिकताओं में शुमार करना चाहिए और सबसे जरूरी बात प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में रिक्त पदों को भरना चाहिए। नए अस्पताल खोलने की जरूरत तो है ही। जहां प्रिवेंटिव व प्रोमोटिवे हेल्थ सुविधाएं आसानी से जरूरतमंद मरीजों को मिले। बिडंवना देखिए, छोटे से छोटे ऑपरेशन भी ग्रामीण अस्पतालों में नहीं किए जाते, जिसके लिए मरीजों को दूर शहरों में भागना पड़ता है।

दुख की बात ये है कि विगत कुछ दशकों से प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति और दवाओं का प्रचार-प्रसार कुछ धीमा पड़ा है, जिसका खामियाजा भुगत भी रहे हैं। आधुनिक दौर में चिकित्सा के तौर-तरीके, रंग-रूप और मायने कैसे और किस तरह से बदले हैं। सभी जानते हैं, बताने की जरूरत नहीं? इन बदलावों के सभी भुक्तभोगी हैं। कोई ऐसा नहीं जिसका चिकित्सा चुनौतियों से कभी ना कभी सामना न पड़ा हो?

हेल्थ सिस्टम में भारतीय चिकित्सकों, शोधकर्ताओं व इससे जुड़ी वैज्ञानिक नामचीन हस्तियों ने अभूतपुर्व उपलब्धियां प्राप्त की हैं। आजादी के बाद तो जैसे क्रांति ही आई। दो दशक पहले तक इस क्रांति ने सीमित हारी-बीमारियों पर चौतरफा नियंत्रण रखा। पोलियो से लेकर, खसरा, रैबीज, दिमागी बुखार तक हर तरह के मौसमी वायरसों पर काबू रखा। लेकिन मौजूदा समय में जितनी चुनौतियां स्वास्थ्य तंत्र के समझ मुंह खोले खड़ी हैं, उतनी पहले कभी नहीं रहीं। नित पनपती नई-नई किस्म की बीमारियां और जानलेवा वायरस ने ना सिर्फ हिंदुस्तान में, बल्कि समूचे संसार को हिलाया हुआ है। कोरोना महामारी का डरावना सच हमेशा हमेशा परेशान करता रहेगा। ये ऐसा दौर था, जहां स्वास्थ्य सिस्टम ने भी घुटने टेक दिए थे।

अगले 30 सालों में बांग्लादेश में कोई हिंदू नहीं बचेगा

डॉ. बालमुकुंद पांडेय

भारत का पूर्वी देश बांग्लादेश 1971 में बना था। तत्कालीन नवोदित राष्ट्र (विकासशील राज्य) के रूप में बांग्लादेश ' धर्मनिरपेक्ष' राज्य (देश) था लेकिन 1975 में तत्कालीन बांग्लादेश की सरकार(सरकार पर कट्टरपंथियों का प्रत्यक्ष एवं सेना का भी प्रभुत्व था) ने ' धर्मनिरपेक्ष' शब्द को विलोपित करके उसमें कुरान की आयतों को सम्मिलित किया . इसी के साथ यह' इस्लामिक देश' बन गया। बांग्लादेश में इस्लामिक अतिवादी तत्व ,चरमपंथी एवं वहां सेना एवं अराजक तत्वों द्वारा प्रायोजित राज्येत्तर कर्ता (Non state actor) प्रत्येक दिन हिंदुओं सहित अल्पसंख्यकों पर अत्याचार एवं क्रूर यातनाएं दे रहे हैं । ढाका विश्वविद्यालय के प्रोफेसर अब्दुल बरकत जी की हालिया प्रतिवेदन के अनुसार, विगत चार दशकों में 230612 लोगों ने पलायन किया है, उसमें ज्यादातर हिंदू अल्पसंख्यक हैं। प्रतिवेदन में यह रहस्योद्घाटन किया गया है कि पलायन की यही रफ्तार रही तो अगले 30 सालों में बांग्लादेश में कोई हिंदू नहीं बचेगा ! इसके प्रति उत्तरदाई कारण धार्मिक उन्माद यातना एवं दहशतगर्दी की घटनाएं हैं

बांग्लादेश के गठन के समय 1971 में बड़े पैमाने पर हिंदुओं का नरसंहार हुआ था। आधिकारिक प्रतिवेदन के अनुसार वह मानवीय इतिहास एवं सभ्य नागरिक समाज का भयावह एवं डरावना समय था। इस दौरान व्यक्ति अपने जीवन, संपत्ति एवं सुरक्षा (प्राकृतिक अधिकार) के लिए प्राकृतिक अवस्था की स्थिति में थे। तत्कालीन विस्थापन के समय लगभग - लगभग 30 लाख लोगों का नरसंहार हुआ था और लगभग - लगभग 20 लाख महिलाओं के साथ यौन हिंसा और अमानवीय व्यवहार की घटना घटित हुई थीं । इस अमानवीय एवं निर्शंस व्यवहार के प्रति पाकिस्तान सरकार की चुप्पी घटना के प्रति संवेदनहीनता का प्रमाण था। न्यायमूर्ति रहमान के नेतृत्व में 1972 में एक तथ्यन्वेषक समिति(फैक्ट फाइंडिंग कमेटी) बनाई गई थी. इस कमेटी की एक प्रति पाकिस्तान के तत्कालीन प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो को सौंपी गई थी जिसे उन्होंने कूड़ेदान में फेंकवा दिया था ।(21 अगस्त, 2000 को इंडिया टुडे पृष्ठ 8 से 10 तक)।

इस अमानवीय नरसंहार के पश्चात बांग्लादेश में ' धर्मनिरपेक्षता' का वातावरण बना था। कट्टरपंथियों की धर्मजनित एवं दबावजनित राजनीति के कारण 1977 में संविधान से ' धर्मनिरपेक्षता' को संशोधित कर के 'इस्लामिक राज्य' को प्राथमिकता प्रदान किया गया था । 1988 में इस्लाम धर्म बांग्लादेश का मौलिक धर्म एवं संवैधानिक धर्म बन चुका था।

कट्टरपंथियों, इस्लामवादियों और रजाकारों द्वारा हिंदुओं और बौद्ध अल्पसंख्यकों पर अत्याचार ,प्रताड़ना और उत्पीड़न किया जाता हैं । 2016 में इस निंदा के आरोपों में हिंसा में 15 मंदिरों को काफी हानि पहुंचाया गया था। 2017 में BJHM के प्रतिवेदन के अनुसार ,हिंदू समुदाय से कम से कम 170 लोग मारे गए थे और 31 लोगों को जबरन पलायित किया गया था । 782 हिंदुओं को देश छोड़ने के लिए बाध्य किया गया था, 23 लोगों को अन्य धर्म में जबरन बनाकर धर्मांतरित किया गया था। इस दौरान 25 हिंदू लड़कियों और महिलाओं के साथ बलात्कार किया गया था। 2017 में हिंदू समुदाय के साथ हुए अत्याचारों की संख्या 6474 थी। 2019 के आम चुनाव के दौरान मात्र ठाकुरगांव में हिंदू परिवारों के आठ घरों में आग लगा दी गई थी।

बांग्लादेश में भारत विरोधी वातावरण तैयार किया जा रहा हैं । वहां पर हिंदुओं एवं अन्य अल्पसंख्यकों पर हमले की घटनाओं पर भारत की तमाम चिंताओं के बावजूद कार्यवाहक सरकार गंभीरता नहीं दिख रही हैं । एक अन्य चिंता यह है कि बांग्लादेश को कट्टरपंथी, जिहादी एवं दहशतगर्द ताकतों को सहयोग, समर्थन और संरक्षण दिया जा रहा हैं । अंतरिम सह कार्यवाहक सरकार के मुखिया की भूमिका में मोहम्मद यूनुस ने कई कट्टरपंथी और कट्टरपंथी संगठनों से प्रतिबंध हटाए हैं और आतंकी गतिविधियों में संलिप्त नेताओं पर से प्रतिबंध भी हटाए हैं और उनको कारागार से रिहा भी किया हैं । वर्तमान में बांग्लादेश की अंतरिम सरकार और पाकिस्तान सरकार के बीच में मधुर संबंध है और बांग्लादेश में पाकिस्तान का प्रभाव भी बहुत मात्रा में बढ़ रहा है।

बांग्लादेश में हिंदू विरोध को भारत विरोध बनाने की कोशिश की जा रही हैं । बांग्लादेश की वर्तमान हिंदू विरोध के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका एवं पाकिस्तान के ₹डीप स्टेट₹ की भूमिका को भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता । बांग्लादेश में हिंदुओं को गरिमा एवं शांति के साथ जीवन जीने के लिए भारत सरकार के साथ-साथ सभी अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं और पूरी दुनिया में रहने वाले हिंदुओं को आगे आना चाहिए। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निर्णय लेने वाली सर्वोच्च निकाय अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा ने बांग्लादेश में हो रहे हिंदुओं पर अत्याचारों पर चिंता जताई हैं और भविष्य में इस विषय पर आवश्यक प्रयासों की रूपरेखा तय की गई है ।

बांग्लादेश की 2022 की जनगणना के अनुसार, बांग्लादेश में सर्वाधिक आबादी बांग्लादेशी मुसलमानों की 91.04% हैं. इसके पश्चात हिंदुओं की संख्या 7.95 % हैं । बांग्लादेश में सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व हैं । वैश्विक स्तर पर बांग्लादेश स्वतंत्रता के पश्चात से कुल प्रजनन दर (TFR) दो तिहाई से भी कम हैं । बांग्लादेश में वर्तमान TFR 2.3 है, जिसे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्थापन स्तर की ओर बढ़नी के लिए सर्वाधिक उपयुक्त माना जाता है।

बांग्लादेश के संदर्भ में निम्न कदम उठाने की आवश्यकता हैः

1. हिंदुओं पर हो रहे अत्याचारों के लिए एक शांति और अहिंसक जन आंदोलन की आवश्यकता हैं. बांग्लादेश में हिंदुओं को शांति और गरिमा के साथ जीवन जीने के लिए भारत सरकार के साथ-साथ सभी वैश्विक संस्थाओं और पूरी दुनिया के हिंदुओं को एक स्वर में आवाज उठाने की आवश्यकता हैं. भारत को बांग्लादेश सरकार से सुनिश्चित करना चाहिए कि बांग्लादेश के हिंदुओं एवं अल्पसंख्यकों की रक्षा हों और वहां पर सक्रिय भारत विरोधी तत्वों पर संवैधानिक नियंत्रण हो। भारत हिंदुओं सहित अन्य अल्पसंख्यकों की सुरक्षा के लिए बांग्लादेश की सरकार से बात करें. हिंदू, हिंदुत्व और हिंदू संस्कृति के प्रति सजग पहल करने की आवश्यकता है।

डॉ. बालमुकुंद पांडेय
राष्ट्रीय संगठन सचिव, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना समिति, केशवकुंज

"यह कितना हिम्मत का काम है! 48 साल से खुद लूटते हैं और खुद ही फरियाद करते हैं और जनता से सहानुभूति प्राप्त करने की कोशिश करते हैं " --- राष्ट्रवादी चिंतक राजेश खुराना

ऐसे कपटी नेताओं और पार्टियों की असलियत को जनता को समझना होगा, ताकि भविष्य में इस तरह की लूट और धोखाधड़ी को रोका जा सके।

---- *राष्ट्रवादी चिंतक राजेश खुराना*

आगरा, संजय सागर सिंह। राष्ट्रवादी सामाजिक चिंतक वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना ने तंज कसते हुए कहा कि पिछले 48 सालों से कुछ नेता न केवल खुद ही लूटते हैं, बल्कि वही नेता अपनी लूट की फरियाद भी करते हैं। उन्होंने कहा, ₹यह कितना हिम्मत का काम है ! ये लोग लूट के रास्ते खुद खोलते हैं, फिर उसी लूट का शोर मचाते हैं, और जनता से सहानुभूति प्राप्त करने की कोशिश करते हैं।₹

उन्होंने आरोप लगाया कि ऐसे लोग सत्ता में रहते हुए अपनी निजी हितों को साधने में लगे रहते हैं, जबकि वास्तविक मुद्दों पर वे हमेशा चुप रहते हैं। उन्होंने आगे कहा, ₹यह न केवल असंवेदनशीलता है, बल्कि यह देश के संसाधनों का गम्भीर उल्लंघन भी है। ऐसे कपटी नेताओं और पार्टियों को जनता से कोई सहानुभूति नहीं मिलनी चाहिए, क्योंकि यह केवल उनकी राजनीति और खुद के फायदे के लिए है।"

आखिर में, उन्होंने इस स्थिति की कड़ी निंदा करते हुए कहा कि ऐसे कपटी नेताओं और उनकी पार्टियों की असलियत को जनता को समझना होगा, ताकि भविष्य में इस तरह की लूट, कपट मनमानी और धोखाधड़ी को रोका जा सके।

'संत' समाज का प्राण हैं

डॉ. नीरज भारद्वाज

साधु, महात्मा, संत, ऋषि, मुनि आदि सभी शब्द समाज कल्याण के लिए हैं। इन सभी ने अपने जीवन में कठोर व्रत धारण कर स्वयं को परमपिता परमेश्वर की भक्ति में अपने को लगाया है। साथ ही समाज का उद्धार कर समाज को नई दिशा और ऊर्जा दी है। इस वर्ष प्रयागराज में हुए महाकुंभ में कितने ही दिव्य संतों के दर्शन लोगों ने किए और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। दैनिक जीवन में भी संत अपनी वाणी से लोगों को प्रेरित करते रहते हैं। समाज और लोक कल्याण की भावना से भरा संतों का मन और हृदय हर समय सृष्टि के उत्थान में लगा रहता है। संतों की ऊर्जा को सामान्य जीव समझने में सक्षम नहीं है। संतो के जीवन, लेखन, वचनों आदि से कितने ही पृष्ठ भरे हुए हैं। संत वाणी के एक-एक शब्द की व्याख्या करने में सारा जीवन निकल सकता है।

संत ब्रह्म का ही स्वरुप हैं। संतों के विषय में हर कालखंड में कितने ही कवियों, साहित्यकारों ने लिखा और गाया है। स्वयं संत भी हर एक कालखंड में आकर अपनी वाणी से समाज को जागृत करते रहे हैं और आगे भी करते रहेंगे। जिसने भी संतों को गाया-पढ़ा-लिखा है वह भी संत ही हो गया, ऐसा भी कहा जा सकता है। रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास लिखते हैं- हरि अनंत हरि कथा अनंता। कहहि सुनहिं बहु विधि संता।। अर्थात भगवान की कथा अनंत है, यह संतो के द्वारा ही सुनी, कही और गायी गई है। रामचरितमानस के बालकांड में ही गोस्वामी तुलसीदास लिखते हैं कि, बंदऊँ संत समान चित हित अनहित नहि कोई। अर्थात मैं संतों को प्रणाम करता हूँ, जिनके चित्त में समता है, जिनका न कोई मित्र है और न शत्रु। अष्टछाप के भक्त कवि कुंभनदास लिखते हैं कि, संतन को कहां सीकरी सों काम। अर्थात संतों को राज दरबारों या भौतिक सुखों से कोई लेना देना नहीं है। यह तो भगवान का भजन करने में लगे रहते हैं।

दूसरी ओर देखें तो भौतिक वस्तुओं के पीछे व्यक्ति जितना भागते हैं, वह उतनी ही दूर होती जाती है या उन्हें पाने की इच्छा बढ़ती ही जाती हैं। जब हम किसी संत के पीछे दौड़ते हैं या चलते हैं तो वह भौतिक वस्तुओं से दूर आध्यात्मिक शक्तियों और ज्ञान से जोड़ते चले जाते हैं। संत जीवन में हमेशा सत्य के मार्ग पर चलने का उपदेश देते हैं। संत का जीवन आत्मज्ञान से भरा हुआ है, वह सच्चाई का ज्ञान समाज को करते हैं। हनुमान चालीसा में लिखा है, साधु संत के तुम रखवारे, असुर निकंदन राम दुलारे। अर्थात हनुमान जी साधु, संतों की रक्षा करते हैं और दुष्टों का नाश करते हैं। संत ईश्वर के प्रति समर्पित हैं। ईश्वर में पूर्ण विश्वास रखते हैं और जीव को भी उसके प्रति समर्पित कर देते हैं। संत का जीवन सादगी से भरा है, वह सांसारिक सुख-सुविधाओं से दूर समाज को नया जीवन देते हैं।

संत शब्द का अर्थ है कि एक ऐसा व्यक्ति जो सत्य के मार्ग पर चलता है, आत्मज्ञानी होता है। संत समाज के लिए एक प्रेरणा स्रोत होते हैं। वे लोगों को सत्य, प्रेम और करुणा का मार्ग दिखाते हैं। संतों की शिक्षाएं लोगों को एक बेहतर व्यक्ति बनने में मदद करती हैं। कहा भी गया है, संत मिलन को जाइये, तज माया अभिमान। ज्यों ज्यों पग आगे धरे कोटि यज्ञ समान।। अर्थात संत से मिलने के लिए चलना भी यज्ञ के समान है। जीवन में कोई साथ दे या ना दे, संत वचन हमेशा साथ देते हैं। संतों की वाणी जीवन को बदल देती है। भारतवर्ष की इस दिव्य भूमि और संतों को बार-बार प्रणाम है। संत देश-दुनिया और इस सृष्टि का प्राण हैं।

व्यंग्य : नरसंहार का विज्ञान

" नरसंहार पर अजबे चुप्पी है भाई।" ....चाय का प्याला मुँह में सटाते हुए त्रिलोचन के ऐसा कहते ही गबरू बोल पड़ा कि जब अपनी सरकार हो ...और अपने लोग की हत्या हुई है तो बोलना मना है।..... क्योंकि बोलने से अपनी सरकार की बदनामी होती है और राज्य की छवि खराब होती है फिर त्रिलोचन चाय की अंतिम घूंट सुड़कते हुए बिफर गया----"मीडिया को भी सांप सूंघ गया है। भारी भरकम विज्ञापन की राशि एवं राज्यसभा की यात्रा की गारंटी हो तो मुँह तो बन्द करना ही पड़ेगा"

.....इसी बीच मुँह में पान लिए गोल मुँह बनाते हुए चमरू ने कहा कि पिछले राज में केवल दो हत्या होने पर राज्य के सभी अखबार सभी संस्करणों में मुख्य पृष्ठ पर न्यूज़ बनाकर पेश करते थे, उससे राज्य की काफी छवि खराब हुई थी लेकिन अब उस गलती को न दुहराकर अखबार वाले तो राज्य का हित कर रहे हैं। .....मीडिया के लिए इससे बढ़िया कोई सरकार नहीं हो सकती। ...मीडिया घराने की सम्पति जितना सतर सालों में नहीं बढ़ी उससे कई गुना छह वर्षों में बढ़ी है।

..... बगल में खड़े सुदर्शन बोल पड़े कि देखिए भाई नरसंहारों का अपना विज्ञान है। ...किसने मारा,.....किसको मारा और किसका शासन,,,,,,,आदि पहलू पर विचार करने के बाद ही उसकी प्रवृति तय होती है। पहले पता कर लीजिए, तब बोलिए।। यह सुनकर सब लोग चौंक गए और हाथ मलते कुछ मन में बड़बड़ाते हुए चलते बने।।

अब्जुज कुमार

स्वास्थ्य का स्वर्णयुग कब आएगा?

उमेश कुमार साहू

हर साल 7 अप्रैल को पूरी दुनिया में विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाया जाता है। यह सिर्फ एक तारीख नहीं बल्कि एक अलार्म है, एक चेतावनी कि क्या वाकई हम स्वस्थ हैं? क्या चिकित्सा विज्ञान की असीम प्रगति के बावजूद हम सही मायनों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हो पाए हैं? या फिर हम केवल बीमारियों से लड़ने में ही व्यस्त हैं? आज की आधुनिक दुनिया में स्वास्थ्य एक लक्ज़री बनता जा रहा है। ताज़ुब की बात यह है कि जितनी अधिक स्वास्थ्य सुविधाएँ बढ़ रही हैं, उतनी ही तेजी से बीमारियों की संख्या भी बढ़ रही है। सवाल यह उठता है कि क्या हमने स्वास्थ्य को समझने में कहीं गलती कर दी है?

स्वास्थ्य: केवल रोगमुक्ति नहीं, सम्पूर्ण समृद्धि है

स्वास्थ्य का अर्थ केवल बीमारियों से छुटकारा पाना नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक और सामाजिक समृद्धि है। लेकिन क्या हम वास्तव में इस स्थिति में हैं? तनाव, प्रदूषण, असंतुलित जीवनशैली, और बढ़ते संक्रमण हमारे स्वास्थ्य को हर दिन चुनौती दे रहे हैं। हम सब कुछ हासिल करने की दौड़ में लगे हुए हैं, लेकिन क्या हमने अपनी सेहत को प्राथमिकता दी है?

आधुनिकता: वरदान या अभिशाप?

आज तकनीक ने हमें कई सुविधाएँ दी हैं, लेकिन इसी तकनीक ने हमारे स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव भी डाला है। हमारे खान-पान से लेकर हमारी दिनचर्या तक, सब कुछ बदल चुका है। शुद्ध भोजन की कमी: पहले लोग जैविक और प्राकृतिक भोजन करते थे, लेकिन आज प्रोसेस्ड फूड और केमिकल्स से भरे आहार ने हमें अंदर से कमजोर बना दिया है।

बढ़ती मानसिक समस्याएँ: तकनीक ने भले ही हमें जोड़ा हो, लेकिन यह हमें अंदर से तोड़ भी रही है। तनाव, डिप्रेशन और मानसिक थकावट आज सामान्य हो गए हैं।

शारीरिक गतिविधियों की कमी: पहले लोग शारीरिक रूप से अधिक सक्रिय रहते थे, लेकिन आज की व्यस्त दिनचर्या और डिजिटल लाइफस्टाइल ने हमारी गतिशीलता को कम कर दिया है।

स्वास्थ्य क्रांति कब आएगी?

हर साल विश्व स्वास्थ्य दिवस पर हम जागरूकता फैलाने की बातें करते हैं, लेकिन क्या वास्तव में इससे कोई बदलाव आता है? नहीं! बदलाव तब आएगा जब हम व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से ठोस कदम उठाएँगे।

भोजन में शुद्धता: हमें अपने भोजन को प्राकृतिक और पोषक तत्वों से भरपूर बनाना होगा। संयुक्त राष्ट्र ने भी माना है कि पोषण ही स्वास्थ्य की पहली सीढ़ी है।

मानसिक स्वास्थ्य को महत्व दें: मानसिक स्वास्थ्य को लेकर समाज में फैले भ्रम को खत्म करना होगा। मेडिटेशन, प्रकृति से जुड़ाव, और डिजिटल डिटॉक्स से मानसिक संतुलन बनाए रखना ज़रूरी है।

व्यायाम और दिनचर्या: योग, एक्सरसाइज़ और ध्यान को अपनी रोज़मर्रा की आदत में शामिल करें। एक छोटा सा बदलाव भी लंबे समय में बड़ा प्रभाव डाल सकता है।

सरकार और समाज की भूमिका: स्वास्थ्य सुविधाएँ सिर्फ शहरों तक सीमित न रहें, बल्कि गाँवों और दूरदराज के इलाकों तक पहुँचे। सरकारों को स्वास्थ्य क्षेत्र में निवेश बढ़ाना होगा, ताकि हर व्यक्ति को बेहतर चिकित्सा सेवाएँ मिल सकें।

अब और इंतज़ार नहीं!

विश्व स्वास्थ्य दिवस केवल एक औपचारिकता नहीं, बल्कि आत्मविश्लेषण का दिन है। अगर हम आज अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता नहीं देंगे, तो कल यह एक महंगा सौदा बन जाएगा। अब समय आ गया है कि हम अपने स्वास्थ्य के प्रति गंभीर हों।

"डॉ. बाबा साहब के संविधान में वक्फ बोर्ड कानून और धारा 370 कभी थे ही नहीं" --- एडवोकेट अरविन्द पुष्कर

देश विरोधी पार्टी ने सिर्फ 19% वोटों को खुश करने के लिए इन विवादित प्रावधानों को जबरदस्ती लागू किया ---- एडवोकेट अरविन्द पुष्कर

आज देश को इन अव्यवस्थित और राष्ट्रविरोधी प्रावधानों से मुक्त करने की जरूरत है, ताकि देश में समरसता और शांति का माहौल बने।

आगरा, संजय सागर सिंह। वरिष्ठ समाजसेवी एडवोकेट अरविन्द पुष्कर ने हाल ही में वक्फ बोर्ड कानून और धारा 370 पर जोरदार बयान देते हुए कहा कि बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर द्वारा लिखे गए भारतीय संविधान में वक्फ बोर्ड कानून और धारा 370 का कोई स्थान नहीं था। उनका आरोप था कि देश विरोधी पार्टी ने सिर्फ 19% वोटों को खुश करने के लिए इन विवादित प्रावधानों को जबरदस्ती लागू किया।

उन्होंने आगे कहा, ₹बाबा साहब के संविधान में न तो वक्फ बोर्ड का कोई कानून था और न ही धारा 370 का कोई प्रावधान। ये सभी संशोधन और प्रावधान सिर्फ देश विरोधी पार्टियों और ताकतों द्वारा बनाए गए, जो अपनी राजनीतिक हितों को साधने के लिए देश की एकता और अखंडता से खिलवाड़ कर रहे थे।"

लोगों ने यह भी आरोप लगाया कि देश विरोधी पार्टियों ने सिर्फ 19% वोटरों को खुश करने के लिए वक्फ बोर्ड और धारा 370 जैसे विवादित प्रावधानों को लागू किया, जो कि समाज में दरार डालने का काम कर रहे थे। "यह सिर्फ सत्ता की राजनीति का हिस्सा था, और इसका कोई वैधानिक आधार नहीं था।

आखिर में एडवोकेट अरविन्द पुष्कर ने कहा, "आज देश को इन अव्यवस्थित और राष्ट्रविरोधी प्रावधानों से मुक्त करने की जरूरत है ताकि देश में समरसता और शांति का माहौल बने।"

मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु राम त्याग, कर्तव्यपालन, निष्ठा, सहनशीलता, संयम, सच्चाई, न्याय, समानता, करुणा, दया और आपसी भाईचारे के प्रतिक ---- वरिष्ठ समाजसेवी मुशरफ

प्रभु राम के जीवन की मर्यादाएं हमें समाज के प्रति अपने कर्तव्यों और आपसी भाईचारे को सही ढंग से निभाने के लिए प्रेरित करती हैं : वरिष्ठ समाजसेवी मुशरफ खान

प्रभु राम के चित्र की पूजा के साथ-साथ उनके चरित्र का अनुसरण करना चाहिए तभी हमारा जीवन सुखमय होगा : वरिष्ठ समाजसेवी मुशरफ खान

आगरा,संजय सागर सिंह। रामायण के महानायक प्रभु राम को मर्यादा पुरुषोतम कहा जाता है, जो धर्म, कर्तव्य और आदर्श जीवन के प्रतीक माने जाते हैं। मर्यादा पुरुषोतम श्रीराम का चरित्र त्याग, कर्तव्यपालन, निष्ठा, सहनशीलता, संयम, सच्चाई, न्याय, समानता-करुणा, दया, परिवार, रिश्तों की महत्ता, स्वार्थ रहित कुशल नेतृत्व और आपसी भाईचारे का महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है।

राम नवमी के पावन अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी मुशरफ खान ने रामनवमी पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं दी और कहा, "मर्यादा पुरुषोतम प्रभु राम का जीवन एक आदर्श व्यक्तित्व और नैतिक मूल्यों और आपसी भाईचारे का प्रतीक है, जिससे हमें कई महत्वपूर्ण शिक्षाएँ मिलती हैं। उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन में सत्य और न्याय का पालन किया। उनके जीवन की मर्यादाएं हमें आदर्श जीवन जीने और समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को सही ढंग से निभाने के लिए प्रेरित करती हैं।"

उन्होंने आगे कहा, "प्रभु, निश्चित रूप से मर्यादा पुरुषोतम है, उन्होंने सदैव ही मर्यादा में रहकर हर कार्य किया और न्याय, सत्य, धर्म और आपसी भाईचारे के पथ पर आजीवन चलते रहे एवं सामान्य पुरुष की भांति जीवन के हर संघर्षों को अपनाया और मानव के रूप में आकर प्रभु ने सभी जनमानस का कल्याण किया।

श्री खान ने यह भी बताया कि प्रभु राम ने मनुष्य रूप में भित्र, भाई, पुत्र, पति और माता-पिता हर नाते का सम्मान कर पूरी दुनियां को मर्यादा और आपसी भाईचारे के मार्ग पर चलने का पाठ पढ़ाया लेकिन वर्तमान समय में भित्र-भित्र न होकर शत्रु अधिक है, इस संदर्भ में भी प्रभु राम ने भित्रता का उदहारण पूरी मानव जाति को दिया है। भित्र के रूप में, प्रभु राम के चरित्र का वर्णन शब्दो द्वारा संभव नहीं है। उनके हृदय के करीब भित्र श्री हनुमान जी से उनकी भित्रता उच्चकोटि की भित्रता का स्थान पाती है। इसके अतिरिक्त उन्होंने कभी भी जाति के नाम पर भेद-भाव, छुआ-छूत, अमीर-ग़रीब का भेद नही किया।वरिष्ठ समाजसेवी मुशरफ खान ने बताया कि वे सभी मनुष्यों को समान समझते थे। उनकी नज़र में कोई छोटा या बड़ा नहीं था। इसका उदहारण भी रामायण में प्राप्त होता है। प्रभु राम ने अपने भित्र निषाद राज गुहा का सम्मान किया उन्हें अपने कंठ से लगाया, केवट की भक्ति पर तो वे बलिहारी हो गए और जो तृप्ति उन्हें वनवासी माँ सबरी के झूठे बेर खाकर हुई वो तृप्ति उन्हें अवध और मिथिला के छतीस व्यजनों में भी प्राप्त नहीं हुई। प्रभु राम ने विभीषण और वनवासी सुग्रीव जैसे साधारण व्यक्तियों से भित्रता कर समानता, करुणा और आपसी भाईचारे का संदेश दिया। इससे हमें सिखने को मिलता है कि सभी का सम्मान करना चाहिए, चाहे उनकी सामाजिक स्थिति कुछ भी हो।

साथ ही, उन्होंने बताया कि स्वयं प्रभु राम ने भी विषम परिस्थिति में धैर्य का सहारा लेकर आदर्श प्रस्तुत किया था। इसके लिए शास्त्रों में उनको आदर्श पुरुष कहा गया है। उनका अपने भाइयों, पत्नी, और माता-पिता के प्रति प्रेम और निष्ठा हमें बताता है कि परिवार और रिश्तों का जीवन में बड़ा महत्व है। उन्होंने हमेशा अपने प्रजा के हित को प्राथमिकता दी। अयोध्या लौटने पर उन्होंने अपने राज्य की स्थापना की, जो न्याय, समानता, खुशहाली और आपसी भाईचारे का प्रतीक है। इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि एक सच्चे नायक को नि:स्वार्थ दयालु, ईमानदार और परोपकारी होना चाहिए।

ग्राम पंचायत ब्यौर का मजरा सेमरमई में खुली स्वच्छ भारत मिशन की पोल: नहीं हुई सफाई, बीमारियों का खतरा, ग्रामीण परेशान

उत्तर प्रदेश के बदायूं जिले के ग्राम पंचायत ब्यौर मजरा सेमरमई गांव में स्वच्छ भारत मिशन की स्थिति दयनीय बनी हुई है। सफाई कर्मचारियों की लापरवाही से गांव में जगह-जगह गंदगी का अंबार लगा हुआ है। ग्रामीणों का कहना है कि सफाई कर्मचारी महीनों से गांव में कोई नियमित सफाई नहीं करता है।

कभी-कभार जब सफाई होती भी है, तो वह केवल गांव के मुख्य मार्ग तक ही सीमित रहती है। शासन द्वारा स्वच्छता व्यवस्था के लिए लाखों रुपए खर्च किए जा रहे हैं, लेकिन जमीनी स्तर पर इसका कोई प्रभाव नहीं दिख रहा है। गंदगी और जलभराव की वजह से मच्छरों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है, जिससे बीमारियों का खतरा बढ़ गया है। यह स्थिति विशेष रूप से बच्चों और बुजुर्गों के लिए गंभीर चिंता का विषय बन गई है। सलारपुर ब्लॉक के ग्राम पंचायत ब्यौर का मजरा सेमरमई में स्वच्छता की स्थिति बिगड़ गई है। गांव की ज्यादातर नालियां कूड़े-कचरे से भर चुकी हैं। गंदगी के कारण नालियां जाम हो गई हैं। सिर्फ एक-दो नालियां ही साफ हैं। नालियों के चोक होने से गंदा पानी सड़कों पर बह रहा है। गांव के विभिन्न हिस्सों में कूड़ा व गंदगी रोड पर दिख रही हैं। स्थानीय लोगों ने बताया कि सफाई कर्मचारियों की अनुपस्थिति से हालात खराब हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस लापरवाही से केंद्र सरकार का स्वच्छता अभियान भी विफल हो रहा है।

रामनवमी जुलूस के दौरान डीजे बंद कराने पर कानपुर में हंगामा, पुलिस से माफी की मांग

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां रामनवमी जुलूस से पहले संवेदनशील रावतपुर की मसवानपुर में डीजे बंद कराए जाने को लेकर माहौल तनावपूर्ण हो गया। इस मुद्दे को लेकर भाजपाइयों ने जमकर हंगामा भी किया और रामनवमी का जुलूस निकालने के लिए पुलिस से माफी मांगने की शर्त भी रखी। यहां रावतपुर थाना क्षेत्र के मसवानपुर में रामनवमी की तैयारियों के दौरान पुलिस द्वारा लाउडस्पीकर जब्त किए जाने पर हिंदू संगठनों में आक्रोश फैल गया। जिसके भी रोड में रामलला मंदिर रोड पर सैकड़ों लोग जमा होकर पुलिस के खिलाफ नारेबाजी करने लगे और सड़क जाम कर दी।

जानकारी के मुताबिक, रामनवमी को लेकर श्रद्धालुओं ने जगह-जगह टेंट और लाउड स्पीकर लगाए थे। इस बीच डीसीपी वेस्ट रावतपुर गांव पहुंच डीजे सिस्टम बंद कराने के निर्देश दिए ,जिसपर पुलिस ने करीब 10 साउंड सिस्टम जब्त कर अपनी गाड़ी में लदवा दिए।

इस पर पूर्व पार्षद और रामलीला कमेटी के संयोजक रामऔतार प्रजापति ने लाउडस्पीकर न ले जाने का निवेदन किया लेकिन डीसीपी नहीं मानी। वह पहले भी डीसीपी शारदा नगर से आठ और रोशन नगर से छह लाउडस्पीकर जब्त कर चुकी थीं।

इस बीच जब यह खबर हिंदू संगठनों तक पहुंची तो बड़ी संख्या में लोग रावतपुर गांव पहुंच गए। देखते ही देखते सैकड़ों की भीड़ हजारों में बदल गई और विरोध-प्रदर्शन ने उग्र रूप ले लिया और लोगों ने एलान किया कि जब तक पुलिस पर कार्रवाई नहीं होती, रामनवमी का जुलूस नहीं निकाला जाएगा। बाद में स्थिति को शांत करने के लिए बिल्हौर विधायक राहुल बच्चा मौके पर पहुंचे और प्रदर्शनकारियों से बातचीत की। वहीं, एडिशनल पुलिस कमिश्नर हरीश चंदर ने कहा कि रामनवमी के आयोजकों को कई दिन पहले ही साउंड सिस्टम के संबंध में हाईकोर्ट के निर्देशों की जानकारी दे दी गई थी। इसके बाद भी डीजे बजाया जा रहा था।

ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष पत्रकार विष्णु सिकरवार ने पत्रकारिता के पवित्र पेशे पर दिया महत्वपूर्ण बयान

पत्रकारिता एक पवित्र और सम्मानजनक पेशा है, जो समाज की आवाज़ बनकर राष्ट्रहित, न्यायहित और जनहित में काम करता है --- – जिलाध्यक्ष पत्रकार विष्णु सिकरवार

अपील : हमारी लेखनी हमेशा निष्पक्ष, निर्भीक और राष्ट्रहित में होनी चाहिए, क्योंकि समाज और राष्ट्र विरोधी पत्रकारिता कभी भी सर्व समाज के हित में नहीं हो सकती ---- जिलाध्यक्ष पत्रकार विष्णु सिकरवार

पत्रकारिता समाज के लिए एक मजबूत ताकत है, और इससे सही जानकारी और नीतियों का प्रसार होता है, इससे हम असहाय, कमजोर गरीबों के जीवन में बदलाव ला सकता है।"

आगरा, संजय सागर सिंह। ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष पत्रकार विष्णु सिकरवार ने कहा कि पत्रकारिता एक पवित्र और सम्मानजनक पेशा है, जो समाज की आवाज़ बनकर राष्ट्रहित और जनहित में काम करता है। उन्होंने पत्रकारों से अपील की कि हमारी लेखनी हमेशा निष्पक्ष, निर्भीक और राष्ट्रहित में होनी चाहिए, क्योंकि समाज और राष्ट्र विरोधी पत्रकारिता कभी भी सर्व समाज के हित में नहीं हो सकती।

पत्रकार विष्णु सिकरवार ने आगे कहा, ₹हमारा संगठन पत्रकारों के हितों के संरक्षण और उनके संघर्षों के लिए कार्य करता है। हमें सभी पत्रकारों को एकजुट होकर काम करना चाहिए, क्योंकि संगठन की मजबूती से ही हम असहाय और कमजोर वर्गों की आवाज़ शासन-प्रशासन तक पहुंचा सकते हैं।"

उन्होंने तहसील इकाई के संगठनात्मक कार्यों की सराहना की और पत्रकारों को राष्ट्रहित, जनहित और न्यायहित में कार्य करने की प्रेरणा दी। उनका मानना है कि पत्रकारिता समाज के लिए एक मजबूत ताकत है और इससे सही जानकारी और नीतियों का प्रसार होता है, जो समाज में महत्वपूर्ण बदलाव ला सकता है।

श्री सिकरवार ने पत्रकारिता के शुद्ध और नैतिक मूल्य बनाए रखने पर जोर देते हुए कहा कि केवल जब पत्रकार एकजुट होकर कार्य करेंगे, तभी वे अपने कर्तव्यों को ठीक से निभा सकते हैं और समाज के सभी वर्गों को न्याय दिला सकते हैं, और इससे हम असहाय कमजोर गरीबों के जीवन में बदलाव ला सकता है।

– :सौजन्य :–
ईवी ड्राइव द फ्यूचर
EV
Drive the Future

स्कोडा ने दिखाई नई कोडियाक की पहली झलक, जल्द भारत में होगी लॉन्च, जानें सोशल मीडिया पर क्या मिली जानकारी

परिवहन विशेष न्यूज

स्कोडा कोडियाक एसयूवी भारतीय बाजार में स्कोडा की ओर से कई सेगमेंट में एसयूवी और सेडान कारों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से जल्द ही फुल साइज एसयूवी सेगमेंट में Skoda Kodiaq को लॉन्च किया जाएगा। इसके पहले सोशल मीडिया पर इसकी झलक को दिखाया गया है। सोशल मीडिया पर एसयूवी की क्या जानकारी सामने आई है। इसे कब तक लॉन्च किया जाएगा। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। यूरोप की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल स्कोडा की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता जल्द ही अपनी नई एसयूवी के तौर पर Skoda Kodiaq को लॉन्च करने की तैयारी कर रही है। इस एसयूवी को कब तक लॉन्च किया जा सकता है। सोशल मीडिया पर जारी हुए टीजर में क्या जानकारी सामने आई है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

सोशल मीडिया पर जारी हुआ टीजर

स्कोडा की ओर से सोशल मीडिया पर अपनी जल्द लॉन्च होने वाली एसयूवी Skoda Kodiaq का टीजर जारी किया गया है। इस टीजर में एसयूवी के कई फीचर्स और डिजाइन की झलक मिल रही है।

क्या मिली जानकारी

सोशल मीडिया पर करीब 13 सेकेंड का वीडियो टीजर जारी किया गया है। जिसमें एसयूवी के एक्सटीरियर के साथ ही इंटीरियर और कुछ फीचर्स की जानकारी सामने आई है। एसयूवी के रियर में टेल गेट और लाइट्स के साथ ही इसके पैनोरमिक सनरूफ और डैशबोर्ड की झलक इस टीजर में मिल रही है।

कैसे होंगे फीचर्स

स्कोडा की ओर से Kodiaq में कई बेहतरीन फीचर्स को दिया जाएगा। इसमें एलईडी लाइट्स, एलईडी डीआरएल, एलईडी रियर लाइट, पैनोरमिक सनरूफ, वेंटिलेटिड सीट्स,

13 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, एंबिएंट लाइट्स, 19 और 20 इंच अलॉय व्हील्स, रूफ रेल जैसे कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जा सकता है।

कब होगी लॉन्च

स्कोडा की ओर से अभी इस एसयूवी के लॉन्च को लेकर औपचारिक तौर पर कोई जानकारी नहीं दी गई है। लेकिन माना जा रहा है कि इस एसयूवी को भारतीय बाजार में अप्रैल 2025 या मई 2025 की शुरुआत में लॉन्च किया जा सकता है।

किनसे होगा मुकाबला

स्कोडा की ओर से कोडिएक को फुल साइज एसयूवी सेगमेंट में लॉन्च किया जाएगा। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Toyota Fortuner, MG Gloster जैसी एसयूवी के साथ होगा। इसके अलावा इसे अप्रैल 2025 में ही लॉन्च होने वाली Volkswagen Tiguan R-Line से भी चुनौती मिलेगी।

कितनी होगी कीमत

स्कोडा की ओर से नई एसयूवी की कीमत की सही जानकारी तो लॉन्च के समय ही दी जाएगी। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि नई कोडिएक को भारत में 40 लाख रुपये के आस-पास की एक्स शोरुम कीमत पर लॉन्च किया जा सकता है।

एमजी की कारों को अप्रैल 2025 में खरीदने का बेहतरीन मौका, नई गाड़ी पर हो सकती है करीब चार लाख रुपये तक की

परिवहन विशेष न्यूज

एमजी कार डिस्काउंट अप्रैल 2025 ब्रिटिश वाहन निर्माता एमजी मोटर्स की ओर से हैचबैक कार से लेकर एसयूवी सेगमेंट तक में कई वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की कारों को अप्रैल 2025 में खरीदने पर तगड़े डिस्काउंट ऑफर किए जा रहे हैं। किस गाड़ी पर इस महीने कितने रुपये के डिस्काउंट ऑफर्स दिए जा रहे हैं। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। ब्रिटिश वाहन निर्माता एमजी मोटर्स भारतीय बाजार में अलग अलग सेगमेंट में कई कारों की बिक्री करती है। रिपोर्ट्स के मुताबिक अगर इस महीने निर्माता की किसी भी गाड़ी को खरीदा जाता है तो उस पर तगड़ी बचत का मौका दिया जा रहा है। एमजी मोटर्स की किस गाड़ी पर अप्रैल 2025 में किस तरह के डिस्काउंट ऑफर्स को दिया जा रहा है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

MG Comet EV पर कितनी बचत

एमजी की ओर से सबसे सस्ती इलेक्ट्रिक कार के तौर पर कॉमेट ईवी की बिक्री की जाती है। अप्रैल 2025 में इस गाड़ी को खरीदने पर अधिकतम 45 हजार रुपये तक की बचत की जा सकती है। यह बचत इसके 2024 की यूनिट्स पर हो सकती है। टॉप वेरिएंट पर 20

हजार रुपये का कैश डिस्काउंट, 20 हजार रुपये का लॉयल्टी बोनस और पांच हजार रुपये का कॉर्पोरेट डिस्काउंट शामिल है। इसके अलावा 100 ईयर एडिशन पर भी 35 हजार रुपये बचाए जा सकते हैं। 2025 की यूनिट्स पर 35 से 40 हजार रुपये तक की बचत की जा सकती है।

MG Astor पर भी मिलेगा डिस्काउंट

एमजी की ओर से मिड साइज एसयूवी के तौर पर एस्टर की बिक्री की जाती है। जानकारी के मुताबिक इस एसयूवी को अप्रैल 2025 में खरीदने पर अधिकतम 1.45 लाख रुपये तक बचाए जा सकते हैं। यह बचत इसके 2024 की यूनिट्स पर की जा सकती है। 2025 की यूनिट्स पर इस महीने 35 से 70 हजार रुपये तक बचाए जा सकते हैं।

MG Hector पर सबसे ज्यादा बचत का मौका

एमजी की ओर से हैक्टर एसयूवी को भी चार मीटर से बड़े सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। इस एसयूवी को अगर अप्रैल 2025 में खरीदते हैं तो सबसे ज्यादा बचत की जा सकती है। जानकारी के मुताकिब इस पर अप्रैल 2025 में 3.92 लाख रुपये तक की बचत की जा सकती है। यह बचत इसके छह सीटों वाले शॉर्प प्रो वेरिएंट पर होगी। इसके डीजल वर्जन पर भी अधिकतम 1.95 लाख रुपये तक बचाए जा सकते हैं।

शोरूम से लें जानकारी

अगर आप इस महीने एमजी की किसी कार को खरीदने जा रहे हैं तो पहले अपने नजदीकी शोरूम पर जाकर डिस्काउंट ऑफर्स की पूरी जानकारी ले सकते हैं। शहर, शोरूम, वेरिएंट के मुताबिक इन कारों पर कई शहरों में अलग अलग डिस्काउंट भी हो सकते हैं।

टाटा कर्व की आने वाली है सीएनजी वेरिएंट, टेस्टिंग के दौरान हुई स्पॉट

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। टाटा मोटर्स की हाल ही में लॉन्च हुई कूपे एसयूवी, Tata Curvv CNG वेरिएंट को हाल ही में भारत की सड़कों पर टेस्टिंग के दौरान स्पॉट किया गया है। जिसे देखते हुए कहा जा सकता है टाटा मोटर्स इसे भारतीय बाजार में लॉन्च करने की तैयारी कर रही है। हाल ही में इसे पुणे में टेस्टिंग के दौरान स्पॉट किया गया है, जो इसके सीएनजी वेरिएंट की पुष्टि करती है। आइए जानते हैं कि Tata Curvv CNG वेरिएंट में क्या कुछ देखने के लिए मिलेगा।

डिजाइन और फीचर्स

टाटा कर्व सीएनजी का डिज़ाइन इसके पेट्रोल और डीजल संस्करणों के समान ही रहेगा। हालांकि, इसमें कुछ नए फीचर्स जोड़े जाने की संभावना है, जैसे कि 360-डिग्री कैमरा, ऑटो पार्क असिस्ट, और ड्यूल-जोन क्लाइमेट कंट्रोल। इन फीचर्स को डैशबोर्ड पर स्थित बटनों के माध्यम से नियंत्रित किया जा सकता है।

इंजन और परफॉर्मेंस

टाटा कर्व सीएनजी में 1.2-लीटर टर्बोचार्ज्ड पेट्रोल इंजन का उपयोग किया जाएगा, जो 99 बीएचपी की पावर और 170 एनएम का टॉर्क प्रदान करेगा। सीएनजी किट के साथ, पावर और टॉर्क में मामूली बदलाव हो सकते हैं। यह इंजन मैनुअल और ऑटोमैटिक दोनों गियरबॉक्स विकल्पों के साथ उपलब्ध होगा।

ड्यूल सिलेंडर टेक्नोलॉजी

टाटा मोटर्स अपनी नवीनतम ट्विन-सिलेंडर तकनीक का उपयोग कर रही है, जिससे बूट स्पेस में कोई कमी नहीं होगी। यह तकनीक पहले अल्ट्रोज़ सीएनजी में देखी गई थी और अब कर्व सीएनजी में भी इसका उपयोग किया जाएगा

सुरक्षा और सुविधाएं

सुरक्षा के मामले में, टाटा कर्व सीएनजी में 6 एयरबैग्स, एंटी-लॉक ब्रेकिंग सिस्टम (ABS), इलेक्ट्रॉनिक स्टेबिलिटी प्रोग्राम (ESP), ब्रेक असिस्ट, 3-पॉइंट सीट बेल्ट, और डिस्क ब्रेक जैसी सुविधाएं शामिल होंगी। इसके अलावा, इसमें 12.3-इंच की टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम और 9-स्पीकर वाली JBL साउंड सिस्टम भी उपलब्ध होगी।

लॉन्च और संभावित कीमत

टाटा कर्व सीएनजी के 2024 के अंत तक भारतीय बाजार में लॉन्च होने की संभावना है। इसकी अनुमानित कीमत लगभग 10 लाख रुपये हो सकती है, जो इसे अपने सेगमेंट में एक प्रतिस्पर्धी विकल्प बनाएगी।

हुंडई मोटर इंडिया ने भारत में इलेक्ट्रिक वाहन बैटरी सेल बनाने के लिए एक्साइड इंडस्ट्रीज के साथ की साझेदारी

परिवहन विशेष न्यूज

हुंडई मोटर इंडिया ने भारतीय बाजार के लिए समर्पित एचएमआईएल के इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए बैटरी सेल के उत्पादन और आपूर्ति के लिए एक्साइड इंडस्ट्रीज की सहायक कंपनी एक्साइड एनर्जी सॉल्यूशंस के साथ एक बाध्यकारी टर्म शीट पर हस्ताक्षर किए हैं।

टर्म शीट में एचएमआईएल द्वारा अपने इलेक्ट्रिक वाहनों में उपयोग के लिए लिथियम-आयन सेल्स और बैटरी पैक्स के आपूर्तिकर्ता के रूप में ईईएसएल को शामिल करने के इरादे को औपचारिक रूप दिया गया है।

प्रस्तावित व्यवस्था से, एक बार निर्णायक समझौते निष्पादित हो जाने पर, इलेक्ट्रिक वाहनों के विकास और उत्पादन में तेजी आने की उम्मीद है, जिससे भारत में टिकाऊ परिवहन समाधानों के विकास में योगदान मिलेगा।

गुरुवार, 19 दिसम्बर को एक्सचेंज फाइलिंग के अनुसार, दक्षिण कोरिया की हुंडई मोटर कंपनी की भारतीय इकाई, बैटरी सेल को टर्म शीट में निर्धारित मूल्य पर खरीदेगी।

इस टर्म शीट के बाद होने वाले निर्णायक समझौते, इलेक्ट्रिक वाहनों के उत्पादन में वृद्धि को गति प्रदान करेंगे, तथा देश के हरित ऊर्जा परिवर्तन में योगदान देंगे।

हालांकि इस साझेदारी से होने वाली आय की वास्तविक संभावना का खुलासा होना अभी बाकी है, लेकिन यह समझौता एक्साइड इंडस्ट्रीज के लिए बढ़ते ईवी बाजार का लाभ उठाने का एक आशाजनक अवसर प्रस्तुत करता है। वैश्विक हुंडई मोटर कंपनी समूह की सहायक कंपनी होने के नाते हुंडई मोटर इंडिया पर्याप्त विशेषज्ञता और पैमाने लेकर आती है, जिससे यह सहयोग प्रतिस्पर्धी ईवी क्षेत्र में दोनों कंपनियों के लिए संभावित रूप से परिवर्तनकारी कदम बन जाता है।

यह विकास भारत में इलेक्ट्रिक मोबिलिटी पर बढ़ते जोर के साथ जुड़ा हुआ है, जिसे सरकारी प्रोत्साहनों और कार्बन उत्सर्जन को कम करने की तत्काल आवश्यकता का समर्थन प्राप्त है। एक साथ मिलकर, एक्साइड और हुंडई न केवल स्थिरता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हैं, बल्कि ईवी बैटरी सेगमेंट में बढ़ी हुई घरेलू उत्पादन क्षमताओं का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं। यह साझेदारी नवाचार को बढ़ावा देने और विद्युतीकृत भविष्य की मांगों को पूरा करने में उद्योग सहयोग के लिए एक बेंचमार्क स्थापित करती है।

टर्म शीट एक गैर-बाध्यकारी दस्तावेज़ है जो पक्षों के बीच प्रस्तावित समझौते या लेनदेन की मुख्य शर्तों और नियमों को रेखांकित करता है। यह बातचीत के लिए एक खाका के रूप में कार्य करता है, जो दोनों पक्षों को एक निश्चित, कानूनी रूप से बाध्यकारी समझौते में व्यवस्था को औपचारिक रूप देने से पहले आपसी समझ तक पहुँचने में मदद करता है।

"वित्तीय वर्ष 2025" में किन कारों की रही सबसे ज्यादा मांग, मारुति, मल्टी, हुंडई की कारें हुईं टॉप-5 में शामिल

परिवहन विशेष न्यूज

शीर्ष कारें वित्त वर्ष 2025 भारतीय बाजार में हर महीनों लाखों की संख्या में कारों की बिक्री की जाती है।कई निर्माताओं की ओर से बेहतरीन फीचर्स और तकनीक के साथ अपनी कारों को ऑफर किया जाता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक किस कंपनी की ओर से कौन सी कार की वित्त वर्ष 2025 के दौरान सबसे ज्यादा यूनिट्स की बिक्री की गई है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में हर साल लाखों कारों की बिक्री की जाती है। निर्माताओं की ओर से भी समय समय पर अपनी कारों को अपडेट के साथ पेश किया जाता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक वित्त वर्ष 2025 के दौरान किन कारों की सबसे ज्यादा मांग रही है। Top-5 में कौन सी कारों को शामिल किया गया है। इन कारों की कितनी यूनिट्स की बिक्री बीते वित्त वर्ष के दौरान हुई है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

पहले नंबर पर रही Maruti Wagon R

मारुति की ओर से हैचबैक सेगमेंट में वैगन आर की बिक्री की जाती है। रिपोर्ट्स के मुताबिक इस कार को वित्त वर्ष 2025 के दौरान भी सबसे ज्यादा पसंद किया गया है। जानकारी के मुताबिक इसकी कुल 198451 यूनिट्स की बिक्री हुई है।

दूसरे नंबर पर आई Tata Punch

हैचबैक के साथ ही एसयूवी सेगमेंट के वाहनों को भी देश में काफी पसंद किया जाता है। रिपोर्ट्स के मुताबिक टाटा की पंच को भी वित्त वर्ष 2025 में काफी पसंद किया गया है। लिस्ट में यह एसयूवी दूसरे पायदान पर रही है। जानकारी के मुताबिक इसकी 196572 यूनिट्स की बिक्री वित्त वर्ष 2025 में हुई है।

Hyundai Creta की भी रही मांग

मिड साइज एसयूवी सेगमेंट में हुंडई की ओर से क्रेटा की बिक्री की जाती है। अपने सेगमेंट में इस एसयूवी को सबसे ज्यादा पसंद भी किया जाता है। रिपोर्ट्स के मुताबिक वित्त वर्ष 2025 के दौरान सबसे ज्यादा पसंद की जाने वाली कारों की लिस्ट में यह तीसरे नंबर पर रही है। इस एसयूवी की वित्त वर्ष 2025 में 194871 यूनिट्स की बिक्री हुई है।

अगले नंबर पर रही Maruti Ertiga

मारुति की ओर से अर्टिगा एमपीवी को बजट सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। बजट एमपीवी सेगमेंट में इस गाड़ी की सबसे ज्यादा बिक्री होती है। वित्त वर्ष 2025 में इसकी 190974 यूनिट्स की बिक्री हुई है।

Top-5 में शामिल हुई Maruti Brezza

मारुति की ओर से सब फोर मीटर एसयूवी सेगमेंट में ब्रेजा की बिक्री की जाती है। हर महीने इसकी भी हजारों यूनिट्स की बिक्री होती है। रिपोर्ट के मुताबिक वित्त वर्ष 2025 के दौरान इस एसयूवी की 189163 यूनिट्स की बिक्री देशभर में हुई है।

इन कारों की भी रही मांग

Top-5 के साथ ही वित्त वर्ष 2025 में Maruti Swift, Maruti Baleno, Maruti Fronx, Maruti Dzire और Mahindra Scorpio को भी सबसे ज्यादा पसंद की गई कारों की लिस्ट में शामिल किया गया है।

हुंडई क्रेटा के एक्स वेरिएंट को घर है लाना, 2 लाख अग्रिम भुगतान के बाद देनी होगी इतनी ईएमआई

परिवहन विशेष न्यूज

कार वित्त योजना हुंडई की ओर से Mid Size SUV सेगमेंट में Hyundai Creta को भारतीय बाजार में ऑफर किया जाता है। अगर आप भी इसके EX वेरिएंट को खरीदने का मन बना रहे हैं तो दो लाख रुपये देकर (Hyundai Creta EX Down payment) घर लाने के बाद सात साल के लिए हर महीने कितने रुपये की EMI देनी होगी। आइए जानते हैं।

साउथ कोरियाई वाहन निर्माता Hyundai की ओर से भारतीय बाजार में एसयूवी के तौर पर Hyundai Creta को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। Hyundai Creta के EX वेरिएंट को अगर आप भी घर लाने का मन बना रहे हैं, तो दो लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर इसे घर लाया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Hyundai Creta EX Price

Hyundai की ओर से Creta SUV के सेकेंड बेस वेरिएंट के तौर पर EX को ऑफर किया जाता है। कंपनी इस मिड साइज एसयूवी के बेस वेरिएंट को 12.32 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर बिक्री के लिए उपलब्ध करवा रही है। अगर इसे दिल्ली में खरीदा जाता है तो 12.32 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत के साथ ही इस पर रजिस्ट्रेशन टैक्स और आरटीओ की कीमत भी देनी होगी। इस गाड़ी को खरीदने के लिए 12.32 लाख रुपये आरटीओ, 1.31 लाख रुपये इंश्योरेंस के देने हों और करीब 52 हजार रुपये इंश्योरेंस के देने होंगे। इसके अलीावा टीसीएस चार्ज के तौर पर 12322 रुपये भी देने होंगे। इसके बाद गाड़ी की दिल्ली में ऑन रोड कीमत 14.27 लाख रुपये हो जाती है।

2 लाख रुपये Down Payment के बाद कितनी EMI

अगर Hyundai Creta SUV के सेकेंड बेस वेरिएंट EX को आप खरीदते हैं, तो बैंक की ओर से एक्स शोरूम कीमत पर ही फाइनेंस किया जाएगा। ऐसे में दो लाख रुपये की डाउन पमेंट करने के बाद आपको करीब 12.27 रुपये की राशि को बैंक से फाइनेंस करवाना होगा। बैंक की ओर से अगर आपको नौ फीसदी ब्याज के साथ सात साल के लिए 12.27 लाख रुपये दिए जाते हैं, तो हर महीने सिर्फ 19744 रुपये की EMI आपको अगले सात साल के लिए देनी होगी।

कितनी महंगी पड़ेगी Car

अगर आप नौ फीसदी की ब्याज दर के साथ सात साल के लिए 12.27 रुपये का बैंक से Car Loan लेते हैं, तो आपको सात साल तक 19744 रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। ऐसे में सात साल में आप Hyundai Creta के EX वेरिएंट के लिए करीब 4.31 लाख रुपये बतौर ब्याज देंगे। जिसके बाद आपकी कार की कुल कीमत एक्स शोरूम, ऑन रोड और ब्याज मिलाकर करीब 18.58 लाख रुपये हो जाएगी।

किनसे होता है मुकाबला

Hyundai की ओर से Creta को मिड साइज एसयूवी सेगमेंट में लाया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Honda Elevate, Kia Seltos, Tata Harrier, Maruti Grand Vitara, Toyota Uban Cruiser Hyryder जैसी SUVs के साथ होता है।

• गहराता जल संकट, बढ़ती मुश्किलें

विजय गर्ग

भारत में जल संकट बड़ी समस्या बन चुका है। इससे हर साल करोड़ों लोग प्रभावित होते हैं। गर्मियों की आहट के साथ ही यह संकट बढ़ जाता है। गांवों से लेकर महानगरों तक पानी के लिए लिए त्राहि-त्राहि मचने लगती है। यह संकट न केवल ग्रामीण और शहरी आबादी के लिए गंभीर चुनौती है, बल्कि कृषि पर भी इसका व्यापक प्रभाव पड़ रहा है। लगातार गिरता भूजल स्तर, जल संसाधनों की बर्बादी, बढ़ती जनसंख्या और जलवायु परिवर्तन इस संकट को और अधिक विकराल बना रहे हैं। जाहिर है, अगर समय रहते उचित कदम नहीं उठाए गए, तो आने वाले वर्षों में स्थिति और गंभीर हो सकती है। पूरी दुनिया में साल-दर-साल पानी की किल्लत बढ़ रही रही है। धरती पर जितना पानी उपलब्ध है, उसमें से सिर्फ 2.5 फीसद मीठा पानी है और इसमें से भी मात्र एक फीसद मानव उपयोग के लिए उपलब्ध है। विश्व के जल संसाधनों में भारत की हिस्सेदारी चार फीसद है। देश में उपलब्ध जल का लगभग 80 फीसद कृषि क्षेत्र में उपयोग किया जाता है। कृषि के अलावा बिजली उत्पादन, उद्योग और घरेलू जरूरतों के लिए जल की उपलब्धता आवश्यक है। मगर जरूरत के हिसाब से जल संसाधन सीमित हैं। पानी के कुशल प्रबंधन से ही सभी को इसकी आपूर्ति संभव है। समय-समय पर हुए अध्ययनों और सर्वेक्षण रपटों में भारत में जल संकट को चिंताजनक बताया जाता रहा है। अमेरिका स्थित विश्व संसाधन संस्थान की ओर से प्रकाशित आंकड़ों से पता चलता है कि विश्व में जो सत्रह देश सर्वाधिक जल संकट झेल रहे हैं, भारत उनमें तेरहवें स्थान पर है।

वर्ष 2019 में जारी नीति आयोग की रपट के मुताबिक देश की 60 करोड़ से अधिक आबादी पानी की गंभीर किल्लत झेल रही है और हर वर्ष लगभग दो लाख लोग असुरक्षित जल पीने से मर जाते हैं। 75 फीसद आबादी को पीने के पानी के लिए दूर तक जाना पड़ता है। इस रपट में नीति आयोग ने चेताया था कि 2030 तक देश में जल की मांग आपूर्ति के मुकाबले दोगुनी होने का अनुमान है। इससे करोड़ों लोगों के सामने जल संकट की स्थिति उत्पन्न होगी। बड़ा सवाल यह है कि इस रपट के छह साल बाद हमने जल संकट को कम करने की दिशा में क्या कदम उठाए हैं?

देश में जल संकट गहराने के कई कारण हैं। हमें पता है कि पानी सीमित है, फिर भी उसे बूंद-बूंद बचाने के बजाय हम उसे व्यर्थ बहा रहे हैं। देश की तेजी से बढ़ती आबादी के कारण पानी की मांग बढ़ती रही है, लेकिन जल संसाधनों का उतनी ही अधिक

तेजी से क्षय हो रहा है। भारत दुनिया में सबसे ज्यादा भूजल निकालने वाला देश है। कृषि, उद्योग और घरेलू उपयोग के लिए भूजल का अत्यधिक दोहन किया जा रहा है, जिससे भूजल स्तर गिरता जा रहा है। नदियों, झीलों और भूजल में औद्योगिक कचरे, रसायनों और प्लास्टिक के बढ़ते स्तर के कारण पीने योग्य पानी की लगातार कमी आ रही है। केंद्रीय भूजल बोर्ड की शोध रपट से पता चलता है कि समूचे देश में भूजल प्रदूषण चिंताजनक रूप से बढ़ गया है। इनमें से अधिकतर इलाकों में नाइट्रेट का स्तर बहुत अधिक है। यह रासायनिक प्रदूषक पर्यावरणीय समस्याएं पैदा करता है। इससे खासकर, छोटे बच्चों के लिए गंभीर स्वास्थ्य खतरा है। बढ़ते तापमान और अनियमित मानसून के कारण कई क्षेत्रों में सूखा और बाढ़ की स्थिति बन रही है।

देश में सदियों से जल संरक्षण के लिए पारंपरिक तरीके इस्तेमाल किए जाते रहे हैं, जो आज भी प्रासंगिक और कारगर हैं। तालाब, बावड़ियां और कुंड जैसी जल संरचनाएं वर्षा जल को संचित करने में हमेशा मददगार रही हैं। हमारे यहां वैज्ञानिक ढंग से बनाए गई झीलें और तालाब ग्रामीण जल आपूर्ति का आधार रहे हैं। देश के सभी क्षेत्रों में लोगों ने जल संरक्षण के कोई न कोई उपाय विकसित किए। आज बढ़ते जल संकट से निपटने के लिए जल संरक्षण के पारंपरिक और आधुनिक तकनीकों को एक साथ अपनाने की जरूरत है। देश जल संचय के प्रभावी साधन के तौर पर स्वीकार किए गए कुओं, बावड़ियों, तालाबों, जोहड़ों और झीलों की फिक्र करना हमने छोड़ दिया है। जल संरक्षण और पारंपरिक जलस्रोतों की सार-संभाल हमारी समृद्ध परपंरा रही है, पर हाल के दशकों में अपने पुरखों की इस परपंरा को बिसरा दिया है।

भारत में जल संकट एक गंभीर समस्या बनता जा रहा है। इसे हल करने के लिए प्रभावी उपायों की आवश्यकता है। इसके लिए वर्षा जल संचय को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, ताकि बारिश का पानी व्यर्थ न जाए और भूजल स्तर बढ़े। बूंद-बूंद और फव्वारा सिंचाई जैसी कृषि तकनीकों को अपना कर पानी की बर्बादी रोकी जा सकती है। शहरी क्षेत्रों में औद्योगिक और घरेलू जल का पुनः उपयोग करने के लिए जल पुनर्चक्रण और अपशिष्ट जल उपचार अनिवार्य किया जाना चाहिए। घरेलू स्तर पर नल बंद रखने, कपड़े और बर्तन धोने में कम पानी का उपयोग करने जैसी कम पानी की खपत करने वाली आदतों को अपनाना होगा। कम पानी में उपजने वाली फसलों, जैसे बाजरा, ज्वार और दालों के उत्पादन को बढ़ावा देना होगा।

जल संकट के समाधान के लिए सरकार कई योजनाओं पर काम कर रही रही है। । केंद्र सरकार ने जल जीवन मिशन के तहत हर घर में नल जल उपलब्ध का लक्ष्य रखा है। गंगा नदी के पुनर्जीवन के लिए नमामि गंगे योजना के तहत काम किया रहा है। । भूजल स्तर में में सुधार के लिए अटल भूजल योजना में देश भर काम किया जा रहा । हाल में सरकार ने लोकसभा में बताया कि वह सात राज्यों गुजरात, हरियाणा, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के 80 जिलों में जल संकट से ग्रस्त क्षेत्रों में अटल भूजल योजना' लागू कर रही है, जिसका उद्देश्य सतत भूजल प्रबंधन के माध्यम से भूजल स्तर में गिरावट को रोकना है। अमृत सरोवर योजना के तहत भी गांव- गांव में यह काम किया जा रहा है।

सरकार के प्रयास अपनी जगह हैं, लेकिन यह काम सिर्फ सरकार के भरोसे नहीं छोड़ा जाना चाहिए। जल संकट का समाधान तभी हो सकता है, जब आम आदमी भी पहल करे। सरकार कई बार कह चुकी है कि देश में पानी की कमी नहीं है, पर पानी का प्रबंधन एक बड़ा मसला है। यह काम जनता की भागीदारी से ही किया जा सकता है। नागरिकों को पानी की बचत और पारंपरिक जल संरचनाओं के संरक्षण के लिए जागरूक करना होगा। यदि जल संसाधनों की बर्बादी नहीं रोकी गई और पारंपरिक जल संरक्षण प्रणालियों को पुनर्जीवित नहीं किया गया, तो भविष्य में स्थिति और भयावह हो सकती है। जल एक सीमित संसाधन है। इसकी हर बूंद अनमोल है। इसलिए जल संरक्षण को जन-आंदोलन बनाना होगा और सरकार, समाज तथा प्रत्येक व्यक्ति को मिल कर इस दिशा में ठोस कदम उठाने होंगे। ऐसा होने पर ही सबकी प्यास बुझ सकती है।

पेड़ों को बचाने की जिम्मेदारी

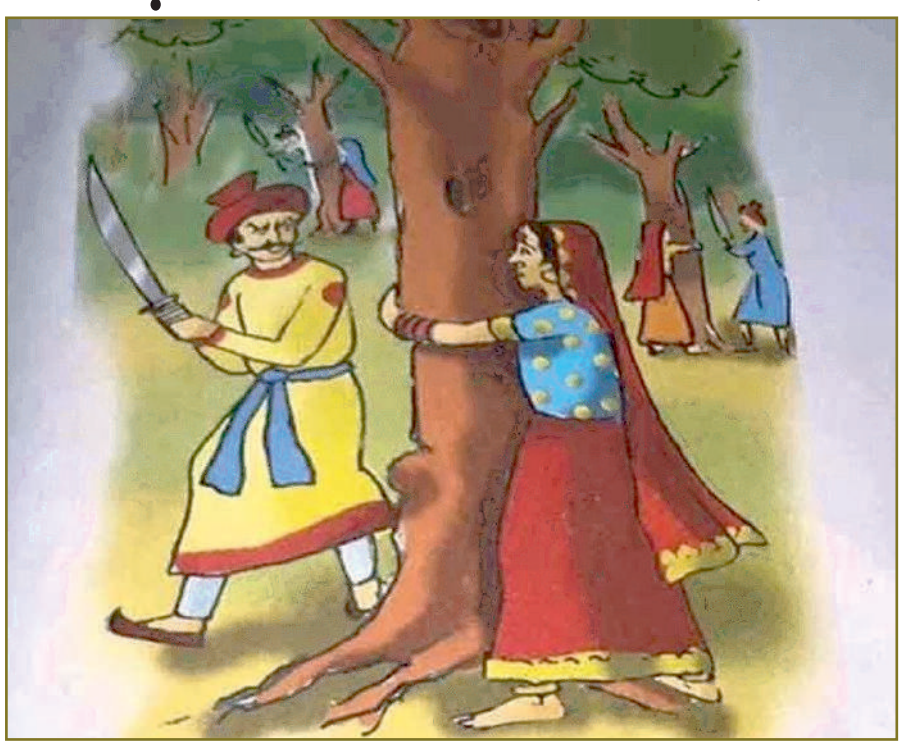

हाल में सुप्रीम कोर्ट ने टिप्पणी की कि बड़ी संख्या में पेड़ों को काटना इंसान की हत्या से भी अधिक जघन्य अपराध है। यह पर्यावरण संरक्षण की गंभीरता को रेखांकित करता है, खासकर तब जब जलवायु परिवर्तन और चरम मौसम की घटनाएं बढ़ रही हैं। भारतीय वन अनुसंधान संस्थान के अनुसार, एक परिपक्व वृक्ष सालाना औसतन 20 से 40 किलोग्राम कार्बन डाईआक्साइड सोखता है। इसके अलावा, पेड़ मिट्टी के कटाव को रोकते हैं, जलवायु को संतुलित रखते हैं और शहरी क्षेत्रों में तापमान को नियंत्रित करने में मदद करते हैं। दरअसल शहरीकरण और बुनियादी ढांचे के विकास के कारण भारत में वन क्षेत्रों में तेजी से गिरावट आई है। ग्लोबल फारेस्ट वाच मानिटरिंग परियोजना के आंकड़ों के अनुसार, 2000 से 2020 के बीच भारत ने लगभग 2.33 मिलियन हेक्टेयर वन क्षेत्र खो दिया। इसमें शहरी विस्तार, उद्योगीकरण और अवैध वृक्ष कटाई बड़ी वजहें रहीं।

पेड़ों के संरक्षण के लिए कई देशों ने कड़े कानून लागू किए हैं, जिनसे भारत प्रेरणा ले सकता है। जर्मनी में 'ट्री प्रोटेक्शन एक्ट' के तहत हर पेड़ को काटने से पहले सरकारी अनुमति लेना अनिवार्य है। जापान में 'सतोयामा पहल' के तहत ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में पारंपरिक कृषि, जंगलों और जैव विविधता के संरक्षण को बढ़ावा दिया जाता है। हरियाणा की 'प्राण वायु देवता योजना' भी इसका एक अच्छा उदाहरण है । इस योजना के तहत 75 वर्ष से अधिक उम्र के पेड़ों को पेंशन दी जाती है। इसी तरह देश में 'डिजिटल ट्री आधार' पहल के तहत पेड़ों का डिजिटल रिकार्ड तैयार किया जाता है, जिसमें उनकी प्रजाति, उम्र और स्थान जैसी जानकारी शामिल होती है। भारत में वन संरक्षण अधिनियम, 1980 तो मौजूद है, लेकिन इसका प्रभावी क्रियान्वयन चुनौती बना हुआ है। सिंगापुर की तर्ज पर हर नई इमारत के साथ पेड़ लगाना अनिवार्य किया जा सकता है। हर शहर में 'ग्रीन मास्टर प्लान' बनाया जाना चाहिए, जिसमें न्यूनतम हरित क्षेत्र सुनिश्चित किए जाएं। कार्बन क्रेडिट माडल की तर्ज पर व्यक्तिगत स्तर पर पेड़ लगाने वालों को आर्थिक लाभ दिया जा सकता है। कंपनियों को सीएसआर के तहत पौधारोपण के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। अवैध कटाई पर निगरानी बढ़ाने के लिए सेटेलाइट इमेजरी और ड्रोन तकनीक का उपयोग कर सकते है ।

पेड़ हमारी सभ्यता का आधार हैं। वे सिर्फ आक्सीजन नहीं देते, बल्कि हमारे पर्यावरण, जलवायु और संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र को संतुलित रखते हैं। असली बदलाव तभी आएगा जब सरकार और समाज इसे प्राथमिकता देंगे। पेड़ों को बचाना सिर्फ कानून का सवाल नहीं, हमारी जिम्मेदारी भी है। हमें सुनिश्चित करना होगा कि हम आने वाली पीढ़ियों को एक हरा-भरा और स्वस्थ ग्रह सौंपें ।

-विजय गर्ग

वैवाहिक संबंधों में बढ़ती संवेदनहीनता

समाज को भयभीत और बेचैन कर देने वाली आपराधिक घटनाओं में युवाओं की भागीदारी चिंताजनक है। वैवाहिक संबंधों में संवेदनहीनता के मामलों में युवक-युवतियों की दिशाहीनता सचमुच चिंतनीय हो चली है। साथ रहने जीने वाले इंसान के साथ क्रूरता आखिर कहां से आ रही है? शादीशुदा जीवन को मजबूती देने वाले साथ का भाव और ठहराव कहां खो गया है ? दुर्भाग्यपूर्ण है कि मन से चुने रिश्तों में भी यह स्थिति देखने को मिल रही है। हर तरह के सामाजिक पारिवारिक दबाव से परे प्रेम विवाह कर घर बसाने वाले भी साथ निभाने की समझ से दूर रहे हैं। इन स्थितियों को कहीं न कहीं दायित्व निर्वाह से भागने की मनःस्थिति से जोड़ कर देखा जा सकता है। हर मामले में हर मामले में खुद को प्रगतिशील मानने वाली यह पीढ़ी समझ के मोर्चे पर इतनी दिशाहीन है कि मन न मिलने पर वैवाहिक रिश्ते में अलगाव का उचित रास्ता चुनने के बजाय दुर्दांत अपराध कर बैठने का मार्ग पकड़ रही। रही है।

साझे जीवन में हिंसक घटनाओं का यह अंतहीन सिलसिला पारिवारिक व्यवस्था की नींव ढहाने वाला है। आक्रोश भर नहीं सोची-समझी रणनीति के तहत किसी अपने के जीवन को छीनने के मामले डराने और भरोसे को डिगाने वाले हैं। समाज की नींव मानी जाने वाली विवाह व्यवस्था के छीजते हालात को सामने रखते हैं। बीते दिनों उत्तर साथ मिल प्रदेश के मेरठ में पत्नी ने पेणकर पति की हत्या कर दी। घटना में बिखरते भरोसे के हालात को देखा जा सकता है कि इस मामले में युवती के माता-पिता ने ही उसके लिए कठोर दंड मांग की।

आरोप है कि इस विवाहिता ने अपने प्रेमी के साथ मिल कर पति को बर्बरता से मारने के बाद शव के टुकड़े कर ड्रम में रख कर चिनाई करा दी। यह कृत्य करने के बाद महिला प्रेमी के साथ घूमने चली गई इस मामले की योजना पिछले साल से ही बन रही थी। घटना को अंजाम देने से पहले युवती ने परिजनों और आस-पड़ोस के आस-पड़ोस के लोगों को रणनीति गुमराह करने के लिए पूरी बनाई । ।चिकित्सक को झूठ बो कर नींद की दवाइयां ली गई। यह दवा देकर पहले पति को बेहोश किया और फिर उसकी हत्या कर दी। युवती ने घटना को अंजाम देते समय अपनी पांच वर्षीय बेटी भविष्य की भी चिंता नहीं असल में ऐसे अधिकतर मामलों के पीछे अवैध संबंध, संबंध, धन का लालच या साथी से छुटकारा पाने जैसे अहम कारण होते हैं। दुखद हैं कि अब युवतियां भी भटकाव का शिकार हो रही हैं बिखराव भरा मानस न केवल पारिवारिक संबंधों से जुड़े दायित्वबोध से दूर कर रहा है, बल्कि स्वयं को थामने संभालने की सोच भी नदारद है। सशक्त होने की गलतफहमी में दूसरों पर भावनात्मक निर्भरता बढ़ रही है। इस तरह के मामले युवाओं में विफल विवाह से विषाक्त हुई मनःस्थिति की बानगी तो है ही, भावी जीवन में संबंधों के अव्यावहारिक रंग जीने और अवास्तविक स्वप्नों के भ्रमजाल में फंसने की तस्दीक करते हैं। नतीजतन, आत्मीय जुड़ाव की संवेदनाएं खत्म हो जाने का परिणाम कभी खुद को खत्म कर लेने, तो कभी साथी का जीवन छीन लेने तक ले आता है।

ऐसे मामलों की जड़ में लालच और अवैध संबंध भी होते हैं। जीवन भर साथ चलने के वादों से शुरू हुई यात्रा में अविश्वास और उलाहने जगह बना लेते हैं। दुखद है कि अंतर्जाल की दुनिया से किसी की जान लेने और बच निकलने की युक्तियां खोजने वाले युवक-युवतियां कानूनी ढंग से अपने रास्ते अलग करने की समझ नहीं जुटा पाते। उलझन के दौर में वे अपने बड़े-बुजुगों से परामर्श नहीं करते। एक उलझाऊ रिश्ते से निकलने के बजाय दूसरे दिशाहीन करने वाले संबंधों में उलझते जाते हैं। हालिया समय में तलाक के मामले तेजी से बढ़े हैं, ,यह भी है कि प्रेम की बुनियाद पर जिंदगी साथ बिताने का निर्णय करने वाले भी एक दूसरे के साथ बर्बरता करने से नहीं चूक रहे। युवा पीढ़ी यह भूल रही है कि प्रेम विवाह हो या परंपरागत रूप से परिजनों के के सुझाव से जोड़े गए रिश्ते, निबाह के लिए समर्पण का भाव आवश्यक है। दोनों ही ओर से साझी जिंदगी में भरोसे के भाव को पोषण मिलना जरूरी है। । कुछ समय पहले उच्चतम न्यायालय कहा था कि सहनशीलता और सम्मान शादी की बुनियाद है। इतना नहीं, शादी को जिंदगी की नई शुरुआत भी माना जाता है। नए रिश्तों की नई दुनिया में कुछ जिम्मेदारियां और चुनौतियां भी मिलती हैं। दायित्वों का भान और आपसी भरोसा न हो, तो वैवाहिक संबंध डगमगाने लगता है।

दौर में छोटी-छोटी बातों पर पति-पत्नी अपनी राहें अलग कर रहे हैं। ऐसे में साथ, संवाद और संवेदनाएं ही अहम हैं। ऐसा न होने पर वैवाहिक रिश्ते में बंधे युगल को समझना चाहिए कि आपराधिक और नकारात्मक गतिविधि को अंजाम देने से बेहतर अलग होने की सही राह चुन लें। हाल के वर्षों में ऐसे मामले तेजी से बढ़े हैं, जिनमें शादीशुदा जीवन की उलझनों को सुलझाने में न मध्यस्थता काम करती है और न ही आपसी समझ से कोई रास्ता निकल पाता है । कानूनी दबाव ऐसे संबंधों को पुनर्जीवन दे ही नहीं सकता। ऐसे में व्यावहारिक रूप से देखा जाए तो अलग हो जाना दोनों ही पक्षों के जीवन की सहजता के लिए जरूरी है

युवाओं को यह समझना होगा कि जिम्मेदारी रिश्तों को जोड़ने के समय ही नहीं आती, टूटने के दौर में भी हिस्से आती है। बिखराव में भी ठहराव आवश्यक होता है। ऐसे कठिन समय में अपने ही मन को समझना और समझाना जरूरी होता है। जुड़ाव के समय जज्बाती मोर्चे पर बहुत से लोग साथ रहते हैं। जबकि वैवाहिक संबंध के टूटने का समय अकेले पड़ जाने का दौर होता है यह वक्त महिला और पुरुष दोनों के लिए कठिनाई भरा होता है। हमारी सामाजिक पारिवारिक व्यवस्था में वैवाहिक संबंध का बिखरना कई सवालों के घेरे में ले आता है। इन्हीं हालात में न केवल गुमराह करने वाले लोग जीवन का हिस्सा बन जाते है, बल्कि आपराधिक घटनाएं भी होती हैं। एक और टूटते बिखरते मन का उलझाव अपराध करने की कगार पर ले जाता है, दूसरी ओर अवैध संबंधों में प्रेम के नाम पर देखे और दिखाए जा रहे झूठे सपने भ्रमित करते हैं। दुर्भाग्यपूर्ण है कि इस मोड़ पर अपराध कर बैठना तो जीवन को सदा के लिए दिशाहीन कर देता है। जरूरी है कि जीवन को व्यावहारिक धरातल पर समझने और जीने का प्रयास करें।

-विजय गर्ग

गुरुत्वाकर्षण से ज्यादा तो सशक्त है सत्ताकर्षण

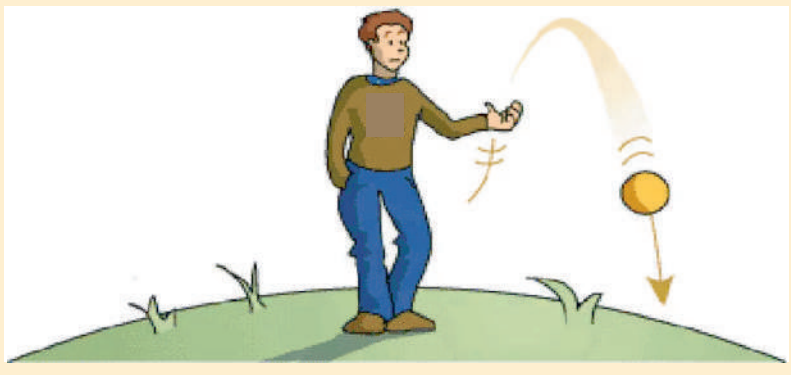

सत्ताकर्षण गुरुत्वाकर्षण से भी अधिक बलवान होता है। इस आकर्षण की खोज के लिए किसी न्यूटन की आवश्यकता नहीं पड़ी। इसके प्रभाव से सत्ता तक पहुंचने और उससे चिपके रहने के लिए लोग क्या-क्या नहीं करते हैं। जैसे गुरुत्वाकर्षण पूरी पृथ्वी पर समान रूप से लागू है, वैसे ही सत्ताकर्षण सिर्फ हमारे देश में नहीं, हर देश में है। इतिहास में कई घटनाओं का जिक्र होता है कि अमुक ने सत्ता के लिए अपने बाप को मार डाला तो अमुक सौ भाइयों को मारकर सत्तासीन हुआ। इसके अतिरिक्त गद्दारी और वफ़ादारी के अनेक किस्से हैं जो सत्ता से प्रेरित हैं। और अब बूथ कैप्चरिंग के बाद ईवीएम मैनेजमेंट जैसी नई तरकीब चर्चा में हैं।

अमेरिका के राष्ट्रपति दुबारा सत्ता मिलने पर किसी राष्ट्र को अपना प्रांत बनाने पर आमादा हैं तो किसी देश पर टैरिफ लादने के लिए बेताब हैं। किसी देश के खनिज पर कब्जा करना चाहते हैं तो किसी देश को बमबारी की धमकी दे रहे हैं। जनाब ने सत्ताकर्षण से प्रभावित होकर अपने देश के संविधान को बदलने की मंशा व्यक्त की है। वहां के संविधान के अनुसार कोई भी व्यक्ति दो बार से ज्यादा राष्ट्रपति के पद पर नहीं रह सकता। पर ट्रम्प इस चक्कर में हैं कि कोई ट्रम्प कार्ड चलाकर खुद को तीसरी बार और यदि संभव हो तो अनंत काल के लिए राष्ट्रपति बनाए रखें।

रूस में ऐसा हो ही चुका है, चीन में हो रहा है। तुर्किए इसी राह पर है ही। हमारे देश में ऐसी मनाही तो नहीं है पर अघोषित तौर पर एक पार्टी अपने पचहत्तर वर्ष से अधिक के नेताओं को मार्गदर्शक दीर्घा में बैठाना पसंद करती है। दूसरे को मार्गदर्शन दीर्घा में बैठाना जितना आसान है खुद को उस दीर्घा में बैठाना उतना ही कठिन है। ऐसे में यदि पार्टी का कोई सशक्त नेता पचहत्तर वर्ष का हो जाए तो इस नीति में संशोधन होगा या नहीं, यह भविष्य के गर्भ में है। वैसे जो प्रतिक्रियाएं अभी तक आई हैं उससे तो यही लग रहा है कि बक़ौल एनिमल फार्म, ऑल आर इक्वल बट सम आर मोर इक्वल देन अदर्स। तो जो 'मोर इक्वल' है उस पर यह पचहत्तर का नियम लागू नहीं होगा।

नापाक पाक में तो यह जानते हुए भी कि सत्तासीन होने के बाद जेल का निवासी बनना है या फांसी के फंदे पर झूलना है, लोग सत्ता के मोह को छोड़ नहीं पाते हैं। वैसे जेल में बंद पाक के पूर्व राष्ट्रपति को नोबेल शांति पुरस्कार का झुनझुना दिखाया तो जा रहा है। कुछ हद तक यही बात पाक की इज्जत को खाक करके बने बांग्लादेश की भी है। वहां शांति के लिए नोबेल पुरस्कार से पुरस्कृत व्यक्ति अशांति फैलाकर सत्तासीन हो चुका है। स्वयं सहायता समूह का प्रणेता चीन की पर-सहायता पर इतरा रहा है।

-विजय गर्ग

न्यूनतम किराए का बड़ा टिकट

न्यूनतम किराया बढ़ोतरी के आयाम और पैगाम के बीच भविष्य की परिवहन अनुशंसा समझी जा सकती है। हिमाचल के यातायात साधनों की सीमित परिपाटी ने यात्री और यात्रा का विवरण बदला है। सडक़ परिवहन पर निर्भरता का आलम यह है कि हर गांव में ट्रैफिक जाम का अलार्म बज रहा है। बहरहाल सुक्खू सरकार ने अपने थैले से न्यूनतम बस किराए की पर्ची निकाल दी यानी अब बस पर बैठ कर उतरने से पहले कम से कम दस रुपए का टिकट तो लगेगा ही। इसे हम आलोचना की दृष्टि से देखें तो विपक्ष के पास खुला मैदान है, लेकिन परिवहन की मांग और इसके प्रबंधन के लिहाज से यह एक आवश्यक कदम था। इससे न केवल निजी बस आपरेटरों की मांग पूरी हो रही है, बल्कि स्थानीय ट्रांसपोर्ट के मायने भी बदल रहे हैं, लेकिन इस फैसले को न्यायोचित ठहराने के लिए बसों के रूट और समय सारिणी के अनुशासन भी निर्धारित करने होंगे। परिवहन अब एक मांग नहीं जीवनशैली की आवश्यकता और यात्रियों के व्यवहार की पुष्टि है। हिमाचल में सार्वजनिक परिवहन की जरूरतें गांव से शहर, शहर से शहर, शहरों के भीतर, अंतरराज्यीय डेस्टिनेशन, धार्मिक दर्शन, पर्यटन व आर्थिकी के विभिन्न पहलुओं से जुड़ती हैं। चामुंडा से वृंदावन बस सेवा की शुरुआत का आयाम अलग है, जबकि चामुंडा से धर्मशाला, पालमपुर, नगरोटा बगवां व कांगड़ा बस सेवा का अभिप्राय अलग है। इन दोनों सेवाओं को अलग-अलग परिप्रेक्ष्य में समझना होगा। शहरी विकास या नए नगर निगमों के प्रस्ताव को क्या हमने सार्वजनिक परिवहन की बदलती जरूरतों में समझा। क्या नगर निगमों से जुड़े गांवों को ऐसी परिवहन सुविधाओं से जोड़ा ताकि सडक़ों पर वाहनों का दबाव घटे। यात्रा सुविधाजनक, समय के अनुरूप और गतिशीलता के साथ चलाने के लिए परिवहन विभाग को अलग-अलग भौगोलिक, सामाजिक, व्यावसायिक, धार्मिक व पर्यटन मानचित्र बनाने पड़ेंगे।

यह महज न्यूनतम बस किराए को पांच से दस रुपए करने की अनुशंसा नहीं, बल्कि यह भी देखना होगा कि ऐसी किराया वृद्धि से एचआरटीसी कैसे आत्मनिर्भर हो पाती है। न्यूनतम किराया वृद्धि के फलक पर अगर कई कारण मौजूद हैं, तो कई निवारण भी पैदा करने पड़ेंगे। कम से कम इससे स्थानीय बस सेवा का नेटवर्क ही स्थापित हो जाए, ताकि जनता के अलावा पर्यटकों को हमेशा टैक्सियों के मुंह मांगे दाम न चुकाने पड़ें। न्यूनतम किराया वृद्धि से पूरा परिवहन क्षेत्र संबोधित नहीं होता, खासतौर पर जहां तक इससे जुड़ी सेवाओं का ताल्लुक है। टैक्सियों की दरें तय न होने के कारण यह परिवहन में माफिया की तरह आपरेट हो रहा है। पर्यटक सीजन का नकारात्मक पहलू टैक्सियों की मनमानी दरें हैं, जबकि महानगरों में भी ओला, उबर तथा ऐसी ही ऑनलाइन परिवहन सेवाओं की उपयोगिता ने निजी वाहनों के उपयोग को घटा दिया है। चंडीगढ़ में अगर किसी को पीजीआई जाना हो या नोएडा-गुडग़ांव से दिल्ली एयरपोर्ट या रेलवे स्टेशन जाना हो, तो टैक्सियों के पैमाने किराया वहन करने में समर्थ हैं, जबकि शिमला, मकलोडगंज या मनाली से हवाई अड्डों तक पहुंचना अधिकतम दरों के भी रिकार्ड तोड़ देता है। ऐसे में हर तरह के किराए में एक न्यूनतम सीमा तय हो। रज्जु मार्गों पर भी किराए की सीमा तय होनी चाहिए। मसलन धर्मशाला से मकलोडगंज अगर स्काई -वे सफर से तय करना हो तो एकतरफा 450 रुपए लगते हैं, यह हिमाचल की परिवहन जरूरतों का विकल्प कैसे हो सकता। निजी बसों के लिए न्यूनतम बस किराए की बढ़ोतरी से व्यवसाय को संबल मिलेगा, तो देखना यह होगा कि एचआरटीसी इससे कितना संभल पाती है। जाहिर तौर पर परिवहन निगम की आय के बड़े स्रोत अंतरराज्यीय बस सेवाएं रही हैं, लेकिन प्राइवेट बस आपरेटरों ने वोल्वो जैसी बसें उतार कर अपनी पैठ बना ली है। ऐसे में निगम प्रबंधन को अपनी विश्वसनीयता को लाभकारी बनाने के लिए अंतरराज्यीय बस सेवाओं की उपयोगिता को यात्री संतुष्टि से जोड़ते हुए, इन्हें मांग के अनुरूप बनाना होगा। दूसरी ओर न्यूनतम किराए से अधिकतम सफलता की खोज लोकल रूट्स व शहरी परिवहन में करनी होगी। बीबीएन के अलावा हर नगर निगम क्षेत्र में एचआरटीसी को परिवहन सर्वेक्षण करते हुए सार्वजनिक परिवहन के ऐसे रूट पेश करने होंगे, ताकि निजी वाहन मालिक भी इन्हीं सेवाओं के प्रति प्रेरित हों।

10 अप्रैल महावीर जयंती : वैज्ञानिक जीवन शैली के प्रणेता भगवान महावीर

डॉ. वीरेन्द्र भाटी मंगल

भगवान-महावीर के सिद्धांत आज वैज्ञानिक दृष्टि से सर्वमान्य हो चुके हैं। महावीर द्वारा बताये गये अहिंसक मार्ग पर चलने से स्वस्थ, समृद्ध एवं सुखी समाज का निर्माण संभव है। मानव समाज के विकास के लिए शांति आवश्यक है। सभी वर्गों के परस्पर विकास से अनेक समस्याओं का समाधान संभव है। महावीर की दृष्टि में अभाव और अत्यधिक उपलब्धता दोनों ही हानिकारक हैं। भगवान्-महावीर की शिक्षाओं से पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों का असंतुलन, युद्ध, आतंकवाद, हिंसा, धार्मिक असहिष्णुता व गरीबों के आर्थिक शोषण जैसी समस्याओं के समाधान प्राप्त किये जा सकते हैं। भगवान्-महावीर ने छब्बीस सौ वर्ष पूर्व वैज्ञानिक रूप में एक ऐसी अहिंसक जीवन शैली जीने की शिक्षा दी, जिससे स्वस्थ समाज की संरचना का साकार रूप सामने आया। सही मायने में स्वस्थ समाज की स्थापना के लिए अहिंसा का प्रषिक्षण की ही सर्वमान्य है।

महात्मा गांधी का दर्शन कहता है, हमें पशु से भिन्न करने में एकमात्र अहिंसा ही है। व्यक्ति हिंसक है, तो फिर वह पशु के समान है। मनुष्य होने या बनने के लिए व्यक्ति में अहिंसा का भाव होना आवश्यक है। गांधी कहते है कि हमारा समाजवाद अथवा साम्यवाद अहिंसा पर आधारित होना चाहिए। जिसमें मालिक-मजदूर एवं जमींदार-किसान के मध्य परस्पर सद्भावपूर्ण व्यवहार हो। निःशस्त्र अहिंसा की शक्ति किसी भी परिस्थिति में सशस्त्र शक्ति से श्रेष्ठ ही होगी। व्यक्ति को जीवन में बहादुरी, निर्भीकता, स्पष्टता, सत्यनिष्ठा का इस हद तक विकास कर लेना कि तीर-तलवार उसके आगे तुच्छ जान पड़ें, यही अहिंसा की साधना है। शरीर की नश्वरता को समझते हुए, उसके न रहने का अवसर आने पर विचलित न होना ही अहिंसा है। मन, वचन और कर्म से किसी की हिंसा न करना अहिंसा कहा जाता है। यहाँ तक कि वाणी भी कठोर नहीं होनी चाहिए। फिर भी अहिंसा का इससे कहीं ज्यादा गहरा अर्थ है।

आज के दौर में शांतिप्रिय इंसान भी कहने लगा है कि अहिंसा अब सिर्फ उपदेश की चीज बन गई है। उसमें न तो किसी की आस्था है और न उससे किसी परिवर्तन की उम्मीद की जा सकती है। इस सवाल और सोच में समस्याओं से पलायन की प्रवृत्ति छिपी है। इसमें बुद्ध, महावीर और गांधी के सिद्धांतों पर अविश्वास की छाया भी है, जिन्होंने न केवल अहिंसा को अपना जीवन बनाया था, बल्कि प्रयोगों से साबित भी कर दिया था, कि अहिंसा एक सकारात्मक ताकत का नाम है। कुछ वर्षो पहले जैन संत आचार्य तुलसी ने इस अवधारणा को जन्म दिया था कि अगर हिंसा का प्रशिक्षण दिया जा सकता है, तो अहिंसा का क्यों नहीं? दरअसल हिंसा के लिए हमारा मस्तिष्क बहुत प्रशिक्षित है, इस आधार पर यह मान्यता स्थापित कर दी गई है कि हिंसा समस्या का समाधान है जबकि अहिंसा प्रशिक्षण से व्यक्ति के मानस को बदला जा सकता है।

वर्तमान दौर में लोगों का चिंतन इस ओर विकसित हो रहा है कि हिंसा के बिना कुछ नहीं हो सकता, न कोई सुनता है। आज सरकारों से मांगे मनवाने के लिए भी लोग हिंसा का सहारा लेते हैं, तो वहीं सरकारें भी इस स्थिति से निपटने के लिए पुलिस से लाठी-गोली चलवाने के लिए मजबूर दिखती हैं यानी हिंसा एक हथियार हैं जो अहिंसा को मात देने में लगा है। दार्शनिक आचार्य महाप्रज्ञ कहते है कि अहिंसा में हमारी आस्था तो है, मगर उसमें गहराई नहीं है। इसलिए जरूरत इस बात की है कि अहिंसा में आस्था जगाने वाले प्रशिक्षण की व्यवस्था हो। जैसे पुलिस और सेना की जमात खड़ी की जा रही है, वैसे ही अहिंसक सैनिकों की जमात भी खड़ी की जाए, तभी अहिंसा की चेतना को जन-जन में प्रसारित किया जा सकता है। महाप्रज्ञ कहते है कि हिंसक ताकतों का सामने करने के लिए अहिंसक व्यक्तित्व,

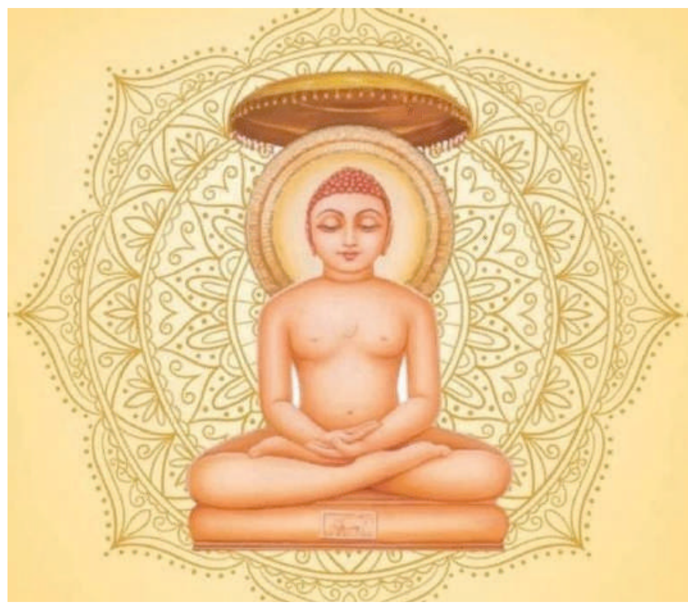

अहिंसा प्रशिक्षण के माध्यम से तैयार कर ही इन समस्याओं से निजात पायी जा सकती है।

मन-वचन-काया से किसी भी जीव को किंचित्‌मात्र भी दुःख न हो। जब यह सिद्धांत हमारे निश्चय और जागृति में दृढ़ हो जाएगा, तभी हमअहिंसा के पालक बन सकते हैं।देश भर में अहिंसा यात्रा कर रहे तेरापंथ धर्मसंघ के अधिशास्ता आचार्य महाश्रमण का मानना है कि शांति केवल अहिंसा से ही संभव है पर अहिंसा का अर्थ इतना ही नहीं है कि किसी जीव की हत्या न की जाये. दूसरों को पीड़ा न पंहुचाना, उनके अधिकारों का हनन करना भी अहिंसा है। इस अहिंसा की पहले भी आवश्यकता थी और आज भी है। पर आज विनाशक शस्त्रों के अंबार लगे हुए हैं. गरीबी एवं अभाव के कारण लोग नारकीय जीवन जीने के लिए विवश हैं। सैनिक छावनियों में लाखों-लाख सैनिक प्रतिदिन युद्धाभ्यास करते हैं. हिंसा की इतनी सूक्ष्म जानकारी और प्रशिक्षण दी जा रही है कि वर्षों तक यह क्रम चलता रहता है। हर वर्ष उसकी नयी-नयी तकनीक खोजी जाती है। नये-नये आधुनिक हथियार, नये-नये टैंक सामने आ रहे है। हिंसा के प्रशिक्षण के लिए प्रचार-प्रसार पर मुट्ठी भर निहित स्वार्थी शक्तियों द्वारा अकूत संसाधन लगाये जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में मन में एक विकल्प उठता है कि इतनी ट्रेनिंग दी जाती है, तो क्या अहिंसा प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं है?

निश्चय ही आवश्यकता तो है पर सवाल यह है कि उसे पूरा कैसे किया जाये? क्या केवल धर्मशास्त्रों के पढ़ने मात्र से अहिंसा जीवन में उतर आयेगी? क्या केवल प्रवचन सुनने मात्र से अहिंसा का जीवन में अवतरण हो जायेगा? नहीं। उसके लिए हमें अहिंसा के प्रशिक्षण पर विचार करना होगा। यह सोचना होगा कि हिंसा के क्या कारण हैं, तथा कैसे उनका निवारण किया जा सकता है। हिंसा के दो कारण हैं- आंतरिक एवं बाहरी।

हिंसा के आंतरिक कारण में सबसे बड़ा पोषक कारण है-तनाव। वही आदमी हिंसा करता है, जो तनाव से ग्रस्त रहता है। हिंसा का दूसरा पोषक कारण है- रासायनिक असंतुलन। हिंसा केवल बाहरी कारणों से ही नहीं होती, उसके भीतरी कारण भी होते हैं। हमारी ग्रंथियों में जो रसायन बनते हैं, उन रसायनों में जब असंतुलन पैदा हो जाता है, तब व्यक्ति हिंसक बन जाता है। हिंसा का तीसरा पोषक कारण है- नाड़ी तंत्रीय असंतुलन. नाड़ी तंत्रीय असंतुलन होते ही आदमी हिंसा पर उतारू हो जाता है। हिंसा का चौथा कारण है- निषेधात्मक दृष्टिकोण। घृणा, ईर्ष्या, भय, कामवासना ये सब निषेधक दृष्टिकोण हैं। उनसे भावतंत्र प्रभावित होता है और मनुष्य हिंसा में प्रवृत्त हो जाता है।

आज युवाओं के सामने ऐसे आदर्श व्यक्तित्वों की कमी है, जिसे वो अपना आदर्श व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार कर सकें। महात्मा गांधी हर पीढ़ी के युवाओं के आदर्श रहे हैं, एवं होने भी चाहिए। वर्तमान में हमारा समाज सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा है। ऐसे दौर में सरकारों को चाहिए कि सामाजिक परिवर्तनों को सही दिशा देने में गांधीजी के सिद्धांतोंको जन-जन तक पहुंचाने के साथ-साथ अहिंसा प्रशिक्षण के लिए भी पृष्ठभूमि तैयार करनी चाहिए। ताकि देश के युवाओं को अहिंसा प्रशिक्षण देकर स्वस्थ समाज निर्माण की दिशा में अग्रसर किया जा सके।

सितारों का प्रकाश कभी मंद नहीं पड़ा करता है !

(भारत कुमार के निधन पर विशेष आलेख)

जब-जब भी हमारे कानों में 'भारत का रहने वाला हूं, भारत की बात सुनाता हूं...' गीत के बोल गूंजते हैं, तो हमें बरबस ही याद आ जाती है -मनोज कुमार की। आपको देश-दुनिया 'भारत कुमार' के नाम से जानती है। पाठकों को बताता चलूं कि मनोज कुमार का असली नाम हरिकृष्ण गिरि गोस्वामी था।इनका जन्म 24 जुलाई, 1937 को एबटाबाद में हुआ था, जो अब पाकिस्तान में है। उनका जन्म एक पंजाबी हिन्दू ब्राह्मण परिवार में हुआ था तथा बंटवारे के दौरान उनका परिवार दिल्ली आकर बस गया। संघर्षों से भरे उन दिनों में उन्होंने अपने सपनों को जीवित रखा और शिक्षा को अपनी ताकत बनाया। पाठकों को बताता चलूं कि मनोज कुमार ने दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित हिन्दू कॉलेज से अपनी ग्रेजुएशन पूरी की थी। पढ़ाई के इन वर्षों ने न सिर्फ उनके विचारों को आकार दिया, बल्कि भीतर छुपे कलाकार को भी बाहर लाने का रास्ता दिखाया। कॉलेज के बाद उन्होंने फिल्मी दुनिया की ओर कदम बढ़ाया और फिर पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा।प्रसिद्ध एक्टर-डायरेक्टर मनोज कुमार का हाल ही में 87 साल की उम्र में मुंबई के कोकिलाबेन अस्पताल में निधन हो गया। वे काफी समय से लीवर सिरोसिस से जूझ रहे थे। वास्तव में, उनका हमारे बीच नहीं रहना एक बहुत बड़ी क्षति है। आपको शत शत नमन और विनम्र श्रद्धांजलि। वे

पटकथा लेखक, संगीतकार और सम्पादक थे तथा उनको भारतीय सिनेमा इतिहास के सबसे सफल और बेहतरीन अभिनेताओं में से एक माना जाता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि उनकी फिल्मों ने राष्ट्रीय गौरव की भावना को जगाया और ये पीढ़ियों को सदैव प्रेरित व प्रोत्साहित करती रहेंगी।सच तो यह है कि उनके अविस्मरणीय अभिनय ने हमारी सनातन संस्कृति को समृद्ध किया है।बहुत कम लोग ही यह बात जानते होंगे कि मनोज कुमार भारत के पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के कहने पर 'उपकार' फिल्म बनाई थी और यही वह फिल्म थी जिससे उन्हें भारत कुमार नाम मिला था। पाठकों को बताता चलूं कि वे विशेष रूप से अपनी देशभक्ति फिल्मों के लिए जाने जाते थे। उपकार, पूरब-पश्चिम, क्रांति, रोटी-कपड़ा और मकान उनकी बेहद कामयाब फिल्में रहीं। मनोज कुमार की सुपरहिट फिल्में क्रमशः शहीद(1965), उपकार (1965), पत्थर के सनम(1967), पूर्व-पश्चिम (1967),शोर(1972), रोटी कपड़ा और मकान (1974) तथा क्रान्ति (1981) में आईं। पाठकों को बताता चलूं कि वर्ष 1965 में मनोज कुमार देशभक्ति पर बनी फिल्म शहीद में स्वतंत्रता सेनानी शहीद भगत सिंह के रोल में नजर आए थे। फिल्म जबरदस्त हिट रही और इसके गाने 'ऐ वतन, ऐ वतन हमको तेरी कसम', 'सरफरोशी की तमन्ना' और 'मेरा रंग दे बसंती चोला' काफी पसंद किए गए थे। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि उपकार (1967) फिल्म का गाना 'मेरे देश की धरती सोना उगले..' आज भी सबसे बेहतरीन देशभक्ति गानों में गिना जाता है। फिल्म के गाने की पॉपुलैरिटी देखते हुए मनोज कुमार को मीडिया ने भारत कहना शुरू कर दिया और फिर उन्हें भारत कुमार कहा जाने लगा। इतना ही नहीं, मनोज कुमार ने अपने निर्देशन में बनी फिल्म क्रांति (1981) में दिलीप कुमार को डायरेक्ट किया था। गौरतलब है कि वर्ष 1957 में बनी 'फैशन' उनकी पहली फिल्म थी, लेकिन बतौर अभिनेता उनके अभिनय की शुरुआत वर्ष 1960 में बनी फिल्म 'कांच की गुड़िया' से हुई। इसके बाद उन्होंने 'पिया मिलन की प्यास' और 'रेशमी रुमाल' फिल्म में काम किया, लेकिन उन्हें फिल्म 'हरियाली और रास्ता' से खास पहचान मिली। वास्तव में सच तो यह है कि 'हरियाली और रास्ता' और 'वो कौन थी', जैसी फिल्मों ने मनोज कुमार को मुख्यधारा में स्थापित कर दिया। इसके बाद उन्होंने 'हिमालय की गोद में' तथा अन्य फिल्मों में अभिनय किया। कहना ग़लत नहीं होगा कि उनकी फिल्म 'शहीद' से लेकर 'उपकार', 'पूरब और पश्चिम', 'रोटी कपड़ा और मकान' तक, हर एक किरदार में उनकी शिक्षा, सोच और राष्ट्र के प्रति भाव स्पष्ट तौर पर दिखाई देता है।उल्लेखनीय है कि मनोज कुमार को 7 फिल्म फेयर पुरस्कार मिले थे। पहला फिल्म फेयर 1968 में फिल्म उपकार के लिए मिला था। उपकार ने बेस्ट फिल्म, बेस्ट डायरेक्टर, बेस्ट स्टोरी और बेस्ट डायलॉग के लिए चार फिल्म फेयर जीते। वर्ष 1992 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया तथा वर्ष 2016 में उन्हें तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी द्वारा फिल्म इंडस्ट्री के सबसे प्रतिष्ठित दादा साहेब फाल्के अवॉर्ड से नवाजा गया था। उपलब्ध जानकारी के अनुसार बचपन से ही मनोज कुमार, अभिनेता दिलीप कुमार के बहुत बड़े प्रशंसक थे। दिलीप साहब की फिल्म शबनम (वर्ष 1949) मनोज कुमार को इतनी पसंद आई थी कि उन्होंने उसे कई बार देखा। फिल्म में दिलीप कुमार का नाम मनोज था। जब मनोज कुमार फिल्मों में आए तो उन्होंने दिलीप कुमार के नाम पर ही अपना नाम भी मनोज कुमार कर लिया। संक्षेप में कहें तो अभिनय में मनोज कुमार,दिलीप कुमार की शैली को थामकर आगे बढ़े। बहुत कम लोगों को ही शायद इस बारे में जानकारी होगी कि लगातार फ्लॉप होती फिल्मों से परेशान जब अमिताभ बच्चन मुंबई छोड़कर अपने मां-बाप के पास दिल्ली वापस जा रहे थे, तब मनोज कुमार ही ऐसे शख्स थे, जिन्होंने अमिताभ को रोका और अपनी फिल्म 'रोटी, कपड़ा और मकान' में मौका दिया। पाठकों को बताता चलूं कि उनकी फिल्म 'यादगार'(1970) का गीत इकतारा बोले तुन तुन क्या कहें ये तुमसे, सुन सुन' आज भी प्रासंगिक है। वास्तव में,अपने अभिनय, सकारात्मक सोच और सच्ची देशभक्ति से उन्होंने जो स्थान बनाया, वह केवल परदे तक सीमित नहीं था।सच तो यह है कि वह देश की आत्मा में रम-बस गए थे। कहना ग़लत नहीं होगा कि मनोज कुमार वह शख्सियत थे, जिन्होंने हमेशा भारतीय संस्कारों को जिया। जितना मां भारती से प्रेम किया उतना ही प्यार उन्होंने अपने माता-पिता से भी किया। एक इंटरव्यू के दौरान उन्होंने बताया था कि भारत के बंटवारे के दौरान सांप्रदायिक दंगे भड़के हुए थे। उस समय उनकी मां अपने बीमार छोटे बेटे कुकू के साथ तीस हजारी अस्पताल में भर्ती थी और दंगों की वजह से अस्पताल में डॉक्टरों द्वारा उन्हें इलाज नहीं मिल रहा था। वास्तव में डॉक्टर्स उनकी मां और भाई का ट्रीटमेंट ठीक से नहीं कर रहे थे और इसलिए उन्होंने डॉक्टर्स को मारा-पीटा भी था। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि मनोज कुमार न केवल भारतीय सिनेमा के लिए बल्कि इस देश के लिए एक अपूरणीय क्षति है। उनका सिने दौर अपने आप में एक मिसाल है। उनकी फिल्मों में समाजवाद, सामाजिक, नैतिक मूल्य व देशभक्ति की भावना, हमारी सांस्कृतिक विरासत नजदीक से दिखाई देती है। उन्होंने फिल्मों के माध्यम से शोषण, अन्याय और गरीबी के खिलाफ आवाज़ उठाई थी। यदि हम मनोज कुमार की फिल्मों को देखते हैं तो यह पाते हैं कि उनकी फिल्मों में गीत भी बहुत ही मधुर तथा अर्थपूर्ण हैं। अंत में, यही कहूंगा कि भारतीय सिने जगत का यह सितारा भले ही भौतिक रूप से आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन सितारों का प्रकाश कभी भी मंद नहीं पड़ता है, सितारे हमेशा चमकते ही रहते हैं। अभिनेता-फिल्मकार मनोज कुमार का जो दौर था, वह सदैव हम सभी के मानस पटल पर स्वर्णिम अक्षरों में अंकित रहेगा और हम सभी को सदैव देशभक्ति, संस्कारों, नैतिक मूल्यों और समाजवाद के लिए सकारात्मक प्रेरणा देता रहेगा।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

सुदामा दरिद्र क्यों ???

मेरे मन में सुदामा के सम्बन्ध में एक बड़ी शंका थी कि एक विद्वान-ब्राह्मण अपने बाल सखा कृष्ण से छुपाकर चने कैसे खा सकता है? आज भागवत के इस प्रसंग में छुपे रहस्य को आपसे साझा करना जरुरी समझता हूँ ताकि आप भी समाज में फैली इस भ्रान्ति को दूर कर सकें।

सुदामा की दरिद्रता, और चने की चोरी के पीछे एक बहुत ही रोचक और त्याग-पूर्ण कथा है- एक अत्यंत गरीब निर्धन बुढ़िया भिक्षा माँग कर जीवन यापन करती थी। एक समय ऐसा आया कि पाँच दिन तक उसे भिक्षा नही मिली वह प्रति दिन पानी पीकर भगवान का नाम लेकर सो जाती थी। छठवें दिन उसे भिक्षा में दो मुट्ठी चने मिले। कुटिया पे पहुँचते-पहुँचते उसे रात हो गयी। बुढ़िया ने सोंचा अब ये चने रात मे नही, प्रातःकाल वासुदेव को भोग लगाकर खाऊँगी। यह सोंचकर उसने चनों को कपडे में बाँधकर रख दिए और वासुदेव का नाम जपते-जपते सो गयी। बुढ़िया के सोने के बाद कुछ चोर चोरी करने के लिए उसकी कुटिया मे आ गये। चोरों ने चनों की पोटली देख कर समझा इसमे सोने के सिक्के हैं अतः उसे उठा लिया। चोरो की आहट सुनकर बुढ़िया जाग गयी और शोर मचाने लगी। शोर-शराबा सुनकर गाँव के सारे लोग चोरों को पकडने के लिए दौडे। चने की पोटली लेकर भागे चोर पकडे जाने के डर से संदीपन मुनि के आश्रम में छिप गये। इसी संदीपन मुनि के आश्रम में भगवान श्री कृष्ण और सुदामा शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। चोरों की आहट सुनकर गुरुमाता को लगा की कोई आश्रम के अन्दर आया है गुरुमाता ने पुकारा- कौन है ?? गुरुमाता को अपनी ओर आता देख चोर चने की पोटली छोड़कर वहां से भाग गये। इधर भूख से व्याकुल बुढ़िया ने जब जाना ! कि उसकी चने की पोटली चोर उठा ले गए हैं तो उसने श्राप दे दिया- ₹मुझ दीनहीन असहाय के चने जो भी खायेगा वह दरिद्र हो जायेगा ₹। उधर प्रातःकाल आश्रम में झाडू लगाते समय गुरुमाता को वही चने की पोटली मिली। गुरु माता ने पोटली खोल के देखा तो उसमे चने थे। उसी समय सुदामा जी और श्री कृष्ण जंगल से लकडी लाने जा रहे थे। गुरुमाता ने वह चने की पोटली सुदामा को देते हुए कहा बेटा ! जब भूख लगे तो दोनो यह चने खा लेना। सुदामा जन्मजात ब्रह्मज्ञानी थे। उन्होंने ज्यों ही चने की पोटली हाथ मे ली, सारा रहस्य जान गए। सुदामा ने सोचा- गुरुमाता ने कहा है यह चने दोनो लोग बराबर बाँट के खाना, लेकिन ये चने अगर मैने त्रिभुवनपति श्री कृष्ण को खिला दिये तो मेरे प्रभु के साथ साथ तीनो लोक दरिद्र हो जाएंगे। नही-नही मै ऐसा नही होने दूँगा। मेरे जीवित रहते मेरे प्रभु दरिद्र हो जायें मै ऐसा कदापि नही करुँगा। मै ये चने स्वयं खा लूँगा लेकिन कृष्ण को नही खाने दूँगा और सुदामा ने कृष्ण से छुपाकर सारे चने खुद खा लिए। अभिशापित चने खाकर सुदामा ने स्वयं दरिद्रता ओढ़ ली लेकिन अपने मित्र श्री कृष्ण को बचा लिया। अद्वितीय त्याग का उदाहरण प्रस्तुत करने वाले सुदामा, चोरी-छुपे चने खाने का अपयश भी झेलें तो यह बहुत अन्याय है , परंतु मित्र धर्म निभाने का इससे बड़ा अप्रतिम उदाहरण नहीं मिल सकता। वास्तव में यही सच्चे मित्र की पहचान है यही सीख हमें इस प्रसंग से लेनी चाहिए।

डाल सब्र के बीज

सूना जब आँगन लगे, बने न कोई बात।
सब्र रखो उस वक़्त में, वही बने सौगात॥

धन वैभव जब पास हो, ना कर तू अभिमान।
कद्र करो उस दान की, जिसने किया प्रदान॥

राह कठिन जब सामने, मन में ना हो रोष।
सब्र रखो उस वक़्त में, मिल जाए संतोष॥

बदले जब तक वक़्त ना, ना हारो विश्वास।
सब्र करो, फिर आएगा, खुशियों का मधुमास॥

अंधियारों में जो जले, सौरभ सच्चा दीप।
सब्र उसी का नाम है, भरता खाली सीप॥

फल की ना कर आस तू, कर कर्मों पर गौर।
सब्र रखे जो वक़्त में, मिलता उसको और॥

हर सुख-दुख का मेल है, जीवन एक किताब।
सब्र कद्र जो सीख ले, सच में बदले ख्वाब॥

रूठे जब हालात हों, ना हो मन उदास।
सब्र करे जो नेक दिल, पाए खूब सुवास॥

सुख आए झुक के रहे, ना कर तू अभिमान।
बिना कद्र उपहार सब, खो देते नादान॥

सूखे मन के खेत में, डाल सब्र के बीज।
फल फलते हैं धैर्य से, काम न आये खीज॥

मिले अगर कुछ वक़्त से, ना कर गर्व अपार।
कद्र करे जो काल की, सजे उसका संसार॥

धूप सहे जो शांत मन, पाते वही छांव।
सब्र रखे तो ना कभी, डगमे उसके पाँव॥

चमकेगा वह चाँद भी, जो सहे अंधियार।
सब्र करे जो रैन में, उजियारा हो यार॥

दुःख-दाह से भाग मत, धीरज धर मन मान।
सब्र सुरा सम जगत में, पी ले साजन जान॥

सौरभ विपदा घोर में, रहे विनीत विचार।
मौन रहें कर काल पर, बृह्मस्त्र ज्यों प्रहार॥

श्वास-श्वास में साधना, कर्म बना अनुराग।
सब्र-धर्म से खिल उठे, जीवन बने सुहाग॥

संकट हो या सुख मिले, रखे एक-सा भाव।
कद्र सब्र संग जो चले, डूबे ना वह नाव॥

प्रीति बिना ना सार है, ना धन, ना दरबार।
सब्र बिना जो जीव है, उसका जीवन भार॥

सदा समय सौगात की, कद्र करो हर भाव।
वरना जीवन शेष में, रह जाए पछताव॥

—डॉ. सत्यवान सौरभ

श्मशान और अघोरियों का खास रिश्ता

अघोरी उसे कहते हैं जो घोर नहीं हो। यानी बहुत सरल और सहज हो। जिसके मन में कोई भेदभाव नहीं हो। अघोरी हर चीज को समान भाव से देखते हैं। अघोरियों की दुनिया निराली है। वे जिस पर प्रसन्न हो जाएं, उसे सब कुछ दे देते हैं। अघोरियों की कई बातें ऐसी हैं, जिसे सुनकर आप दांतों तले उंगली दबा लेंगे। हम आपको अघोरियों की दुनिया की कुछ ऐसी ही बातें बता रहे हैं, जिन्हें पढ़कर आपको एहसास होगा कि वे कितनी कठिन साधना करते हैं। साथ ही उन श्मशानों के बारे में भी आज आप जानेंगे, जहां अघोरी साधना करते हैं।

- अघोरी गाय का मांस छोड़ कर बाकी सभी चीजें खाते हैं। मानव मल से लेकर मुर्दे का मांस तक। अघोरपंथ में श्मशान साधना का विशेष महत्व है, इसलिए वे श्मशान में रहना ही ज्यादा पंसद करते हैं। श्मशान में साधना करना शीघ्र फलदायक होता है। श्मशान में आमतौर पर लोग जाते नहीं, इसीलिए साधना में विघ्न पड़ने का कोई प्रश्न नहीं उठता। उनके मन से अच्छे-बुरे का भाव निकल जाता है, इसलिए वे प्यास लगने पर खुद का मूत्र भी पी लेते हैं।

- अघोरियों के बारे में कई बातें प्रसिद्ध हैं, जैसे वे बहुत ही हठी होते हैं। अगर किसी बात पर अड़ जाएं तो उसे पूरा किए बगैर नहीं छोड़ते। गुस्सा हो जाएं तो किसी भी हद तक जा सकते हैं। अधिकांश अघोरियों की आंखें लाल होती हैं, जैसे वो गुस्से में हों, लेकिन उनका मन उतना ही शांत भी होता है। काले वस्त्रों में लिपटे अघोरी गले में धातु की बनी नरमुंड की माला पहनते हैं।

- अघोरी अक्सर श्मशानों में ही अपनी कुटिया बनाते हैं। वहां एक धूनी जलती रहती है। जानवरों में वो सिर्फ कुत्ता पालना पसंद करते हैं। उनके साथ उनके शिष्य रहते हैं। अघोरी अपनी बात के बहुत पक्के होते हैं। वे अगर किसी से कोई बात कह दें तो उसे जरूर पूरा करते हैं।

- अघोरी मूलतः तीन तरह की साधना करते हैं। शिव साधना, शव साधना और श्मशान साधना। शिव साधना में शव के ऊपर पैर रखकर खड़े रहकर साधना की जाती है। बाकी तरीके शव साधना की ही तरह होते हैं। इस साधना का मूल शिव की छाती पर पार्वती द्वारा रखा हुआ पांव है। ऐसी साधनाओं में मुर्दे को प्रसाद के रूप में मांस और मदिरा चढ़ाई जाती है।

- शव और शिव साधना के अतिरिक्त तीसरी साधना होती है श्मशान साधना। इसमें आम परिवारजन भी शामिल हो सकते हैं। इस साधना में मुर्दे की जगह शवपीठ की पूजा की जाती है। उस पर गंगा जल चढ़ाया

जाता है। यहां प्रसाद के रूप में मांस-मंदिरा की जगह मावा चढ़ाया जाता है।

बहुत कम लोग जानते हैं कि अघोरियों की साधना में इतना बल होता है कि वो मुर्दे से भी बात कर सकते हैं। ये बातें पढ़ने-सुनने में भले ही अजीब लगें, लेकिन इन्हें पूरी तरह नकारा भी नहीं जा सकता। उनकी साधना को कोई चुनौती नहीं दी जा सकती।

- अघोरी अमूमन आम दुनिया से कटे होते हैं। वे अपने-आप में मस्त रहने वाले, दिन में अधिकांश समय सोने वाले और रात में श्मशान में साधना करने वाले होते हैं। वे आम लोगों से कोई संपर्क नहीं रखते। वे अधिकांश समय अपना सिद्ध मंत्र ही जाप करते रहते हैं। आज भी ऐसे अघोरी और तंत्र साधक हैं, जो पराशक्तियों को अपने वश में कर सकते हैं। दुनिया में सिर्फ चार श्मशान घाट ही ऐसे हैं, जहां तंत्र क्रियाओं का परिणाम बहुत जल्दी मिलता है। ये हैं तारापीठ का श्मशान (पश्चिम बंगाल), कामाख्या पीठ (असम) का श्मशान, त्र्यम्बेक्श्वर (नासिक) और उज्जैन का चक्रतीर्थ श्मशान।

तारापीठ - यह मंदिर पश्चिम बंगाल के वीरभूमि जिला में है। इसे तारा देवी का मंदिर कहते हैं। इस मंदिर में मां काली के एक रूप तारा मां की प्रतिमा स्थापित है। रामपुर हाट से तारापीठ की दूरी 6 किलोमीटर है। यहां स्थित श्मशान में कई साधक आते हैं।

कामाख्या पीठ- असम की राजधानी दिसपुर के पास गुवाहाटी से 8 किलोमीटर दूर कामाख्या मंदिर है। यह मंदिर एक पहाड़ी पर बना है। इसका तांत्रिक महत्व है। प्राचीन काल से सतयुगीन तीर्थ कामाख्या वर्तमान में तंत्र सिद्धि का सर्वोच्च स्थल है। पूर्वोत्तर के मुख्य द्वार कहे जाने वाले असम राज्य की राजधानी दिसपुर से 6 किलोमीटर की दूरी पर स्थित नीलांचल अथवा नीलशैल पर्वतमाला पर स्थित मां भगवती कामाख्या का सिद्ध शक्तिपीठ सती के इक्यावन शक्तिपीठों में सर्वोच्च स्थान रखता है। यहीं भगवती की महामुद्रा (योनि-कुंड) स्थित है।

नासिक - त्र्यम्बेक्श्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर महाराष्ट्र के नासिक जिले में हैं। यहां के ब्रह्मगिरि पर्वत से गोदावरी नदी का उद्गम होता है। भगवान शिव को तंत्रशास्त्र का देवता माना जाता है। तंत्र और अघोरवाद के जन्मदाता भगवान शिव ही हैं।

उज्जैन - महाकालेश्वर मंदिर 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। यह मध्यप्रदेश के उज्जैन में है। स्वयंभू, भव्य और दक्षिणमुखी होने के कारण महाकालेश्वर महादेव को अत्यंत पुण्यदायी माना जाता है। इस कारण तंत्रशास्त्र में भी शिव के इस शहर को शीघ्र फल देने वाला माना गया है। यहां के श्मशान में दूर-दूर से साधक तंत्र क्रिया करने आते हैं।

जय माता की !!

जय शिव शम्भू !!

अशोकाष्टमी विशेष

अशोक वृक्ष के प्रभावशाली उपाय अशोक वृक्ष धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन में अन्य पावन वृक्षों, जैसे वट-पीपल आदि की भांति भारतीयों के लिए श्रद्धा का पात्र है। शुभ एवं मंगलकारी वृक्ष के रूप में इसका वर्णन ब्रह्मवैवर्त पुराण में किया गया है। यह वृक्ष पर्यावरण संतुलन को बनाए रखने में प्रभावी भूमिका निभाता है। धर्मावलंबी इसको किसी न किसी रूप में पावन वृक्ष के रूप में श्रद्धा के साथ मान्यता देते हैं।

प्राचीन मूर्तियों में अशोक वृक्ष की अर्चना अंकित है। बौद्ध धर्म के अनुयायी इस वृक्ष को इसलिए पूजते हैं क्योंकि महात्मा बुद्ध का अशोक वृक्ष के नीचे जन्म हुआ था। वैसे तो इस वृक्ष की पूजा का प्रचलन, गन्धर्वों और यक्षों के काल से रहा है। श्री राम ने अशोक के पेड़ से ही सीता जी के दर्शन की अभिलाषा की थी। तो कालान्तर में राम भक्त हनुमान की सीता को अशोक पेड़ के नीचे बैठी देखकर ही शोक की समाप्ति हुई थी। इससे इस पेड़ के शोक रहित होने की बात चरितार्थ सिद्ध होती है। भगवान वाल्मीकि ने रामायण में वर्णित, पंचवटी में लगे प्रमुखतः पांच वृक्षों को शुभ माना है। उनमें अशोक वृक्ष भी है। यह पेड़ इंद्र देव को अत्यधिक प्रिय है क्योंकि यह कामदेव का प्रतीक माना गया है। इस पेड़ को पूजने की परंपरा राजा भोज के समय से है। अशोक वृक्ष को विभिन्न भाषाओं में विभिन्न नामों से संबोधित किया जाता है। जैसे संस्कृत में महापुष्प, अपशोक मंजरी, मारवाड़ी में आसापाली, गुजराती में आसोपालव, देववाणी में अशोक, बम्नजुली शोक, उड़िया, गढ़वाली, बंगाली, मराठी व कन्नड़ में अशोक, तमिल में आर्सीगम वनस्पति शास्त्रियों के अनुसार सराका इंडिका अशोक एवं लैटिन में जानेसिया अशोक।

ज्योतिष शास्त्र में व्यवसाय बाधा निवारण, विवाह बाधा निवारण एवं धन की कामना के लिये अशोक वृक्ष के कई उपाय बताए गए है आज हम उनमें से कुछ प्रमुख उपायों को आपके लिये प्रस्तुत कर रहे है।

1. किसी भी शुद्ध मुहूर्त में जैसे कि गुरु+रवि पुष्य योग या जिसे उपाय करना है उसकी जन्म तिथि के दिन पड़ने वाला अभिजीत मुहूर्त, होली, दीपावली, धनतेरस, अक्षय तृतीया, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा या अन्य मासिक शुभ मुहूर्त में अशोक वृक्ष की जड़ को निकाल लें। जड़ को निकाल उसे स्वच्छ जल अथवा गंगा जल से शुद्ध करके। अपने पूजा के स्थल में माँ दुर्गा के बीज मन्त्र से 1008 बार या यथा सामर्थ्य इससे अधिक जाप करें। इसके बाद इस मूल जड़ को लाल कपड़े या लाल धागें में शरीर पर धारण करने से कार्यो में शीघ्र ही सफलता मिलने लगती है। इसकी मूल जड़ को शुद्ध करके तकिये के अन्दर रखने से वैवाहिक जीवन में परस्पर प्रेम बना रहता है।

२. अशोक के पेड़ पर यदि प्रतिदिन जल चढ़ाया जाये तो उस गृह में माँ भगवती कृपा विद्यमान रहती है। उस मकान में रोग, शोक, गृह कलेश अशान्ति आदि समस्यायें न के बराबर रहती है। इस पेड़ पर जो जातक नित्य जल अर्पित करता है। उस पर माँ लक्ष्मी की कृपा बरसती है। प्रत्येक शुक्रवार को अशोक के वृक्ष के नीचे घी एवं कपूर मिश्रित दीपक जलाने से घर में नकारात्मबक ऊर्जा प्रवेश नहीं करती है।

३. जो जातक निरन्तर व्यवसाय में हानि उठा रहे एवं उनका व्यवसाय बन्द होने की कगार पर है। वह जातक निम्न प्रयोग करके लाभ प्राप्त कर सकते है। अशोक वृक्ष के बीजों को प्राप्त कर उन्हें स्वच्छ करके धूप व अगरबत्ती दे और आँखे बन्द करके अपनी समस्या से मुक्ति देने की प्रार्थना करें तद्नन्तर इन बीजों में से एक बीज को किसी ताबीज में भरकर अपने गले में धारण कर लें। शेष बीजों को धन रखने के स्थान पर रख दें। यह उपाय शुक्ल पक्ष के प्रथम बुधवार को करना अति उत्तम रहेगा।

4. किसी भी शुभ मुहूर्त में अशोक के पेड़ की जड़ को पूर्व निमन्त्रण देकर निकाल लायें। उस समय आप मौन रहें। घर में लाकर इसे गंगा जल से शुद्ध करके तिजोरी या धन रखने के स्थान रखें। इस प्रकार का उपाय करने से उस घर में धन की स्थिति पहले की अपेक्षा काफी सुदृढ़ हो जाती है।

5. अशोक वृक्ष के फलों को मंगलवार के दिन हनुमान जी को अर्पित करने से मंगल ग्रह की पीड़ा से मुक्ति मिल जाती है।

6. यदि किसी कन्या का विवाह नहीं हो रहा है। और परिवार के लोग काफी चिन्तित एवं परेशान है। वह लोग यह उपाय कर सकते है। अशोक वृक्ष की जड़ तथा पत्ते प्राप्त कर,उस कन्या के स्नान करने वाले जल में डाल दें। तत्पश्चात उस जल में कान्या स्नान करें। ध्यान रखें कि पत्ते व जड़ जल से बाहर न गिरे। स्नान करने के पश्चात इन पत्तों को परिवार का कोई भी सदस्य पीपल वृक्ष की जड़ पर डाल दे। यह प्रयोग कम से कम 41 दिन तक अवश्य करें। यह उपाय शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से ही प्रारम्भ करें। ऐसा करने से शीघ्र ही उस कन्या का विवाह निश्चित हो जायेगा।

अशोक वृक्ष का वास्तु में प्रयोग अशोक का वृक्ष घर में उत्तर दिशा में लगाना चाहिए। जिससे गृह में सकारात्मक ऊर्जा का संचारण बना रहता है। घर में अशोक के वृक्ष होने से सुख,शन्ति एवं समृद्धि बनी रहती है एंव अकाल मृत्यु नहीं होती है। परिवार की महिलाओं को शारीरिक व मानसिक ऊर्जा में वृद्धि होती है। यदि महिलायें अशोक के वृक्ष पर प्रतिदिन जल अर्पित करती रहे तो उनकी इच्छायें एवं वैवाहिक जीवन में सुखद वातारण बना रहता है। जो छात्र पढ़ते बहुत है। परन्तु कुछ समय बाद वह सब भूल जाते है। वह लोग अशोक की छाल तथा ब्रह्मी समान मात्रा में सुखाकर उसका चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को 1-1 चम्मच सुबह शाम एक गिलास हल्के गर्म दूध के साथ सेवन करने से शीर्घ ही लाभ मिलेगा।

बांग्लादेश से लगभग 160 यात्री आए थे , जिससे बड़ा हादसा हो

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर : जग दर्शन आधे रास्ते में ही छूट गया। भगवान जगन्नाथ के दर्शन के लिए लोग विदेशों से भारत आते थे। मैं हर सुबह रामनवमी पर आशीर्वाद लेने के लिए परित्रा जाता हूं। सभी लोग इसी आशा के साथ बाहर आये। लेकिन एक ही पल में मेरी आशा पानी की धार की तरह लुप्त हो गयी। यात्रा बीच में ही रुक गई। बड़े मंदिर तक पहुंचने से पहले सड़क की दिशा बदल गई ।जब हम यह सब देख रहे थे, तभी एक दुखद सड़क दुर्घटना घटी। अचानक, किसी को पता ही नहीं चला कि क्या हुआ था। लेकिन जब वह जागा तो उसकी आंखों के सामने सब कुछ बिखर चुका था।

हां, बांग्लादेश से लगभग 160 यात्री आए थे। दो बसें कोलकाता से पुरी आ रही थीं, तभी भुवनेश्वर-पुरी राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 316 पर पिपिली उत्तरा चैक के निकट तटबंध के पास बस पलट गई। रिपोर्ट के अनुसार, दुर्घटना में 20 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए और एक व्यक्ति की मौत हो गई। ऐसा माना जा रहा है कि यह दुर्घटना सुबह 2:30 बजे घटित हुई। सूचना मिलने पर पिपिली, भुवनेश्वर, मूलकाटी अग्निशमन विभाग और पिपिली पुलिस मौके पर पहुंची और स्थानीय लोगों की मदद से बचाव कार्य शुरू किया। सबसे महत्वपूर्ण बात जो बताई गई है वह यह है कि दुर्घटना स्थल से कुछ ही दूरी पर एक ओपेरा का आयोजन हो रहा था। जहां बड़ी संख्या में लोगों की भीड़ जमा हो गई। बस के दुर्घटनाग्रस्त होने पर तेज आवाज सुनकर स्थानीय लोग मौके पर पहुंचे और बिना देर किए बचाव कार्य शुरू कर दिया ।हालांकि,

गंभीर रूप से घायलों को अलग-अलग एम्बुलेंस से अस्पताल पहुंचाया गया। प्रशासन ने बचाव कार्यों के लिए पुरी में सुबह तीन बजे से सड़कें बंद कर दीं। कई श्रद्धालु अब घायल और भयभीत होकर सड़क किनारे बैठे नजर आते हैं। इस बीच, पिपिली पुलिस ने घटनास्थल पर बचाव अभियान जारी रखा, जबकि एक अन्य टीम कैपिटल अस्पताल में घायलों से मिलने गई। पिपिली पुलिस ने दुर्घटनाग्रस्त बस को जब्त कर लिया है। इस बीच खबर है कि पिछले महीने की 17 तारीख को बालदेश और चटगाँव से करीब 160 तीर्थयात्री दो बसों में वृंदावन से पुरी आ रहे थे। इनमें से आधे से अधिक वरिष्ठ नागरिक थे और लगभग 17 छोटे बच्चे थे। ये तीर्थयात्री अयोध्या, द्वारका आदि स्थानों की यात्रा करने के बाद भगवान जगन्नाथ के दर्शन के लिए पुरी आते थे। लेकिन बस चलाते समय ड्राइवर को अचानक नींद आ गई। परिणामस्वरूप बस बाईं ओर खाई में गिर गई।

प्रधानमंत्री मोदी करेंगे देश के पहले वर्टिकल लिफ्ट समुद्री पुल का उद्घाटन, 99 स्पैन और 333 पाइल से तैयार ब्रिज

परिवहन विशेष न्यूज

* प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 6 अप्रैल 2025 को रामनवमी के अवसर पर तमिलनाडु के रामेश्वरम में भारत के पहले वर्टिकल लिफ्ट रेलवे समुद्री पुल, नए पंबन ब्रिज, का उद्घाटन करेंगे।

* यह 2.08 किलोमीटर लंबा पुल मुख्य भूमि को रामेश्वरम द्वीप से जोड़ेगा, जो एक प्रमुख तीर्थ स्थल है।

* 535 करोड़ रुपये की लागत से रेल विकास निगम लिमिटेड (RVNL) द्वारा निर्मित यह पुल पुराने पंबन ब्रिज का स्थान लेगा, जिसे 2022 में जंग लगने के कारण बंद कर दिया गया था।

* नए पुल में 72.5 मीटर का वर्टिकल लिफ्ट स्पैन है, जो 17 मीटर तक उठ सकता है, जिससे बड़े जहाज आसानी से गुजर सकेंगे और रेल यातायात निर्बाध रहेगा।

यह पुल 100 वर्षों तक 80 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से रेलगाड़ियां चलाने के लिए सुरक्षित है। नवंबर 2024 में रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने पांच सदस्यों की एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया था जिसमें कई विशेषज्ञ शामिल थे। यह देश के रेलवे इंफ्रास्ट्रक्चर में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा।

ए आई : लाभ और हानि : विवेक रंजन श्रीवास्तव

अपने स्कूल के दिनों की याद आती है, एक निबंध , भाषण या वाद विवाद का विषय बड़ा लोकप्रिय था ₹ विज्ञान के लाभ और हानि ₹ , विज्ञान ने गुणक के स्वरूप में आम जनता की जिंदगी में हस्तक्षेप बढ़ाया है, और आज ए आई के लाभ और हानि पर चर्चा हो रही है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता अर्थात एआई की दक्षता, व्यक्तिगत अनुभव और नवाचार जैसे कई लाभ स्पष्ट दिख रहे हैं । लेकिन इसके प्रभाव से नौकरी समाप्त होने के खतरे हैं, व्यक्तिगत गोपनीयता भंग होने जैसे नुकसान भी दिखते हैं।

एआई स्वचालन के माध्यम से उत्पादकता बढ़ा सकती है, लेकिन इससे रोजगार में कमी भी हो सकती है, जो एक जटिल और विवादास्पद मुद्दा है। अप्रत्याशित रूप से, एआई के दीर्घकालिक जोखिम, जैसे गलत संरेखण और धोखेबाज व्यवहार, आज भविष्य के लिए महत्वपूर्ण चिंताएं हैं।

एआई मशीनों में मानव बुद्धिमत्ता का अनुकरण करने की तकनीक है, जो सीखने, तर्क करने और समस्या-समाधान जैसे कार्य करने में सक्षम बनाती है। वर्ष 2025 में, वैश्विक एआई बाजार का मूल्य $244.22 बिलियन है और इसे 2031 तक 26.6% की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) से बढ़ने का अनुमान है । यह इसके विभिन्न उद्योगों पर परिवर्तनकारी प्रभाव को दर्शाता है। डेटा विश्लेषण जैसे कार्यों के लिए 48% व्यवसायों द्वारा एआई को अपनाने के साथ, इसका प्रभाव व्यापक है। ए आई स्वास्थ्य सेवा, वित्त और विनिर्माण में नवाचार को बढ़ावा देती है, लेकिन नैतिक और आर्थिक चिंताएं भी उठाती है।

एआई कई क्षेत्रों में लाभ प्रदान करती है, जैसे दक्षता में सुधार (24/7 संचालन), निर्णय लेने में सहायता (बड़ी डेटा सेटों का विश्लेषण), और नवाचार (दवा खोज और आटोमेशन)।

रोजगार विस्थापन (स्वचालन से नौकरी हानि), उच्च लागत (छोटे व्यवसायों के लिए बाधा), और गोपनीयता जोखिम (डेटा उल्लंघन) ए आई के नुकसान नजर आते हैं।

एआई कई क्षेत्रों में क्रांतिकारी प्रभाव डाल रही है, जैसे दक्षता और उत्पादकता, एआई स्वचालित कार्यों को संभाल सकती है, जैसे डेटा प्रविष्टि, और 24/7 काम कर सकती है, जिससे मानव त्रुटि कम होती है और उत्पादकता बढ़ती है। उदाहरण के लिए, विनिर्माण में एआई-चालित रोबोट उत्पादन को सुव्यवस्थित करते हैं, लागत में बचत करते हैं एआई एजेंट, एंथ्रोपिक से, स्वायत्त रूप से शेड्यूलिंग और कार्य संभालते हैं,तथा उत्पाद दक्षता को और बढ़ाते हैं । एआई तकनीक बड़ी डेटा सेटों का विश्लेषण कर पैटर्न और रुझान पहचान लेती है, जो वित्त, स्वास्थ्य और विपणन में निर्णय लेने में मदद करती है। उदाहरण के लिए, यह भविष्य विश्लेषण के माध्यम से सटीक पूर्वानुमान प्रदान करती है, जिससे व्यवसायों को लाभ होता है । एआई ग्राहक व्यवहार का विश्लेषण कर व्यक्तिगत सिफारिशें और बेहतर ग्राहक सहायता प्रदान करती है, जैसे चैटबॉट्स और वर्चुअल सहायक। नेटफ्लिक्स एआईचालित सुझावों से वार्षिक $1 बिलियन कमाता है, जो ए आई की प्रभावशीलता दर्शाता है ।

एआई चिकित्सा अनुसंधान, रोबोटिक्स, और ऑटोमेशन जैसे क्षेत्रों में नई तकनीकों को बढ़ावा देती है। उदाहरण के लिए, नवीडिया और फाइजर ने वर्ष 2025 में साइटोरिज़न में $80 मिलियन का निवेश किया है, जो नई दवा की खोज को गति प्रदान करता है ।

ऑटोमेशन में ए आई मॉडल सायबर सुरक्षा बढ़ाते है, और हर व्यक्ति की ज्ञान तक पहुंच बनाते हैं।

एआई खतरनाक कार्यों, जैसे खनन, निर्माण, और अंतरिक्ष अन्वेषण में मानव जीवन के जोखिम को कम करती है, जिससे कार्यस्थल सुरक्षा में सुधार होता है ।

यह जलवायु मॉडलिंग के माध्यम से वातावरण स्थिरता का भी समर्थन करती है, जैसे गूगल के ए आई गैजेट्स का उदाहरण समझा जा सकता है। एआई का प्रभाव कृषि और औद्योगिक क्रांतियों के समान हो सकता है, और उन्नत प्रशिक्षण के माध्यम से अधिकांश कार्यों में इंसान से बेहतर प्रदर्शन कर सकती है। भविष्य के प्रोजेक्शनों के अनुसार, एआई वर्ष 2059 तक मानव से बेहतर प्रदर्शन कर सकती है, उच्च बैंडविड्थ, समानांतरता, और लागत-प्रभावशीलता बेहतर हो सकता है ।

एआई के नुकसान

एआई के कई लाभों के बावजूद, इसके नुकसान भी कम नहीं दिखते ।

स्वचालन से पारंपरिक नौकरियों में कमी आ सकती है, जिससे बेरोजगारी बढ़ सकती है। उदाहरण के लिए, डिजिटल सहायक HR कार्यों को बदल सकते हैं, जिससे कर्मचारियों को नई AI-सक्षम कार्यप्रवाह में शामिल करने की आवश्यकता होती है।

वर्ष 2025 में, 34% वित्त संस्थानों ने राजस्व वृद्धि की रिपोर्ट की है। एआई लागू करने में हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर, और कुशल कर्मचारियों की उच्च लागत आती है, जो छोटे व्यवसायों के लिए एक बड़ी बाधा हो सकती है। रखरखाव और अपडेट की लागत भी महत्वपूर्ण हो सकती है; 40% छोटे फर्मों ने इसे बाधा के रूप में उद्धृत किया है ।

एआई बड़ी मात्रा में डेटा की आवश्यकता होती है, जिससे पारंपरिक डेटा गोपनीयता और सुरक्षा के मुद्दे उठते हैं। इसके अलावा, एल्गोरिदम में पक्षपात और निगरानी के नैतिक उपयोग की चिंताएं हैं ।

यूरोपीय संघ और यूएस के विनियमन अनुपालन को ए आई जटिल बना रहा है ।

एआई प्रणालियों पर अत्यधिक निर्भरता से सिस्टम कोलैप्स की समस्याएं हो सकती हैं, विशेष रूप से यदि कभी ए आई सिस्टम विफल हो जाएं तो वैकल्पिक व्यवस्था आवश्यक होगी।

एआई मानव भावनाओं को समझने या संवेदनशील नहीं है, जो ग्राहक संबंधों और संवेदनशील क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य देखभाल में चुनौतियां हैं।

एआई से गलत संरेखण, हैकिंग, और धोखे के व्यवहार जैसे जोखिम हैं, जो मानव नियंत्रण को कमजोर कर मशीन आश्रित बना सकते हैं। हाल के चिंताओं में एआई भ्रम शामिल हैं, जैसे जनरेटिव मॉडल गलत जानकारी उत्पन्न करते हैं, जो उपयोगकर्ताओं को गुमराह कर सकते हैं ।

ए आई इंटरनेट अनुभवों का प्रोजेक्टेड विश्लेषण जनित है। अतः अनेक क्षेत्रों में भ्रम पैदा कर रहा है।

प्रोजेक्शनों के अनुसार, एआई वर्ष 2061 तक मानव से बेहतर प्रदर्शन कर सकती है, जो व्यवहारिक नियंत्रण की समस्या पर उंगली उठाती है। निश्चित ही मानव जीवन को बेहतर , आरामदेह , बनाने में ए आई का योगदान अप्रतिम अभूतपूर्व है, इससे घबराए बिना सकारात्मक दृष्टिकोण से इसे अपनाने से हम इसे निरंतर संशोधन करते हुए बेहतर भविष्य की ओर बढ़ रहे हैं।

बादशाह हाथ जोड़े माता हो महान...!

सीकर-जयपुर मार्ग पर हैं गोरिया,
जीणमाता प्राचीन मंदिर फूलोरिया।
इनका वास्तविक नाम जयंती माता,
घने जंगलों से घिरा हुआ यह पाता।
मंदिर ये दक्षिण प्रवेशद्वार पूर्वमुखी।
जब भी हो माँ के दर्शन होते हैं सुखी।

सीकर-जयपुर मार्ग पर हैं गोरिया,
जीणमाता प्राचीन मंदिर फूलोरिया।
अष्टभुजा आदमकद मूर्ति प्रतिस्थापित,
पीतल का सिर कंकालीमाता ज्ञापित।
पश्चिम में हैं महात्मा का तप स्थान,
जहाँ संपूर्णता से ही मिलता है ज्ञान।

सीकर-जयपुर मार्ग पर हैं गोरिया,
जीणमाता प्राचीन मंदिर फूलोरिया।
शेखावाटी के मंदिरों को करने ध्वस्त,
भेजी एक विशाल सेना करने पस्त।
माता ने सबसे बड़ा चमत्कार किया,
औरंगजेब की सेना को ही भगा दिया।

सीकर-जयपुर मार्ग पर हैं गोरिया,
जीणमाता प्राचीन मंदिर फूलोरिया।
हर्ष पर्वत पर शिव व हर्षनाथ भैरव,
मंदिर खंडित करने आ रहे थे वैरव।
पुजारियों के आर्त स्वर माँ से विनय,
जीण ने भंवरे छोड़ किया आक्रमण।
औरंगजेब की शाही सेना लहूलुहान,
बादशाह हाथ जोड़े माता हो महान।
(शब्द : भंवरे यानि बड़ी मधुमखियां।)

संजय एम तराणेकर

मारवाड़ी युवा मंचद्वारा रक्तदान शिविर का शुभारंभ किया

परिवहन विशेष न्यूज

सिकंदराबाद शाखा मंत्री पन्नालाल भाटी द्वारा जारी प्रेसविज्ञप्ति के अनुसार सिकंदराबाद शाखा अध्यक्ष पंकज राठौर की अध्यक्षता में रक्तदान शिविर का शुभारंभ नुमाइश मैदान नामपल्ली में किया गया

इस अवसर रक्तदान शिविर में 16 युनिट प्राप्त हुवा इस अवसर पर हैदराबाद शाखा से मंत्री जीतेंद्र जी जैन, शाखा संस्थापक श्री द्वारिकाप्रसाद मायछ , पूर्व अध्यक्ष मदनलाल सांखला ,वरिष्ठ नारायण चावड़ा,कैलाश वैष्णव, दिनेश गहलोत, दिनेश पूरी, गौतम भायल, प्रेमाराम जाखड़ , संजय गुप्ता, अशोक चावड़ा जीतू चावड़ा, रोहित कुमार मायछ ,हरीश माली ,आदि का सराहनीय योगदान रहा।

कार्यक्रम के अंत में पधारे हुए सभी अतिथियों का एवं सदस्यों गणों का शाखा के रक्तदान संयोजक दिनेश गेहलोत ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कोरेमुला नारापल्ली स्थित सेपटा परिवार द्वारा आयोजित हवन-यज्ञ व अतिथियों के सम्मान समारोह कार्यक्रम में उपस्थित आयोजक आईजी गौशाला के अखिल भारतीय सीरवी महासभा तेलंगाना प्रदेश उपाध्यक्ष हुक्माराम सेपटा,सीरवी समाज बडेर तेलंगाना कोरेमुला अध्यक्ष कालुराम काग, श्री आईजी गौशाला सह सचिव ढगलाराम सेपटा, पुनाराम , दिनेश ,हिमताराम, प्रवीण, लक्ष्मण, सीए नेमीचंद, रतनलाल ,मंगलाराम सेपटा, व समाज बंधु।

उत्कल युवा एकता मंच ने इतिहास रच डाला : प्रताप आदित्य,राजा सरायकेला

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची। झारखंड की सांस्कृतिक राजधानी के नाम से जाना जाने वाला सरायकेला स्थित राजघराने (पैलेस) में राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव से मिलकर उत्कल युवा एकता मंच के बैनर तले ओड़िया ड्रामा में शामिल कलाकारों ने उन्हें गुलदस्ता व अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया । इस पर प्रताप आदित्य सिंहदेव ने कहा ₹उत्कल युवा एकता मंच ने अबकी वार इतिहास रच डाला, सरायकेला में बंद पड़े नाटक प्रतियोगिता को मंच देकर चार पांच दिनों तक मंचन कराया ,मैं उम्मीद करता हूं अगले साल सप्ताह भर याहां ओड़िया नाटक मंचन हो ताकी लोग अपनी ओडिया संस्कृति की झलक देख सकें ₹। राजा सरायकेला से मिलने वालों में उत्कल युवा एकता मंच , गणपति अपेरा, मां अन्नपुर्णा नाट्यनुष्ठान आदि के सदस्य मुख्य रूप में शामिल थे ।

राजा सरायकेला का व्यक्तव्य प्रमाण करता है कि सरायकेला के राजागण ओड़िया साहित्य, संस्कृति ,कला के उपासक व संरक्षक रहे । जिसके कारण उक्त राजमहल के आंगन के अखाड़ा से विश्वप्रसिद्ध छऊ कला का श्रृजन हुआ । इतना ही नहीं सैकड़ों वर्ष पूर्व में भी याहां तब ओड़िया नाटक का मंचन होता रहा जब पहली बार ओडिया नाटक बाबाजी नाटक तथा कांची कावेरी जन्म हुए तीस पैंतीस वर्ष हुए थे । तब राजा नृपराज सिंहदेव का शासन काल था सरायकेला मे। यहां प्रदर्शित नाटकों में भारत के अन्य इलाके में अंग्रेजी हुकुमत शासित तथा यहां प्रिन्सली भारत की देशी रियासत शासन के समय सार गर्भित ओड़िया लोगों के सामाजिक तथ्यों , वीरता, जीवन शैली का इतिहास को रखा जाता था ।

राजा से मुलाकात करने वालों में उत्कल युवा एकता मंच की तरफ से उसके मुख्य रूपेश साहु, अधिवक्ता संजीव पति, बद्रीनाथ दरोगा, घासी राम सत्पथी, चंद्र शेखर बसा , मणि ज्योतिषी , राजेश आचार्य, बाबला मोहान्ती , ओड़िआ सीने कलाकार पति , कार्तिक मोहान्ती आदि दर्जानाधिक नाट्यमंच के कलाकार शामिल रहे ।

राज्य के सभी बीजद नेता भाजपा में शामिल होना चाहते हैं : मंत्री सम्पद स्वाइन

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर : राज्य की मुख्य विपक्षी पार्टी बीजद में सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है। ओबीसीएएफ विधेयक पर पार्टी का मुख्य रुख स्पष्ट होने के बावजूद, सांसद सस्मित पात्रा ने इसका समर्थन किया। इस घटना को लेकर पार्टी में विभाजन हो गया है। ऐसे में लगता है कि भाजपा को निशाना बनाया जा रहा है।अब भाजपा विधायक और मंत्री संपदा स्वैन ने बड़ा बयान दिया है। सभी बीजद नेता भाजपा में शामिल होना चाहते हैं। शीर्ष नेतृत्व से लेकर जमीनी स्तर तक सभी संपर्क में हैं। लेकिन भाजपा का वरिष्ठ नेतृत्व तय करेगा कि किसे स्वीकार करना है और किसे नहीं। कुछ ही दिनों में बीजद विलुप्त हो जाएगी। उन्होंने कहा कि बीजद नेताओं को विपक्षी पार्टी में रहना पसंद नहीं है। इससे पहले वरिष्ठ कांग्रेस नेता नरसिंह मिश्रा ने विस्फोटक बयान देते हुए कहा कि मुख्य सलाहकार नवीन को नजरबंद कर दिया गया है। वह पहले से ही नजरबंद थे और अभी भी नजरबंद हैं। उन्होंने नवीन के साथ दिल्ली के लिए काला सौदा कर लिया है। नरसिम्हा ने कहा कि उनकी योजना एक संयुक्त मंत्रिमंडल बनाने की है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023